पाठ आठ

अहनगिरी

पेशा लोहारी

1– आबदार छेनी (स्त्री0):– लाहे की चीज़े काटने का तेज़ धार का औज़ार जिसका मुँह कड़क बनाने को भट्टी में तपा कर पानी में बुझा लिया गया हो, ताकि ठण्डे लोहे को काटने में मुड़े नही। यही इसकी वजा तसिमयॉ है।

आड़ (स्त्री0):– छा, बट्टी के मुँह का पट जो अन्दर की तपिश को रोके।

आड़ी (स्त्री0):– देखो जलेसरी

ऑकड़ी (स्त्री0):– सॅगड़ा, कुरेदनी अकोड़ी (अगोड़ी) खुलावन, खौदी, भट्टी की ऑग खुरेदने और उलट पुलअ करने का आहनी गज़ और खपचा।

इस्पात (पु0):– पखाल देखो फौलाद

अकोड़ी/अगोड़ी (स्त्री0):– खुलावन देखो ऑकड़ी बाज़ मुकामात पर अकोड़ी (अगोड़ी) तल्लफुज़ करते है।

इंगलेरन/इकलेरन (स्त्री0):– अंग्रेजी लफ्ज़ आयरन एंगल का उर्दू तल्लफुज़ मुराद कहनी (जाविया) दार बनी हुई लोहे की पट्टी, जो हस्बे जरुरत मुख़तलिफ़ निसामत की बनायी जाती है।

एहरन (पु0):– सन्दान, निहायी, अंग्रेजी लत्ज आयरन का इसतलाही तल्लफुज़, सोहार सन्दान की कस्मि के ऐसे बड़े और वज़नी लोहे के ठीये को कहते है जिसपर लोहे की बड़ी चीज़ो को रख कर काटा जा सकें।

आहिगंर (पु0):– देखो लोहार

बादिया/बाधियॉ और बाधेयान (पु0):– आहनी या किसी दुसरी धातु की सलाख़ में चुड़ियॉ (पेच) बनाने का औज़ार पेच, तख्ती मनसूत।

बालिश्त/बाकलश्तिया (पु0):– ठिया बनाने का फौलादी क़लम जो चार छः इंच लम्बा ओर हस्बे ज़रुरत मोटा होता है। उसकी लम्बान में गहराव होता है जिसकी वजत्रह से उसका मुँह हलाली शक्ल का बन जाता हैं। और ठप्पे में गोलाई दार निशान काटने के काम आता है।

बॉक (स्त्री0):– देखो हितकल

बड़ाई की सढ़सी (स्त्री0):– सन्नसी की एक किस्म जिसका मुँह चोंच की शक्ल का होता है देखो सन्नसी।
बिन्दी (स्त्री0):– सुराग़दार आहनी ठेबी जो लोहे या किसी दूसरी धातु की किसी चीज़ में सुराग बनाने के लिए इसतेमाल की जाये। बाज़ कारीगर मोहरा कहते है।
बीड़ (स्त्री0):– लोहे का मेल जिससे मामूली चीज़ ढालकर बनायी जाती है।
भट्टी (स्त्री0):– लोहा वगैरह तपाने का आतिशदान या आग का ख़ज़ाना जो हसबे जरुरत बना लिया जाता है।
1– गल्ला– भट्टी का वो हिस्सा जिसमे आग रहती है।
2– नाल– भट्टी का मुँह
3– छा– भट्टी के मुँह का पट्ट (रोशन करना, सुलगाना,गरम करना)
धोकना :– भट्टी की आग को हवा देना ताकि वो भड़के।
कहावत– ''आग जाने लोहार जाने धोकने वाले की बला जाने''
भँवर कली (स्त्री0):– भँवर कड़ी का इसतलाही तल्लफुज़ मुराद महवर पर घुमने वाला आहनी कड़ा या कड़ी यानि कीले पर घुमने वाला हल्का।
पाना (पु0):– रिन्च, चाप (चाबी) डिबरीकश, डिबरी खोलने या कसने का औज़ार हस्बे जरुरत छोटे बड़े मुख़्तलिफ़ किस्म के होते है (अंग्रेजी ज़बान का लफ्ज़ है मगर कसरत इस्तेमाल से उर्दू में मिल गया है।)

रिन्च एक आहनी पट्टी होती है जिसमे मुख़तलिफ़ शक्ल की ढबरियों की शक्ल के धर बने हुए होते है, और पानी एक पेनच के जरिये ढबरी के बराबर छोटा बड़ा किया जाता है।

पखाल (पु0):– साु किया हुआ सख़्त क़िस्म का लोहा इसपात।
पंखी (स्त्री0):– भट्टी में हवा पहुँचाने की एक किस्म की धोकनी जो खुदबखुद बाहर की हवा खीचती रहे।
पेंच तख़्ती (स्त्री0):– मन्सूत बादियॉ, लोहे या किसी दूसरी धात की सलाख़ में चुड़ियॉ बनाने की फौलादी पट्टी जिसमे हसबे जरुरत छोटे बड़े और बारीक मोटे ख़ार बने हुए होते है।
पेचकश (पु0):– मड़ोड़ी, पेचदार कील को पेवस्त करने या जोड़ने का औज़ार।
फलका (पु0):– कान से निकाला हुआ लोहा जो भट्टी के अजज़ा में मिला हुआ हो। बग़ैर साफ की हुई लोहे की कच्ची धात।

तुरफ़ान (पु0):– धात के चीज़ो के सुराख़ बड़हाने का चौकोना या तिकोना फौलादी बर्मा

बन्दूक की नाल में ख़ार काटने का बर्मा।

तहफुलिया क़लम (पु0):– ठप्पे साज़ी का आहनी क़लम जिसके मुँह पर हर्फ़ (पो) के नुख़्तो की शक्ल की धुड़ियॉ बनी होती है जिनसे ठप्पे में गहरे निशान बनाये जाते है।

धिया (पु0):– ठप्पें या धात की किसी ओर चीज़ में सीधे ख़त खोदने का आहनी क़लम।

टिन (पु0):– कच्ची किस्म का लोहा जिसकी मामूली चादर और उससे डिब्बे वग़ैरह बनाये जाते है।

ठप्प (पु0):– मोहरा, किसी खास अलामत या इबारत का छापा जो फौलाद या किसी किसम की धात पर खोदकर बना लिया लाए (लगाना, ठपियाना)

ठप्पासाज़ (पु0):– ठप्पा बनाने वाला लोहार।

ठिया (पु0):– पेशावरो की मुशतरक इस्तलाह मुराद कारीगर के काम पर बैठने की जगह।

जलेरी (स्त्री0):– औडी जलहोदा लोहार की भट्टी के पास गरम लोहा बुझाने या ठण्डा करने को पानी का वर्तन।

जन्दर/जन्तर (पु0):– बन्दूक की नाल में पेंच (जिनको इस्तलाहन ख़ार कहते है) काटने का एक ख़ास किस्म का फौलादी बर्मा।

जंगला (पु0):– आहनी सलाख़ो की तैयार की हुई बाढ़। तफसील लिए देखो पेज न0 75

जौहर (पु0):– फौलाद की आबो ताब की झड़िया जो लहर या हलको की शक्ल उसकी सतह पर दिखाई देती है।

जीर/चीर (पु0):– मैल साफ किया हुआ लोहा। लोहारो की इसतलाह में लोहे की मैल को बेड और साफ शुदा लोहे को जीर कहते है।

जेली (स्त्री0):– भट्टी का आग खुरेदने और बराबर करने का आकड़ेदार आहनी गज़।

चाप/चापी (स्त्री0):– देखो पाना और रिन्ज।

बन्दूक की घोड़े की कमानी को दबाये और कसे रखने वाली आड़।

पैरो चलने की आहट या धीमी आवाज़।

चापन (स्त्री0):– धात की चीज़ो का सुराख़ बढ़ाने ओर साफ करने का तेज़ कोरो का चोपहल सुनबा।
चुटकी (स्त्री0):– कन्नेदार ढिबरी देखो ढिबरी।
1– छोटी किस्म का मोचना (घड़ीसाज़ी)
2– कमानीदार खटका जो किवाड़ के पट बन्द होने पर खुद बखुद लग जाये (नज्जारी)।
चिमटा (पु0):– देखो दसपना पेज न0–2 गर्म चीज़े पकड़ने और अंगारे उठाने का आहनी हथियार।
चोब (स्त्री0):– देखो गल्ला
चो फलिया क़लम (पु0):– ठप्पे में निशान डालने का चो पॅखड़ी या चाहार नुख़तेदार आहनी क़लम।
चोड़ी (स्त्री0):– आहनी सलाख़ के मड़ोड़ी या घुमेरीदार कटाव का एक फेर पेंच का एक बल जमा चुड़ियॉ।
उदाहरण– नल या सलाख़ के दोनो सिरो पर आधा आधा इंच तक चुड़ियॉ कटी हुइ है (काटना बनाना) बनाऐ तस्बीर देखो काबला।
चोचं नुमा सुनसी (स्त्री0):– ख़मीदा चोंच के शक्ल के मुॅह की सनसी देखो सनसी।
चुनहट (पु0):– पुराने घड़ी साजत्रों की ख़ास इसतलाह मुराद छोटी किस्म का मोचना। देखो मोचना
छा (स्त्री0):– देखो भट्टी फिकरा–1
छिपरौना (पु0):– डाब, कील के सिरे को फुल्लीदार बनाने की निहाई या सन्नदान। अंग्रेजी में सनाप कहते है। बाज़ कारीगर अंग्रेजी तल्लफुज़ को बिगाड़कर सनप कहते है।
छपका (पु0):– देखो कब्ज़ा पेज न0 42
छेनी (स्त्री0):– लोहा काटने का चपटे मुॅह का धारदार औज़ार।
दायराकश (पु0):– देखो प्रकार पेज न0 169
दमक (पु0):– लोहार की भट्टी की धोकनी का गावदुम वज़े का लम्बूतरा मॅह जो आम तौर से एक ख़ास किसम की भट्टी का बनाया जाता है। जो आग के असर से खराब नही होता।
दंकला (पु0):– देखो पेंच तख़्ती।

दो रुख़ी घिया (पु0):– ठप्पे में गहरे निशान या ख़त बनाने का आहनी क़लम जिसका एक मुँह छपटादार और दूसरा नुकीला होता है। बाज़ कारीगर दो मुई कहते है।
दो मुई (स्त्री0):– देखो दो रुख़ी घिया।
धेकनी (स्त्री0):– भट्टी का आग भड़काने को खाल का बना हुआ फुकना। जो हसबे जरुरत छोटा बड़ा बनाया जाता है।
1– मुड़ी– धोकनी का नलवे की शक्ल का बना हुआ मुँह जिससे भट्टी में हवा पहुँचायी जाती है।
2– पखान– कमरे वगैरह की सालिम खाल जिसमे हवा भस्म कर भट्टी में फुकी जाती है।
3– खापट (खपत)– धोकनी के पेट का मुँह जिससे हवा ली जाती है बाज़ कारीगर खलाख़त कहते है।
डाब (पु0):– देखो छपरौना ऐसा आहनी ठिया जिसमें कीलत्र की फुल्ली बनायी जाऐ।
डरना (पु0):– ठप्पे साज़ी का आहनी क़लम जिसका मुँह गदेदार होता है और उभरवॉ निशान बनाने के काम आता है।
डिबरी (स्त्री0):– आहनी कब्ले (पेंच) काबंद जो काठले की चुड़ियों पर कस दिया जाता है। डिबरी आमतौर से हसतपहल चौकोर या हल्के नुमा शक्ल की हसबे जरुरत छोटी बड़ी हर किसम की धातु की बनायी जाती है। पेन्च की तरह उसके सुराख़ में भी चुड़ियॉ बनी होती है। अंग्रेजी में नअ कहते है (लगाना, कसना) देखो कढ़पा बराए तसबीर।
डिबरीकश (पु0):– देखो पाना अंग्रेजी में नटकी कहते है।
राछ (पु0):– देखो घन
जन्बूर (स्त्री0):– खोली, गुंजला, गोल हल्केदार मुँह की सनसी देखो सनसी बाज़ कारीगर कल्लेदार सनसी कहते है।
साँचा (पु0):– पेशावरों की मुशतरक इसतलाह मुराद गेंड़ा फार्मा जिसमे धात की चीजें ढालकर या ठपिया कर बनायी जाए। साँचे के नमूने के मान्निद मिलती जुलती चीज़ बनाने को कारीगर साँचे में उतारना कहते है।
सनाप (पु0):– लोहे और दीगर धातु की चीज़ो में ठोक कर सुराख़ बनाने का फौलादी क़लम। अंग्रेजी में पेंच कहते है।

सन्नदान/शामदान (पु0):– देखो अहरन लोहे और दीगर धात की आशिया की घड़ाई का ठिया। सन्नदान छोटी किसम का और नुकीली शक्ल का होता है। जिसको कारीगर नहाई कहते है।
सनसी (स्त्री0):– धात की गरम चीज़ों को पकड़ने का कैची की वजअ का दस्तपना या चिमटा जिसके दसते लम्बे मुँह छोटा और जरुरत के के लिहाज से मुख़तलिफत्र नामो से मौसूम किया जाता है।
संगड़ा (पु0):– देखो ऑकड़ी (ऑकड़ा)
सोलन (पु0):– स्वीडेन का लोहा।
सोआनी/सोहानी (स्त्री0):– बड़ी किस्म का मोचना देखो मोचना।
सहपारी/सिपारी (स्त्री0):– लोहे की सलाख़ में सुराख़ करने के बारीक मोटे बर्मे। आहंगर बन्दूक की नाल में सुराख़ बनाने के उतार चढ़ाव के बर्मो को कहते है।
शाम (स्त्री0):– संस्कृत समनवॉ बमायनी सन्दरीमाशा मुराद धात का बना हुआ कड़ा या हलक़ा।
शामदान (पु0):– देखो सन्दान।
शिकन्जा (पु0):– देखो हथकल।
फौलाद (पु0):– इस्पात आला किसम का साफ किया हुआ लोहा जो तलवार बन्दूक वगैरह बनाने के काम आता है।
काबला (पु0):– ढ़बरी का कीला, चुड़ियॉ (पेंच) बनी हुई फुल्लीदार कील।
कुतका (पु0):– ढ़िबरी की चुड़ियॉ या पेच मादा पेच जो काबले के पेंचो के साथ कस जाए।
कुरेदनी (स्त्री0):– देखो ऑकड़ी।
कुरेल (स्त्री0):– छोटी किस्म का नाजुक चीज़ पकड़ने का क़लम की शक्ल का गेरा देखो (हतकल)
कल्लेदार सनसी (स्त्री0):– देखो जन्बूर बाज़ कारीगर खोली कहते है।
खापट/खपत (पु0):– देखो धोकनी फिकरा न03 बाज़ कारीगर खलानत कहते है।
खुलावन (स्त्री0):– देखो ऑकड़ी
खोली (स्त्री0):– देखो कल्लेदार सनसी
खौंदी (स्त्री0):– देखो ऑकड़ी
गाइटर (पु0):– लोहे का शहतीर मेयाल, कड़ी सोट।
गज़ रातियॉ (स्त्री0):– आहनी मोटी चादर।

गुरजक (पु0):– धात की चीज़ो के सुराख़ का मुँह चौड़ा करने का एक ख़ास किस्म का बर्म जिसका मुँह मख़रुती शक्ल का होता है। जिससे सुराख़ का ऊपर का मुँह चौड़ा किया जाता है ताकि कील़ का सिरा पूरा बैठ जाए।
गल्ला (पु0):– देखो भट्टी फिकरा–1
गान्डिया (पु0):– मेख़े बनाने का लोहा
गुन्जला (स्त्री0):– देखो जन्बूर
गिरा (पु0):– देखो हतकल
घन (पु0):– राद संस्कृत घना बमायनी बड़ा और वज़नी हथौड़ा जो बहुत मजबूत और भारी चीज़ो के तोड़ने या ठोकने के लिए इसतेमाल किया जाता है।
लपट (स्त्री0):– भट्टी की आग के शोले की भड़क।
लोचन/लोहचोन (पु0):– लोहे का बारीक बुरादा जो घिसने में निकले या कुटकर बनाया जाए।
लोहार (पु0):– आहनगर लोहे का सामान बनाने वाला कारीगर।
लोहांडा/लोहेडा (पु0):– लोहे हडियॉ या मटका
लोईना (पु0):– लोहे का सामान तैयार करने और उसका कारोबार करने वाला ताजिर।
लोहतार (पु0):– लोहे का बनाया हुआ आहनी तार
लोहताल (स्त्री0):– (लोह+ताल) लोहे का कान
लहरिया (पु0):– लहर की शक्ल का बना हुआ ठप्पा
लहरिया चादर (स्त्री0):– नालीदार चादर लहरों दार बनायी हुई आहनी चादर।
मारतोल (पु0):– पुर्तगाली लत्ज़ मरतिल्लो (मारतिल्लो) का उर्दू तल्लफुज़ बमायनी छोटी हथौड़ी। लोहारों और दीगर कारोबारी लोगो की इस्तलाह में मुराद एक ख़ास किस्म की हथौड़ी जिससे पकड़ी के तख़्त में कील ठोकी और आसानी से निकाली जा सके उसके मुँह पर एक किसम का छोटा चमटा बना होता है जो कील के मुँह को पकड़ लेता है।
मचाक (स्त्री0):– आला जर सकील की एक किस्म जिसके जरिए भारी और लम्बे आहनी सतून सीधे खड़े और गाड़े जाते है। अंग्रेजी में पाटल कहलाता है।
मरोड़ी (स्त्री0):– पेंच कसने या बिठाने का एक ख़ास किसम का औजार जो आमतौर से बड़े बड़े कारख़ानों में इस्तेमाल किया जाता है।
मुनदरी (स्त्री0):– देखो शाम

मंगन (स्त्री0):– देखो बॉग और हतकल
नसूत (स्त्री0):– देखो पेच तख़्ती और बादियॉ।
मोचना (पु0):– सोआनी (सोहानी) फ़ारसी लत्ज़ मोचनी का उर्दू तल्लफुज़ मुराद छोटी किस्म का चिमटा जो छोटी नाजुक चीजों को पकड़ने के लिए इसतेमाल किया और हस्बेतरुरत मुख़्तालिफ़ क़िसम् का बनाया जाता है।
मोस (स्त्री0):– उभरवॉ नक़्श का ठप्पा जिसके नर व मादा के दरामियान धात का पत्थर रख कर दबाने से पत्तर पर ठप्पे का नक़्श उतर आता है। गहरे खुदे हुए नक़्श वाले को ठप्पा कहा जाता है।
मुहारी (स्त्री0):– खॉचेदार मुँह की सनसी जिसमे कोइ गोल चीज की गिरफ़्त को जगह हो। देखो सनसी
मोहरा (पु0):– देखो बिन्दी बाज़ कारीगर ठप्पे को भी मोहरा कहते है।
मियल (स्त्री0):– 1– लट्टू या पहिये का महवरी कीला।
2– छोटे बड़े और किसी किस्म के सुराख़ में पड़ा हुआ कीला।
3– आहनी ठण्डा जिसपर किसी धात के पने को मोड़कर गोल बनाया जाए (लोहारो की इसतलाह) तकला सिलाई गोल सीख़।
नट (पु0):– अंग्रेजी लत्ज़ देखो ढ़िबरी
निहाई (स्त्री0):– देखो सन्दान लोहे की चीज धरने का ठिया जो हस्बे जरुरत मुख़तलिफत्र शक्ल और जसामत का होता है।
हतौड़ा (पु0):– पेशावरों की मुसतरक़ इस्तलाह ठोकने और ज़रब लगाने का औज़ार जो हस्बे जरुरत मुख़तलिफ़ क़िस्म के छोटे बड़े होते है।
हलकारना/हलकोरना (क्रिया):– लोहे या किसी धात की चीज को आग में तपाकर लाल करने के बाद धीमी हवा में अहिसता अहिस्ता ठण्डा करना। इस तरकीब से वो धात नरम पड़ जाती है। अगर पानी में ठण्डा किया जाए तो असल से ज्यादा सख़्त हो जाती और ज़र्ब खाने से टुट जाती है। तारे खीचने ओर पतरे को बढ़ाने के लिए इस अमल को बार बार किया जाता है।
हतकल (पु0):– हतकल या हतकड़ा का इसतलाही तल्लफुज़ बॉक, गिरा शिकन्जा और मगन इस किस्म का आहनी औजार जिसमे कोई चीज पकड़ कर कस दी जाए। हस्बे जरुरत छोटा बड़ा मुख़्तालिफ़ किस्म का होता है। छोटे बतौर दस्तीहथकड़ी इसतेमाल किये जाते है। और बड़े घिये पर जड़े रहते है।

2– पेशा सोहनीसाज़ी

पासा (पु0):– सोहन का कोई एक रुख़ या पहल जिसपर टक (खुरदुरे निशान) बने हो देखो सोहन।
पुट्ठी (स्त्री0):– देखो चोरसा
तिरका (पु0):– सुनारों और घड़ी साज़ों की इस्तलाह ज़ेबर चॉदी सोने की नाजुक चीजे और घड़ियों के पुर्ज़ो वगैरह साफ करने की हस्बे जरुरत बहुत छोटी किसम की और मुख़तलिफ वजाए की सोहन तफ़सील के लिए देखो सोहन।
तिकोरा (पु0):– तहपहल रेती, कोहनी नुमा चीजे साफ करने की तीन किनारों की मुसललसी शक्ल की सोहन देखो सोहन।
टक (पु0):– सोहन के खुरदरे निशान जो उनकी सतह पर धारदार औजार से गोदकर बनाये जाते है जिससे वो सख़्त चीज को रेतने के लायक बन जाती है (टाकना) सोहन पर ख़ार (खुरदुरे निशान) बनाना।
चोरसा (पु0):– पुट्ठी हमवार सतह को साफ करने कचटी सोहन।
चूल (स्त्री0):– सोहन की डण्डी (मेख़) जो हाथ की पूरी गिरफ्त के लिए लकड़ी की मोट में फसा दी जाती है देखो सोहन।
ख़ार (पु0):– देखो टक
रेती (स्त्री0):–सोहन का हिन्दी नाम देखो सोहन।
रेतना (क्रिया):– रेती से किसी चीज की सतह को घिसना।
सन्तर/सन तर (पु0):– सोहन टॉकने यानि उसकी सतह गोदने का धारदार औजार तिलंगी जुबान में बारीक दर्ज को जो किसी जो किसी चीज़ में पड़ जाए सन कहते है।
सोहन (स्त्री0):– फ़ारसी लफ्ज़ सोहन का उर्दू तल्लफुज़ हिन्दी में रेती कहलाता है। धात की चीज़ों की सतह घिसकर साफ करने का आहनी औजार जो पेशवारों की मुख़तालिफत्र जरुरतों के लिए छोटे बड़े और मुख़तलिफ़ वजए के बनाए जाते है जेवरात ओर दूसरी नाजुक चीजों पर इस्तेमाल करने के लिए सिलाई के मन्निद हर यशक्ल के होते है उनको कारीगर अपनी इसतलाह में तरका कहते है और बनावट के ऐतबार से छोटा हो या बड़ा तिकोरों, चोरसा (शुत्रगुल्लू) शुत्रगुल्लू कनासी गोलक, और नीमगिर्द वगैरह नाम रख लिया है।
सोहनत्क (पु0):– सोहन वकने वाला कारीगर देखो त्क
सोहनसाज़ (पु0):– देखो सोहनगर
सोहनगर (पु0):– सोहन बनाने वाला कारीगर या सोहन साज़।

शुत्रगुल्लू (स्त्री0):– कटार की शक्ल की ख़मदार चीज़ों की सतह साफत्र करने की सोहन। देखो सोहन
कनासी (स्त्री0):– 1– धात की चीज़ों में दॉते बनाने या साफ करने की चोपहल पर्छे की शक्ल की सोहन।
2– कनासी के हर दो पहल की दरमियानी उभरी हुई कोर या कनारा इास्तलाहन मॉग कहलाता है देखो सोहन।
गोलक (पु0):– सुराख़ या कौस नुमा बनावअ की चीज़ो की सतह साफ करने की गोल शक्ल की सोहन देखो सोहन।
मानग (स्त्री0):– कनासी के दो पहलुओं की दरमियानी कोर देखो कनासी फिकरा–2 और सोहन।
माही पुश्त सोहन (स्त्री):– ज्यादा खुरदरी सतह रेतने का मछली के छिलको की शक्ल के मान्निद उभरवॉ त्क खुदा हुआ नीमगिर्द सोहन।
नीमगिर्द (पु0):– गहराई रेतने को सोहन जिसका एक रुख़ बादाम के छिलके की शक्ल ओर दूसरा चपआ होता है। देखो सोहन

3– पेशा सानगिरी:– (सानगिरी ओर नागीना गिरी की मुशतरक इस्तलाह के लिए विलाख़ता हो)
पाठ–4 पेशा नगीनागिरी पेज न0 49
बाढ़ (स्त्री0):– 1– सान का दौर जिसपर हथियार को घिस कर धार निकाली जाती और तेज किया जाता है (लगाना, रखना) सान से गिड़ कर हथियार की धार तेज करना या बनाना देखो सान।
2– तलवार वगैरह की धार का मैदान जो सलामीदार और हथियार के हस्बे हौसियत छोटा बड़ा होता है। बाज़ मुकामी बोलियों में लाप या लाम्प कहते है।
बद्धी (स्त्री):– देखो माल
पटियॉ (पु0):– सान के गिरदे या खेरे यानि चकले का बग़ली रुख़ देखो सान।
पत्थरी (स्त्री0):– सिल्ली सानगारों की ख़ास इसतलाह मुराद ख़ास किसम के कुदरती या मुसनई पत्थर की हस्बे जरुरत छोटी बड़ी बनाई हुई ऐसी पट्टी जिसपर हथियार की धार को घिसकर घुलाया या चकनाया जाए यानि धारक के सान पर घिसे हुए खुरदुरे पन को साफ और बारीक किया जाए (लगाना, रखना)

चाड़ना (क्रिया):– किसी धारदार हथियार की धार दुरुस्त करना या धार की सलामी बनाना।
दाता (पु0):– हथियार की धार में कटाव का निशान जो सख़्त चीज़ पर इस्तेमाल करने से मोड़कर या टुटकर पड़ जाए (पड़ना, डालना,निकालना) धार को चाड़कर या सान पर घिसकर सीधा और बराबर करना।
धार (स्त्री0):– हथियार की बारीकी और तेज कोर जिससे कोई चीज कट जाए (रखना, निकालना, लगाना) सान पर घिसकर हथियार की धार बारीक और तेज बनाना (बिगड़ना, जाती रहना, मान पड़ना) धार की तेजी जाती रहना।
धुरी (स्त्री0):– सान का महवरी डणा देखो सान।
सान (स्त्री0):– धारदार हथियारों की धार घिसकर बारीक और तेज करने का चाक जो ताख़ और उम्दा किस्म की बनायी हुई रेत के मुरक्कब से हस्बे जरुरत छोटा बड़ा तैयार किया ओर हाथ या मशीन के जरिए घुमाकर काम में लाया जाता हैं। (लगाना, रखना, धरना) धार तेज करने की सान इस्तेमाल करना।
सानगर (पु0):– सान लगाने वाला धारदार हथियारों की धार सान पर घिसकर तेज करने वाला कारीगर।
सिल्ली (स्त्री0):– देखो पथरी
कुन्द (स्त्री0):– 1– हथियार की बिगड़ी हुई धार जो इस्तेमाल से मोटी हो गई हो और अच्छी काट न करती हो।
उदाहरण– तलवार की धार कुन्द हो गई है।
कहावत– ''कमीना यार कुन्द हथियार हमेशा वक़्त पर दगा दे''
2– बाज़ मुकामी बोलियों में कुनद को खण्ड मंड और खुड़ और मुड़ भी कहते है जैसे खुड़ा चाकू मुड़ा छुरी।
खुड़/खुड़ा (सिफत):– कुन्द का हिन्दी तल्लफुज़ देखो कुन्द फिकरा
गिरदा (पु0):– सानगिरो की इस्तलाह मुराद सान का चाक
लाप/लम्पा (स्त्री0):– देखो बड़ा फिकरा–2
लाग (स्त्री0):– कच्ची ईट या उसी किस्म की कोई दूसरी चीज़ जो काम के वक्त सान की बाड़ के साथ लगी रखी जाए। ताकि बाड़ चकनाने न पाए।
लंगर (पु0):– देखो माल
माल (स्त्री0):– बद्धी, लंगर, सान के चाकू घुमाने का पट्टा जो उसकी धुरी में पड़ा रहता है जिसको खिचने या घुमाने से चाक घुमता है देखो सान।

पेशा सेकलगिरी (जिलाकारी):– सकील गिरी और जिलाकारी की मुशतरक इस्तलाहात के लिए मलाख़ता हो जिल्द सोम पेशा जिलाकारी पेज न0 49 और जिलद चहारुर पेशा आईनासाज़ी।
आब (स्त्री0):– लोहे ओर दीगर धात के चीजत्रो के सतह की मसनुई जिला (चमक या सफाई) जो मुख़तलिफ़ तरीको से पैदा की जाए। (आना, जाना,देना, उतरना,बिगड़ना,जाना)।
कहावत– ''आबरु मोती की आब है एक दफ़ा उतरकर फिर नही चड़ती''
आबदारी (स्त्री0):– सेक़ल गेरा की इसतलाह मुराद जिला चमक सफाई।
ओप (स्त्री0):– आपका गला तल्लफुज़ देहाती कारीगरों की इस्तलाह देखो आब।
बादल (पु0):– देखो झाई
जिला (स्त्री0):– देखो आब और सकील।
झाई (स्त्री0):– बादल सकीलागिरों की इस्तलाह मुराद जिला की चमक में कही कही धंधलानप जो बतौर छाई मामूल हो ऐसी कैफियत को जिलाका ऐब समझा जाता है। (पड़ना)
जंग (पु0):– हवा, पानी या मिट्टी के असर से लोहे के अहीज़ा की मुर्दा और फत्ररसूदा हो जाने की कैफियत जो फफूँद की शक्ल बनकर रफ़्ता रफ़्ता बड़ती और अच्छे अपजा को खराब करती रहती है जिसको इसतलाहन जंग खा जाना (लगना) कहते है।
सुदाई (स्त्री0):– जिला के लिए किसी चीज को साफ़ करने का अमल।
सैक़ल (स्त्री0):– जिलाकारी लोहे और दीगर धात की चीज़ों को साफ करने और चमकाने का अमल (करना)।
नुसान (स्त्री0):– जिला करने की एक ख़ास किसम की सान।
गरम आब (स्त्री0):– लोहे की चीजत्र को आग में तपाकर और फिर पानी पिलाकर पेदा की हुई जिला इस तरीके से जो जिला मुकम्मल न हो यानि अधूरी रह जाए उसको इसतलाहन नरम आब कहते है।
लक (पु0):– जंग की पपड़ी जो लोहे से या किसी दूसरी धात की चीज़ पर बन जाए (लगना, चढ़ना) लोहे चीजत्र पर चड़ाने का एक ख़ास किस्म का रंग या साला जो चमक पेदा करे।
मोर्चा (पु0):– लोहे चीज़ों पर की सतह पर जंग का निशान जिससे सतह खुरदरी मालूम हो। जंग खुर्दा निशान (लगना)

नर्म आब (स्त्री0):– देखो गरम आब
दूसरी फसल– सपागिरी पेशा पहलवानी यानि व़र्जिश जिस्मानी और जड़त के करतब सिखाने का फ़न
उजड़ (पु0):– न तर्बियत याफ्ता पहलवान
अचल (पु0):– दस्त बदस्त लड़ाई या कुश्ती का वो आखिरी दाव जिसका कोई तोड़ न हो और हरीफ़ मग़लूब हो जाए। देखो दॉव
अडंगॉ (पु0):– लडन्त के वक्त पहलवान का अपने हरीफ़ को गिराने के लिए उसकी टॉगों में टॉग डाल देने या टॉग की आड़ लगाकर धक्का देने का दॉव (लगाना, देना, डालना,मासा) बाज़ मुकामी बोलियों में अड़ॅगे को सेना कहते है।
उखाड़ा (पु0):– कुश्ती की मशक या हरीफ़ से मुकाबले के लिए बनाया हुआ मुकाम। वर्जिश की जरुरत के लिए ये मुकाम चार मुरब्बागज होता है जिसकी जमीन को बालू और चिकनी मिट्टी मिलाकर नर्म कर लिया जाता है।
अखड़ (पु0):– बदसहूर और तुन्द खूँ पहलवान।
उखेड़ (स्त्री0):– पहलवानों की इस्तलाह निचला धड़ यानि पैरो की तरफ का टॉगों का हिस्सा। बैठना हरीफ़ को गिराने के लिए उसकी टॉगों में घुस जाना।
ऐड़ (पु0):– बेकार निकम्मा
उदाहरण– चोट लगने से हाथ ऐड़ हो गया।
ऐड़ना (क्रिया):– पहलवानो की इस्तलाह। मुराद आखड़े में पेड़ लोटे लगाना।
बगली (स्त्री0):– पहलवानो की इस्तलाह पहलू का रुख़ जिसमें दाव किया जाए (बैठना) हरीफ़ का सामना बचा कर पहलू पर गिरफ्त करना इस तरह के दोनो हाथ कब्ज़े में आ जाए और वो टॉगो पर जोर कायम न रख सकें। (हाथ) कमदर की वर्जिश का एक तरीका जिसमें मकदर को शनि के ऊपर से पहलू की तरफ लटकाकर सीधा कर लिए जाता है (निलालना)।
बिगाड़(पु0):– हरीफ़ के दोनो में नुक्स पेदा करने की तरकीब को जिसमें उसकी गिरफ्त अच्छी रह जाए लडन्त की इस्तलाह में बिगाड़ कहा जाता है (करना)।
बल (पु0):– ताकत कुवले जिसमानी करना बल्कि लाना मुराद ताकत का घमण्ड करना।
बलथम (पु0):– कुश्ती के दानो का नाम मुराद हाथ का उडंगा जिसमे हरीफ के दाये हाथ की कलाई को फूर्ति से पकड़कर और कोहनी के अन्दर हाथ का अडंगा

देकर मरोड़ दिया जाता है जिससे हरीफ़ के शनि जोड़ निकल जाता है। (करना, डालना)
बलडन्टर (पु0):– डन्टर पेलने की चोबी बनायी हुई नाल या नाली देखो डन्टल। इस नाल के पैरो को पाखे ओर गिरफ्त की जगह मयान कहलाती है।
बलवान (पु0):– ताकतवर नौजवान पहलवान।
बन्द (पु0):– अरबी लत्ज़ जमानबूद बमायनी हेला दॉवों पेंच पहलवानो की इस्तलाह में पहले दॉव का तोड़ हो जाने पर दूसरा नया दॉव जिससे हरीफ़ पर काबू कायम रहे (डालना) पकड़ गिरफ्त।
बन्द कुश्ती (स्त्री0):– ऐसी लडन्त जिसमे दोनों पहलवान गुथ जाए और दॉव करने का मैका निकालने के लिए एक दूसरे को रगेत्ते रहे।
बैठक (स्त्री0):– टॉगो की वर्जिश जो एक खास तौर से भतवाते।
उदाहरण– बैठकर के की जाती हैऔर दौड़ के मुकाबिल समझी जाती है। (लगाना)
पाठा (पु0):– मज़बूत और ताकत वर जवान तनोमन्द।
पाबन्द (पु0):– देखो केली पाबन्द
पट (स्त्री0):– पहलवानो की इस्तलाह मुराद कुश्ती में औन्दे पड़ जाने की हालत (करना, होना)।
पटख़ना (पु0):– ठोकर खाकर गिर पड़ने की कौफियत जो इस्तलाहन पटख़ना खाना कहलाती है (देना) उठा कर दे मारना उच्का कर जमीन पर पटक देना।
पट्ठा (पु0):– पाठा का दूसरा तल्लफुज़ देखो पाठा 2 पहलवान का शार्गिद ।
उदाहरण– पहलवान अपने अपने पठो के साथ दंगल में पहुॅच गए।
पिठठु (पु0):– पट्ठे का इस्तलाही तल्लफुज़ देखो पठ्ठा।
पिछाड़ना (क्रिया):– चित कर देना गिरा देना, हरा देना।
परबन्द (पु0):– लडन्त में हरीफ़ के दॉव का तोड़ करने के बजाए जवाब में नया दाूव करने की इसतलाहन परबन्द कहा जाता है देखो बन्द।
पकड़ (स्त्री0):– पहलवानो की इस्तलाह मुराद कुश्ती जो हरीफ़ के साथ हो या मशक के लिए (होना, लड़ना,बुदना)।
उदाहरण– बातों बातों में दोनों की पकड़ हो गयी एक ने दूसरे पर वार शुरु कर दिया।

पंजाकरना/पंजा लड़ाना (क्रिया):– हरीफ़ के हाथ के उँगलियों में डालकर जोर करना। इस सूरत में फ़रिक़ाएन में से जिसकी कलाई मोड़ दी जाए वो मग़लूब समझा या हारा माना जाता है।
पहलवान (पु0):– सिपाहयाना करतब जानने और हरीफ का मुकाबला करने वाला जंग जू बहादूर मर्दे मुकाबिल वर्जिश जिस्मानी और लडन्त का शैकीन।
पेंच (पु0):– देखो दॉव और बन्दु।
फसकड़ा मारना (क्रिया):– पहलवानो की इस्तलाह मुराद कुश्ती की मशक करने वाले का अखाड़े के किनारे दोनों जानो दाये बाये फहलाये हुए (आलती, पालती, मारकर) जमकर बैठ जाव।
तॉव दतिया/तावा दतिया (क्रिया):– कुश्ती में हरीफ के हाथ या टॉग को बेकार करने के लिए कुवत से मड़ोर देना।
तड़ी देना (क्रिया):– बढ़ावा देना, उकसाना, जर्रात दिलाना, जोश दिलाना वरगलाना।
उदाहरण– पहलवान ने तड़ी में आकर कुश्ती बदली मगर मुकाबला न कर सका।
तड़का (पु0):– मज़बूत तनाव मोटा ताज़ा ताक़तवर, धीग, हमपल्ला, मद्दे मुकाबिल ठाड़ा।
उदाहरण– पहलवान देखने में तो बहुत तकड़ा मालूम होता था लेकिन कुश्ती में बहुत बोदा निकला (तक तराजू की भारी वज़नी और बड़ी डण्डी को कहते है)।
तोड़ (पु0):– पहलवानो की इस्तलाह मुराद हरीफ के दाव का जबाब दूसरे दॉव से या ख़ाली देकर करना।
थप्पड़ (पु0):– लपड़ हरीफ के मुँह पर खुले हाथ (पंजा) की ज़रब (मारना, लगाना)।
टन्टा (पु0):– झगड़ा फसाद जबानी तू तू मै मै (करना)।
ठाणा/ठाड़ा (पु0):– देखो तकड़ा
जागियॉ (स्त्री0):– अखाड़े में उतरने या वर्जिश करने के वक्त सतर छुपाने का पैजामी जामा। देखो पा0– 2
जोड़ (पु0):– 1– हरीफ के दॉव से फायदा उठाने की तकरीब यानि उसको उसी के दॉव में फसा लैन का गुर या पेंच (करना)।
उदाहरण– कुश्ती में हरीफ ने बड़े जोड़ तोड़ किये लेकिन कुछ बस न चला।
2– मद्दे मुकाबिल हमसर बराबरी का।

उदाहरण– दादू हरीफ की जोड़ का नही था इसलिए हार गया।
जोड़ी (स्त्री0):– पहलवानो की इस्तलाह मुराद मगदर देखो मगदर चूँकि हाथो की एक साथ वर्जिश करने के लिए दो अदद मकदर होना जरुरी है इसलिए इस्तलाहन जोड़ी कहलाने लगे।
उदाहरण– बाज़ पहलवान एक सॉस में पासू हाथ जोड़ी के निकाल लेते है।
कुश्ती की मशक करने वाले दो हनीफ़ पहलवान।
जोड़ी के हाथ (पु0):– मकदरो की वर्जिश (निकालना) मकदर हिलाना।
चारो ख़ाने चित्त (पु0):– चारो हाथ पैर से बिल्कुल सीधा पक्ष हुआ होने की हालत किसी के अज़ खुद गिरने से हो या हरीफ के गिरा देने से। कुश्ती में हरीफ को जब तक बिल्कुल चित्त न किया जाए हार नही मानी जाती। चारो खाने चित्त हो जाना बेलाग हार कही जाती है (होन, करना)।
चॉटा (पु0):– हरीफ की चाढ यानि खोपड़ी के ऊपर हाथ के पंजे की पूरी ज़रब (लगाना,खाना, मारना) देना हाथ के नीचे सर पर मारना।
चपट (स्त्री0)– चाटे का इस्मेमुस्सखर देखो चाटा।
चपड़सी (स्त्री0):– कुश्ती में हरीफ की पिण्डली पर पिण्डली की तरब जिसके धक्के से वो गिर पड़े या लड़खड़ा जाए (भारना)।
चित्त करना (क्रिया):– देखो पछाड़ना कुश्ती में हरीफ काक सीधा गिरा देना जिससे उसकी हार मान ली जाए। (गिरना, पड़ना, होना)
चर्ख़ी/चरख़ (स्त्री0):– कुष्ती में हरीफ के हाथ को हाथ से पलटा देने या चकरा देने का दॉव जिससे वो घुम जाए। (करना) बाद उस्ताद इस दॉव को चक्कर कहते है।
चकर दण्ड (पु0):– एक हाथ पर घुमते हुए डन्टर पेलने की वर्ज़िश देखो डन्टर (निकालना)।
चक्कर (पु0):– देखो चर्ख़ी (चरख़)
चलत (स्त्री0):– हरीफ से हाथ मिलाने का मौक़ा और दॉव करने की ताक में रुख़ बदल बदल कर उतार चढ़ाव की भरत (करना) मुकाबले के वक्त हरीफ के सामने दोए बाये जल्दी जल्दी पैतरे बदलना।
चुंगल (पु0):– किसी चीज़ की गिरफ़्त के लिए हाथ का फैला हुआ पंज़ा। हाथ औन्धा उठा लिया और सर से ऊँचा करके पटक दिया जाता है। या हाथ पकड़कर उसके सीने से पीठ मिला के ऊपर से जमीन पर उलट देते है।

धोल (पु0):– देखो धप्पा।
धेंग (पु0):– मुसत्ंण्डा, तकड़ा, तिलंगी में नौजवान ताकतवर को कहते है उर्दू में धेंगा मुश्ती बमायनी हातापायी बोला जाता है। असल लत्जत्र धेंगा मस्ती है।
धेंगा मुश्ती (स्त्री0):– देखो धेंग
डन्टर/डण (पु0):– हाथ की कोहनी ओर शाने का दरमियानी हिस्सा। पहलवानो की इस्तलाह में इस हिस्से की वर्ज़िश को कहते है। जिससे हाथों का हिस्सा मज़बूत और सीना चौड़ा होता है। देखो दंड (पेलना, निकालना और करना) इस वर्ज़िश में जीम से ज़रा ऊँची किसी चीज पर करीब डेढ़ फिट फासले से हाथ बैठकर चारों तरफ पैरो पर फैल कर ख़डत्रे होते और आहिसता आहिसता झुक कर जमीन पर आते ओर फिर आली हालत पर हो जाते है। ये अमल मुर्करर वक्त तक मुतवातिर करते है।
डील (पु0):– जिस्म पर बदन डील के साथ लत्ज़ डोल मिलाकर आमतौर से डील डोल बोलते है। जिससे मुराद कद और मुटापा लिया जाता है।
डदाहरण– बिमारी ने सारा डील डौल घुला दिया सब हड्डियॉ नजर आने लगी है।
रगेदना (क्रिया):– कुश्ती हरीफ को दबोच कर उसके जिस्म को मुकियाना और घिससे देना जिससे उसका दम सॉस टुटे ओर कमजोर हो।
रोक (स्त्री0):– हरीफ के हरबे को टालने या उलट देने का पेंच (करना)।
रोला/रोला मचाना (क्रिया):– कुश्ती के वक्त हरीफत्र के ख़्याल को मुन्तशिर और निगाह को पलटने के लिए शोक गुल करना।
रुमानी (स्त्री0):– वर्ज़िश और लड़न्त के वक्त पहलवानो के सतर छुपाने का तिख़ोटा कपड़ा जो जॉग से बॉध दिया जाता है देखो पाठ–2 पेज न013 (बॉधना, कसना में हाथ डालना) पहलवानो की इस्तलाह मुराद हरीफ़ को कमर के पास से पकड़ना जिससे उसकी कमाली में हाथ पड़ जाए (के हाथ) मक़दरों की एक ख़ास तरीके की वजिर्त्रश का इसतेलाही नाम जिसमे मक़दरों को सर के मिद्र घुमाने के बाद सीधा करके हाथ नाफ़ तक जो कमाली बॉधने की हद होती है उतार लेते है। (निकालना) मकदर की इस तरह की कसरत को लंगर के हाथ भी कहते है।
रेपटा(पु0):– ढ़ीले हाथ का थप्पड़ जो हाथ लम्बा करके हरीफ के चेहरे पर मारा जाए। (देना, लगाना, मारना)
रेला (पु0):– धकेला बहाव, बहाव की तरफ पानी का जोर।

रेलना (क्रिया):– कश्ती में हरीफ को घेरा देकर दबाते हुए पीछे हटाना यानि हरीफ के मैदान को इस तरह घेरना कि वो दार की ज़द में आने से बचने के लिए हाथ हिलाता हुआ मौके की तलाश में आहिस्ता आहिस्ता पीदे हटे।
जमीन पकड़ना (क्रिया):– जमीन के दार या दॉव से बचने के लिए किसी चीज़ की आड़ या सहारा लेकर जम जाना। ओर उस पर हमला करने के लिए मौके की ताक में रहना। लड़न्त की इस्तलाह में पहलवान का कुश्ती में गिर जाने के बाद हाथ पैर समेट कर जमीन पर इस तरह औन्धा पड़ जाना मुराद लिया जाता है के उसपर कोई दॉव न हो सके ओर दूसरा ज़ोर लगाकर थकता रहे।
संगतोला (पु0):– मुल संगतोला का इस्तलाही तल्लफुज़ चक्की के पाट की शक्ल का पत्थर। 25,30 सेर या हस्बे जरुरत वज़नी पाअ या चकला जो कलाई और हाथ के लिए पहलवान से उठवाया जाता है। अगर वो एक हाथ से उसको सीधा ऊपर उटा ले तो उसकी ताकत मेयारी समझी जाती है। बाज़ पहलवान संगतोले को नाल कहते है देखो नाल।
सन्डॉ (पु0):– सॉड़ का इस्तलाही तल्लफुज़ मुराद ताकतवर लड़ाकू उर्दू में इस लत्ज़ का इसतेमाल बतज़ल समझा जाता है।
सेले के हाथ (पु0):– देखो मल्लाही हाथ।
सैन/सेना (पु0):– फकेतो की इस्तलाह मुराद अडॅगा देना अडॅगा।
शोरए पुश्त (पु0):– मुख़ालिफ़, लड़ाकू, झगड़ालू।
शेर डन्टर (पु0):– मामूल से लाइद हाथ चौड़े रखकर ड़ण पेलने के तरीके का नाम देखो दण।
सुराही कश (पु0):– लडन्त में हरीफ के गर्दन को ऑगो के अन्दर लेकर दबाये और बल देकर खीचने का दाद (करना)
फतह पेच (पु0):– हरीफ की कमर से लिपटकर उसके हाथो को कैची की सूरत पकड़ने और गिरा कर वार करने का दॉव।
काठा (पु0):– हरीफ को गिरा कर उसके हाथ को जानो के अनदर दबा बैठने और फिर पलटा खाकर उसको चित्त करने का दॉव (करना)।
कटीला (पु0):– मज़बूत पट्ठो और गइे हुए बदन का पहलवान।
कसरत (स्त्री0):– वर्ज़िश रियाजत बदनी। बदन और उसके हिस्से को ज्यादा मजबूत और तनाव बनाने और उनकी सेहत को कायम रखने के लिए बकत्रायदा और मुरतब मुखतलिफ़ अमली तरीके (करना)।

करतब (पु0):– वर्ज़िश जिस्मानी मुख़्तलिफ़ अमली तरीके (करना)।
उदाहरण– अखाडे के एक पहलवान ने मकदर के ऐसे ऐसे करतब दिखाये की देखने वाले दंग रह गये।
कर्नाटक की केली (स्त्री0):– देखो केली पाबन्द।
गज़दुम अन्दाज़/कसदुम अंदाज़ (पु0):– जमीन पर औधे लेटकर आज़ा से बिच्छु की शक्ल बनाने की कसरत इसतरह की सिर्फ पेट का हिस्सा जमीन पर टिका रहे और बाकी जिस्म को अधर करके बिच्छु की शक्ल बना दे और बार बार इस अमल को करता रहे। ताकि टॉगो और ऊपर के जिसम के पट्ठो जोर पड़े (करना)।
कुश्ती (स्त्री0):– लड़न्त दो हरीफ़ो का दस्त बदस्त मुक़ाबला जो बगैरह किसी के हाथ पैरो के दॉव से एक दूसरे मग़लूब करने के लिए हो (करना,लड़ना)।
कलाई चड़ाना (क्रिया):– पंजा करने का एक दूसरा तरीका जिसमे पंजा मिलाए (उॅगलियों में उॅगलिया डालने) के बजाए एक हरीफ़ दूसरे की कलाई मज़बूत पकड़ लेता है। जिसका रद्द टतोड़ हरीफ़ मुक़ाबिल का अपने पंज़े और कलाई की कुवत से कर लेना इसतलाहन कलाई पर चड़ाना कहलाता है देखो पंजा करना।
कन्नी मारना (क्रिया):– हरीफ़ के पहलू के करीब होकर पसलियों पर कोहनी से जरब लगाना (दबाना) हरीफ़ के पहलू की तरफ इस तरह दबाव डालना कि वो आगे बड़ने से रुक जाए (खाना और कनियाना) मुक़ाबले में आने से बचना। पहलू तही करना, कतरा कर निकलना।
कूली (स्त्री0):– नाफ़ से ऊपर का हिस्सरा अदन पसलियों के नीचे नाफ़ तक बदन का हिस्सा (भरना, पकड़ना) हरीफ़ की कूली को हाथ से अलबैठ से हाथ से पकड़ लेना फिर दॉव करना या उचकाकर गिरा देना।
केली पाबन्द (स्त्री0):– हरीफ़ के बदन में हाथ या टॉग का अड़ंगा डालने का दॉव इस तरह के वो गठरी की शक्ल बन जाए। चूॅकि ये दॉव दक्खिनी पहलवापन करते है। इसलिए ऑखड़ों में कर्नाटक की केली को नाम से मारुफ़ हो गया है।
शुमाली हिन्द के पहलवान इस दॉव पाबन्द गठरी या केली पाबन्द कहते है।
गठरी (स्त्री0):– देखो केली पाबन्द फिकरा–2

गर्दा बात करना (क्रिया):– बार बार पटखे देकर मिट्टी में लुटा देना ख़ाक आलूद कर देना।
गरोना (पु0):– हरीफ़ की गुद्दी पर कलाई की ज़रब (देना, लगाना, मारना)। उदाहरण– पहलवान से हरीफ़ को गिराकर इतने गर्दने मारे के उसका सारा मुँह सूज गया।
गुल जिन्दर (पु0):– हरीफ़ की दायी टॉग में हाथ डालकर उठा ले और उसकी गर्दल तक हाथ पहुँचा कर गिरफ्त कर लेने का दॉव जिससे वो बेक़ाबू हो कर गिर पड़े।
घूसा (पु0):– देखो मुक्का
लप्पा डुक्की (स्त्री0):– हरीफ़ पर एक हाथ से थप्पड़ ओर दूसरे से घूसा की मार (करना, होना)।
लप्पड़ (पु0):– देखो थप्पड़ लत्ज़ लप का इस्में तकब्बुर बमायनी खुली हथेली जिसकी उॅगलियॉ। मल हुई ऊपर को उठी या सामने को फैली रहे और उस सूरत में दोनों हाथ मिला लिये जाए। पहलवान के इसतेहाल में ढ़ीले हाथ के जोर से थप्पड़ मारने को कहते है।
लड़न्त (स्त्री0):– देखो कुश्ती।
लुन्ग बन्द भाई (पु0):– पहलवानी भाई–चारा किसी अखाड़े का शरीक।
लंगर (पु0):– लगोटी का इस्मेमुकबर कुश्ती के वक्त का पहलवानो का सतर पोश कपड़ा जिसमें सिर्फ सतर ढ़का रहता है देखो पाठ–2 पेज न0– 138 (बाधना ओर कसना)।
लंगर के हाथ (पु0):– मकदरो की वर्ज़िश करने का एक तरीका तफसील के लिए देखो रुमाली के हाथ तहत लत्जत्र रुमाली।
लंगोट (पु0):– देखो रुमाली ओर लंगर और तफ़सील के लिए पाठ–2 पेज न0– 138
उदाहरण– अखाड़े के दो तीन शार्गिद लंगर लंगरेट बाहर निकल आए।
मुठभेड़ (स्त्री0):– दंगल में पहलवानो का आमने सामने खड़ा होना मुक़ाबले के लिए रुबरु आ जाना।
मरी बोलना (क्रिया):– देखो ची बोलना
मुशटंडा/मुन्डा (पु0):– देखो तकड़ा और धींग जवानी में भरा हुआ नौजवान मर्द ज़िल्द साज़ी की इस्तलाह में लत्ज़ सटा बमायनी वर्क तरासने का बड़ा धूरा।

मुशतबन्द (पु0):– हरीफ़ का हाथ पकड़ कर बेकाबू कर देने का दॉव।
मुक्का (पु0):– घूँसा, डूक, तुलंगी में मुक्का गुँगु को कहते है और पहलवानी इस्तलाह में हरीफ़ को हाथ से मारने के लिए उँगुलियो बन्द हाथ की शक्ल को कहते है (मासा)।
मुक्का बाज़/मुक्के बार (पु0):– टक्को की लड़ाई लड़ने वाला पहलवान यानि मुक्को से हरीफ़ का मुकाबला करने वाला।
मुकदुर/मुगदर (पु0):– जोड़ी सीने और बाजुओं की वर्ज़िष करने के गाजर की शक्ल (मुख़रुती) के चोबी डण्डे जो पूरे कद के आदमी के लिए 39 इंच लम्बे और आमतौर से 7 सेर से 10 सेर तक वज़नी होते है जिसको इसतलाहन जोड़ी कहा जाता है। उनका निचला सिरा टाप, ठेबी और ऊपर का मुठ कहलाता है। टाब का कुब करीब 7 या 8 इंच का होता है। (हिलाना, फिराना) देखो जोड़ी।
मुल (स्त्री0):– देखो सन्तोला
मुकदरः– 1– हत्ती 2– लॉग 3– थाप
मुकदर जोड़ी कदीमनुमा (नमूना)
मल्लाही हाथ (पु0):– सैले के हाथ मकदरो की एक ख़ास तरीके की वर्ज़िश का इस्तलाही नाम जिसमें वर्ज़िश करने वाला मुकदरो को अपने सामने और पीछे पूरे हाथ खोल कर इस तरह घूमाता है जैसे कोई मल्ला अकेला दायें बायें बारी बारी चप्पू चलाए। और यही उस की वज़अ तसमिया है इसी तरह सेल भी दौड़े या इसी किस्म की लम्बे फैलाव या तान को कहते है चूँकि मकदरो की इस तरीके की वर्ज़िश से हाथ तान कर फैलाए जाते है इसलिए इस तरीके का नाम सैले के हाथ हो गया। इस तरीके में पहले तरीके की निसबत हाथ कम खोले जाते है।
मोर चाल (स्त्री0):– वर्ज़िश का एक तरीका जिसमें पहलवान उलटा खड़ा होता और अहिस्ता अहिसता आगे पीछे हरकत करता है यही कसरत की वजअ तसमिया है इस अमल से दिल कवि औा दिमाग की तरफ दौराने खून ज्यादा होता है। (चलाना)मोर चाल अदाज भी कहते है।
महाबलि (पु0):– शह जोर पहलवान बड़ा ताकतवर इंसान।
मेट (पु0):– हरीफ़ के दॉव का रदास तरह की दॉव की असलियत बाकी न रहे और वो कोई दूसरा दॉव करने पर मजबूर हो। दॉव के तोड़ ओर मैट के फ़र्क के लिए देखो तोड़।

नाक डन्टर (पु0):– डन्टर पोलिए का एक तरीके का इस्तलाही नाम जिसमे नीचे से उभरते वक्त सरतान कर सीने पर होते ओर फिर सीने को उतारते हुए उलटे जाता है। जिस ताह टॉग फन डाल कर पीदे को हटता है इस तरीके से शाने मज़बूत होते है।
सन्तोला (संगतोला) चूँकि इ सवज़नी पत्थर की शक्ल घोड़े की नाल से मिलती जुलती नाल (स्त्री0):– लत्ज़ नाल का इसतलाही तल्लफुज़ तस्बीर ओर तफसील के लिए देखो है। जिसके पेच में गिरफ्त की जगह बनी होती है। यही सूरत उसकी वजअ तसमिया है।
नाली (स्त्री0):– देखो बल डन्टर
नाली के डन्टर (पु0):– डन्टर की मामूल वर्ज़िश जो बल डन्टर पर की जाती है देखो डन्टर बल डन्टर।
निहत्ता (पु0):– वो शक़्ल या पहलवान जिसके पास कोई हथियार न हो।
नीचे डालना (क्रिया):– हरीफ़ के औधा गिरा उसके ऊपर चढ़ बैठना या औधे पड़ जाने वाले हरीफ पर दबाव डाले बैठे रहना।
हाथ फैलाना (क्रिया):– हरीफ़ के सामने आकर कश्ती के लिए हाथ बढ़ाना और कभी कभी एक दूसरे के हाथो को छुकर मुकाबले के लिए आमदगी का इजत्रहार करना मुकाबला शुरु कर देना।
हाथ होना (क्रिया):– कुश्ती हो जाना। मुकाबला हो जाना मुठभेड़ हो जाना।
उदाहरणः– सब देखने वालो के सामने दो दो हाथ हो जाए तो अच्छा है
(दिखाना) वर्ज़िश करतबो का मुजाहिरा करना तलवार के हाथ चलाना (डालना) हमला कर देना, वार करना ज़रम लगाना। (चलाना, मारना, हमला करना)
उदाहरण– किसी का हाथ चले किसी की जुबान।
हाड़ (पु0):– जिस्म का ढ़ाचॉ कदो कामद काठी।
हतकोड़ा/हथौड़ा (पु0):– कुश्ती में बाऐं हाथ से हरीफ़ की कलाई पकड़कर दायॉ हाथ उसकी कोहनी के अन्दर फुर्ति से डालकर गर्दम में उनका इस तरह अडंगा लगान कि हरीफ के शाने का जोड़ उखड़ जाऐ या वो बेकाबू होकर गिर पड़े (डालना करना)।
हत्ते/हथ्थे (पु0):– देखो बल डन्टर (जड़ना) कुश्ती में हरीफ़ के पीछे लिपटकर और उसकी बगलो में से हाथ निकाल कर गुद्दी के ऊपर जड़ लेना जिससे उसके दोनो हाथ बेकार हो जाए।

हट्टा/कट्टा (पु0):– सन्ड मुन्ड सन्द मुसन्द मोटा ताजा तन्दुरुस्त व तवाना कसरती बदन का नौजवान।
हड़ा (पु0):– फने बकैती के एक दॉव का नाम जिसमे हरीफ़ को गिराकर उसकी छाती पर घुटना रख दिया जाता है और इस तरह जोर किया जाता है कि वो हार मान जाए।
हफ्ते जड़ना (क्रिया):– हत्ते जोड़ने का गलत तल्लफुज़ देखो हत्ते जोड़नां
हनुमान दण्ड :– दण्ड पेलने के एक तरीके का नाम जो दृचारपाई को चारों पावों पर चारों हाथ फैलाकर दाये और बाऐ पहलूओ पर बारी बारी जोर देते हुए साप के लहराने की वजअ पर पेले जाते है और इसकी वजअ तसमिया है देखो दण्ड।

2– पेशा फन पटा बॉक बिनौट और सैफ साज़ी

आड़ (स्त्री0):– आड़ का हरीफ़ की ज़रब या गिरफ्त से बचने के लिए पैतरा बदल कर हथियार को उसके सामने कर देने का अमल ताकि उसका वार खाली जाए या रुक जाए।
आइ तोड़ (स्त्री0):– आड़ के साथ जवाबी हमला करने का तरीका देखो आड़ ज़ारहाना और मुदफआना बिगाड़मेट और जोड़ बन्द।
अहदी (पु0):– देखो अहदी
अदाना (पु0):– देखो खुद
अरतक और अरतक गजम (स्त्री0):– सर और चेहरे पर डालने की एक किस्म का जर्रा जिसको सैफ बाज़ लड़ाइ के वक्त लगा लेते है।
अरना अघाल (पु0):– फन बॉक के दॉव का नाम जब हरीफ एक दूसरे का छूरी का हाथ पकड़ ले तो जो चालाक ओर फुर्तिला होता है वो पलटा खाकर अपने शाने से हरीफ के हाथ को टहोका देकर हाथ छुरा लेता और फैरन वार कर देता ये दॉव दायी तरफ से किया जाता है तो उड़ना अघाल कहलाता है।
अड़का (पु0):– देखो आड़ और अड़तोर।
असपेना (पु0):– फन बाग का एक दॉव जिसमे हाथ पकड़ कर लिए जाने पर फुर्ति से घूम कर हरीफ की पुश्त की तरफ निकल आते है। और दायें या बाऐ पहलू पर वार करते है।
असलहा (पु0):– जंग के हथियार।
असलहाखाना (पु0):– क़ोरख़ाना असलहा जमा करने की इमारत या मख़सूस जगह।

असलहा साज़ (पु0):– असलहा बनाने वाले फन करीगर।
इकअंग/इकअंगा (पु0):– यकिंग हिन्दी इस्तलाह में प्यादा सिपाही को कहते है और सैफ़ बाज़ी में बगैर सपर के सिर्फ तलवार से मुकाबिले करने को कहा जाता है इस लिए इस तरीक जंग का नाम बनौट बगैर ओट मशहूर हो गया।
इकवई (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के मुकाबिल सीना पलटा कर कतराते हुए खड़े होने का अंदाज इस तरह की आड़ में आ जाए (होना)।
अमरधज (पु0):– सैफ़ साज़ी में हरीफ़ के मुकाबिले खड़े होने का ठाठ जिसमें पैर के पंजो पर जोर डाल कर हमीदा कमर खड़े होते और सपर को तलवार के बराबर सर के सामने टॉगे घुटनो पर जोर से ख़म के साथ आगे पीछे एक सीध में रखते है।
इन्द्रा :– फन बॉक का एक दॉव जो बैठकर छुरियों के मुकाबले के वक्त किया जाता है, जो हरीफ़ एक दूसरे की छुरी का हाथ पकड़ ले तो फुर्ति से उसके हाथ पर टॉग मारकर कलाई छुड़ा के लेने के फ़ेल को इन्द्र कहा जाता है। (करना)
अंगरखा (पु0):– सैफ़ बाज़ के जिस्म को जानो तक ढ़क लेने वाली आहनी ज़र्रा।
अन्नी (स्त्री0):– सिनान, बर्छी, तलवार, छुरी तीर नेजे या बर्छे की नोक (लगाना, मारना) तलवार वगैरह की नोक से हरीफ़ के जिस्म पर ज़ख्म लगाना।
अन्नी पहलू गुज़ार (स्त्री0):– छुर्री वगैरह नोक की ज़रब जो पहलू की तरफ से दिल पर लगाई जाए। या पहलू को चीर कर दिल तक पहुॅच जाए।
ओछी (पु0):– हथियार बन्द पहलवान यानि जो पॉचो हथियार से आरास्ता हो।
ओचाहाथ (पु0):– हथियार की नमुकमल या अधूरी मार। तलवार या छुरी का मार जो फैसला कुन न हो (पढ़ना, लगाना, मारना)।
ऐरी (पु0):– एहरी का गलत तल्लफुज़ एक घोड़ा रखने वाला सिपाही जो अमन के जमाने में घर पर रहे और लड़ाई के वक्त तलब पर हाजिर हो जाए। घोड़े की परवरिश उसके जिम्मे होती है। जिसके लिए उसको खजाने से यौमिया या महावर एहसाल होती है उनको कम की सिपाही भी कहते है।
बाल सांगणा/बाल संगणा (पु0):– फन बाग के एक दॉव का नाम जिसमे छटकर दुश्मन की पुश्त पर सवार होकर उसके हाथ गाठ लिये जाते है।
बान/बाना (पु0):– संस्क्त बमायनी तीर और फारसी में एक किस्म के गुरज़ को कहते है जिसके एक सिरे पर तबर और दूसरे सिरे पर पान की वजअ का हथियार होता है।

बाना (पु0):– फने बिनौट की इस्तलाह मुराद लोहे की करीब पॉच फीट लम्बी सलाख़ (छड़) जिसको दोनो हाथो में पकड़ कर जिस्म पर एतराफ पर चूमक्खा घूमाते है ताकि दुश्मन करीब आकर वार न करने पाए ओर मौके का साथ उससे दुश्मन पर हमला भी करते रहते है (फिरना, हिलाना)।
बनाअत (पु0):– दोनो हाथो में पकड़ कर लम्बी तलवार चलाने वाला सैफ बाज़ देखो बाना।
बॉच/बाछना (स्त्री0):– तलवार की म्यान (नेयाम) के मुँह के जोड़ या बग़ली सिरे जिसमे कब्ज़ा भरपूर जम जाए देखो तलवार।
बॉड़ी (स्त्री0):– बॉडे का इस्मेमुसग़र लाठी हाथ में रखने की औसत दर्जे की मोटी करीब सवा गज़ लम्बी लकड़ी।
बॉक (स्त्री0):– हलाली शक्ल की छोटी घुरी खंज़र हिन्दी में बॉक टेढ़े या ख़मीदापन को कहते है। और शायद यही कौसनुमा छुरी की वजअ तसमिया है।
बॉक बाजी (स्त्री0):– बकेती फन बिनौट में तलवारों के टुटने या गिर जाने के बाद हरीफ़ पर छुरी से हमला करने का फेल देखो बॉक।
बाहरा (पु0):– सैफ बाज़ी की इसतलाह मुराद हरीफ़ के सीधे हाथ की तरफ के आज़ा मसलन कनपटी शाना, कुल्हे और पिण्डली पर सिलसिले वार जर्बे जो हाथ पलटाकर तलवार को सीधकर लगायी जाए। (मारना)
बट (स्त्री0):– तलवार के कब्जे के बीच का चौड़ा हिस्सा हिनदी में पुतली कहलाता है। उर्दू में बुत्ता देना और बुत्ता बताना बतौर मुहावरा बोला जाता है और अराकशों की इस्तलाह में बत्ता तख़्ते की फाट को कहते है। देखो जिल्द –एक।
बजर (स्त्री0):– दो तलवारों का जोंड़ा या जुड़वॉ तलवार लिसके बीच में कब्जा और दोनो तरफ फल होते है। हिन्द इसको इन्द्र देवता से मनसूब करते है। बाज़ मुकामत पर सॉप की जबान की दो मुही तलवार को कहते है देखो तलवार।
बिजली/बिजली चर्ख (स्त्री0):– सैफ़ बाजी में हरीफ की तलवार का सिरा रख कर जोर से पलटा देने का अमल जिससे उसका हाथ चक्कर खा जाए और तलवार टुटकर दूर जा पड़े। (करना)
बचत का पैतरा (पु0):– सैफ़ बाजी में हरीफ के सामने सीना छुपाए हुए पहलुओं को बारी बारी मुकाबिल में लाकर आगे बढ़ने और पीछे हटने की चाल जिसमें

सीधे पैर को उल्टे पैर के सामने कैची की शक्ल बनाये हुए हस्बे जरुरत चढ़ते उतरते है जिसको इस्तलाहन चढ़ाव उतार कहते है (चलना) देखो पैतरा।
बिछुआ (पु0):– बिच्छु के डंक की छोटा ख़ंजर।
बख़्शी (पु0):– सिपाहियों की तनख़्वाह।
बाटने वाला ओहददार :– सिपाहियों की तनख़्वाहदार।
बर्छा (पु0):– भाला दो धारा अन्नी दार सन्ट या नेजा यानि जिसका फल दो धार हो।
बरेटी/बनेटी (स्त्री0):– बॉन (बाना) का इस्मेमुस्गर देखो बाना/बिन्नोट की इस्तलाह में लट्टूदार सिरो के गज़ को कहते है। जिसको बीच में से पकड़ जिस्म के मर्द फुर्ती से घुमाया जाता है। ताकि दुश्मन करीब न आ सकें कभी जरुरत के मौके पर या तमाशे के लिए इन लट्टुओं की जगह कपड़े के गोले तेल में तर करके बॉध देते है और उनकी जलाकर जिसम के गिर्द शोले का चक्कर बन जाता है। ओर दुश्मन पास नही आता। (फिराना)
बसूला (पु0):– दो धारा भारी सीधा और चौड़ी दम का छुरा जिसके बारे किसी कदर कजदार होते है। और गज़ की तरह चलाया जाता है।
बकन्तर (स्त्री0):– मोटी और मज़बूत किस्म का नीम आस्तीन जरा जो दुश्मन से मुक़ाबले के वक्त जरा या रेशम के लबादे के ऊपर पहन ली जाती है।
बकरायत/बकेरी (पु0):– 1– ब्रंकोली शमशीर बन्द प्यादा सिपाही।
2– फौजी जासूस या ख़बर रिसा।
3– खजाने का पहरेदार।
बकेत/बन्केत (पु0):– फकेत बनौटी तलवार और छुरी से दुश्मन का मुकाबला करने वाला माहिर फ़न।
बकेती (स्त्री0):– बॉकबाजी तलवार के बाद छुरियों से मुकाबला यानि जंग करने का फ़न। छुरी से हरीफ़ का मुकाबला करने का माहिर देखो बॉक।
बकेरी (पु0):– देखो बकरायत।
बखाता (पु0):– लट बन्द सिपाही।
बन्द ज़फ़र पैकर (पु0):– देखो जफर पैकर और अली मदद हज़।
बॅक कोली (पु0):– देखो बकरायत।
बिन नोट (स्त्री0):– देखो इकअंग सैफ बाजी की इस्तलाह मुराद वगैर सपर के सिर्फ तलवार से मुकाबला करने का तरिका जिसमे हरीफ़ के वार पैतरा बदल कर

या दॉव से रद्द करते है। और यही उसकी वजअ तसमिया है। इस फ़न के जानने वाले कहते है कि अरबो के यहां सिपर नही थी। ईरानियों और हिन्दुसतानियों के यहाँ इसका रिवाज था। मबदी को तलवार की बजास बॉस के डाड़ो से मशक करायी जाती है। फ़न सैफ़ बाज़ी के जवाल के बाद से डाड़ो की कसरत को ही इस्तलाह बननोट कहां जाने लगा। अब ओ भी बराए नाम रह गयी है।

बेपनाह कब्ज़ा (पु0):– तलवार का बग़ैर आड़ का दस्ता।

बेल (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद पूरी गर्दन यानि खोपरी के जोड़ से शाने की हडउीयों तक कुल लम्बान जिसमे कइ जोड़ होते है। (काटना)

बेल बॉक (स्त्री0):– छुरियों के मुकाबले में दॉव पेंच का सिलसिला जो हरीफ़ की शिकस्त पर ख़त्म हो या दोनों बराबर रहे।

भाला (पु0):– संस्कृत भाल बमायनी ज़ख़्म मुराद वो हथियार जिसकी नोक की ज़रब से जिसम पर गहरा ज़ख्म पड़ जाए देखो बर्छा।

भुज (पु0):– दंड शाने ओर कोहनी के दरिमियान हाथ का हिस्सा जिसपर तलवार की ज़रब लगायी जाती है।

भरपूर मार, भरपूर हाथा (पु0):– हरीफ़ पर कारी ज़रब जो उसको बेकार कर दे। (पड़ना, मारना)

भिर्चा (पु0):– सैफ़ बाज़ी की इस्तलाह मुराद सीने का दरमियानी हिस्सा। छाती का पूरा दौर (मारना)।

भरकटी (स्त्री0):– परेशानी की काअ जो तलवार से की जाए। (मारना)

भरी चोट (पु0):– हरीफ़ के आज़ा पर अंदाज़े के मुताबिक पूरी और कारी ज़रब (लगाना और मारना)।

भन्डारा (पु0):– (लठ्ठ) लठ्ठ बाज़ो की इस्तलाह मुराद खोपड़ी या सर का हिस्सा (फोड़ना, खोलना)।

पलत (स्त्री0):– पखपालत पैर के ऊपर का हिस्सा पिएडली (लगाना, मारना)।

पखरी (स्त्री0):– बकौती की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के मुकाबिल बैठने का ठाठ जिसमें दुरी की नोक जमीन की तरफ करके बायॉ हाथ से कब्ज़े को सहारा दिये दुश्मन के तेवर पर नज़र जमाये रहते है।

पुतली (स्त्री0):– तलवार के कब्जे का दरमियानी जो किसी कदर उभाखॉ होता है। देखो बत्त

पटा (स्त्री0):– देखो बरेटी हाथी की सूँड़ की हरकत पर तलवार चलाने का एक तरीका उस्तादों ने इजात करके उसका नाम पटाबाज़ी रख लिया है इसको बरेटी भी कहते है। सैफ़बाज़ी के जवाल के बाद लट से मशक की जाने लगी है।
पटा बाज़ (पु0):– पटा के करतब जानने वाला देखो पटा।
पट्टा (पु0):– देखो परतला।
पटका (पु0):– जनेव, हमाइल, सैफ़ बाजत्री की इसतलाह शाने से नाफ़ तक तलवार की ज़रब से तिरछी काट (लगाना, मारना)।
परतला (पु0):– पट्टा दिवाल शमशीर ढाब देखो तलवार बॉधने या लटकाने का तसमा।
पख कड़क (स्त्री0):– पैर का तख़्ता या तख़्ते के नीचे का हिस्सा जिसपर ज़रब से टॉग बेकार हो जाए। (मारना, लगाना) देखो कड़क
पख पालत (स्त्री0):– देखो पालत।
पलटा (पु0):– फ़न बॉक की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के वार को खाली देकर उसी किस्म का वार करना
तलवार या छुरी के वार को उलट देना। (मारना, करना)
पनाह (स्त्री0):– तलवार के कब्जे पर उँगलियों के बचाव की आड़ देखो तलवार।
पोला (पु0):– देखो चलत।
प्याज़ी (स्त्री0):– छोटी सीधी छुरी।
पेपला (पु0):– ठला, तलवार की बाड़ की तरफ कब्ज़े की आड़ जिससे हाथ की गिरफ्त की हिफाजत होती है देखो तलवार।
पैतरा (पु0):– चलत, पोला, कदम बाज़ी या उसके वार को रोकने के लिए ख़ास चाल से जिस्म को चराते और बचाते हुए आगे बढ़ना या पीछे हटना (बदलना, चलना, दिखाना, लगाना) चाल शकरी।
पेश कब्ज़ (पु0):– खुज़र पहलवानी इस्तलाह मुराद केली (एक दॉव का नाम)।
पैकान (स्त्री0):– देखो फल।
पैकान कश (स्त्री0):– एक किस्म की नश्तर नुमा छोटी दुरी।
फॉसी (स्त्री0):– फ़न नोत के एक दॉव का नाम जिसमे हरीफ़ की गर्दन को हाथ (कोहनी के ख़म में लेकर दबोच दिया जाता है, लगाना और डालना)।

फरी (स्त्री0):– लत्ज़ फर्रे का इस्मे भुसगर आसाकशो की इसतलाह में दरख़्त के शुरु के तख़्ते को कहते है। जिसका एक रुख गोलाईदार (दालवॉ) होता है और दूसरा हमवार। सैफ़ बाज़ों के इसतलाह में फर्री से मुराद सपर या ढ़ाल होता है।
फल (पु0):– डाल काशतकारी इसतलाह में फार हल की आहनी नोक को कहते है। और स।फ़ बाजत्री में फल से नेजे या भाले की अनी मुराद होती है। तलवार, छुरी या चाकू के ऊपरी हिस्से को भी कहा जाता है। फार और फल एक ही लत्जत्र के दो मुख़तलिफ़ तल्लफुज़ है।
फन्दा (पु0):– देखो फॉसी।
तॉव (पु0):– तलवार या छुरी का ज़रब लगाते वक्त हाथ का झोला देना।
तब्रज़ाग़नोल/तब्रदाग़नोल (पु0):– जगाला दो रुख़े कुढ़ाले की वज़अ का जंगी हथियार जिसका एक रुख़ चपआ धारदार और दूसरा कौऐ की चोंच की शक्ल उन्नीदार होता है।
तिसमा (पु0):– सैफ़ बाज़ों की इस्तलह मुराद कमर यानि बीच धड़ पर तलवार की जरब जो हरीफ़ की ज़रब का जबाब हो।
तलवार (स्त्री0):– कदीम और मशहूर जंगी हथियार जिसकी बहुत सी किस्में है जिनके नाम और इस्तलाहत हस्बे मौके दिये गऐ हो।
तेनाल (स्त्री0):– तलवार की म्यान के निचले सिरे की आहनी शाम।
तेग़ (स्त्री0):– असूसन सिपटी फनदार सीधी तलवार यानि जवानी के करीब किसी क़दर चौड़ी हो ˙ चौड़ा फल की सीधी तलवार देखो तलवार।
तेग़ा (पु0):– तेग़ का इसमेमुसग़र।
थाना (पु0):– क़दीम इस्तलाह मुराद निगेहबान फौज के कायम का छोटा किला।
थपकी (स्त्री0):– मिक्का फ़न बकैती हरीफ़ की कलाइ को झटका देने या उस पर इसतरह जरब लगाने का अमल जिसकी वजह उसके हाथों से छुरी गिर जाए। (देना, लगाना)
टाल (स्त्री0):– ठेलना हरीफ़ के वार को जवाबी ज़रब का इशारा बताकर बचाव करने का तरीका जिससे उसका वार ख़ाली जाए। (करना)
टिपका (पु0):– हरीफ़ की खोपड़ी पर तलवार की नो की ज़रब जो हाथ पलटाकर लगायी जाए। (लगाना, मारना)
टहोका (पु0):– हरीफ़ की परेशानी पर तलवार या दुरी की नोक की ज़रब जो बर्छे की तरह लगायी जाए। (देना, लगाना, मारना)

ठाठ (पु0):– धज (द ह ज) अंदाज़ शान मुकाबले के वक़्त हरीफ़ के सामने खड़े होने को उस्तादाने फ़न का मुर्करर कर्दा ढ़ग जो वार करते और रोकते वक़्त चलत फिरत में बल या रोक न पैदा होने दे। ठाठ का आम तरीका यही है के बायॉ पैर आगे बढ़ा कर थोड़ा ख़त्म कर देते है। और इसी पर जिसम का वनज तोलकर सीने पर तलवार कॅधे पर ताने हुए। हरीफ़ पर वार करने की घात में खड़े होते है। मुख़तलिफत्र अखाड़ो के उस्तादों ने असल ठाठ में कुछ थोड़ी कमी बेशी करके अपने अपने इस्तलाही नाम रख लिए है लेकिन असल सब की एक ही है।

ठाठ दावती (पु0):– देखो ठाठ और दावती।

ठाठ ज़जीरा (पु0):– देखो ठाठ इस तरीके में वार करते ओर रोकते वक्त बायॉ पैर हमेशा आगे रखते है और चलत फिरत में कदम उठाये नहीं जाते असली हालत पर कायम रखते हुए आगे पीदे खसका (ख स का) या फिसला (फि स ला) ए जाते है जैसे जजीर खीची जाती है और यही उसकी वजअ तसमियॉ है।

ठल्ला (पु0):– देखो पेला।

ठेका (पु0):– लत्जत्र टहुके का दूसरा तल्लफुज़ देखो टहोका और टिपका।

हिलना (क्रिया):– देखो टाल हरीफ़ के वार से बचने के लिए तलवार झमकाते रहना जिससे जबाबी ज़रब का इशारा मालूम हो।

जल्लादी पैतरा (पु0):– हरीफ़ परकारी (भरपूर) ज़रब लगाने के लिए तेजी से डेवड़ा कदम चलाना। इस तरह के दायें पेर की एक ही फिरत हरीफ़ के बिल्कुल करीब कर दे। उसका आम तरीका यह है दायें पेर को बायें पेर के सामने मामूल से ज्यादा बढ़ा कर इस तरह रखते है कि बायॉ कदम उखड़कर झपअकर आगे आ जाता है। (उठना, भरना, चलना, डालना) देखो पेतरा।

जम्बिया/झम्बिया (पु0):– जमधर का इसमे मुसग़र शेर के नाखून की शक्ल का धारा ख़ंजर।

जमधर (पु0):– दो धारा सीधा ख़ंजर।

जम ख़ाक (पु0):– हलाली शक्ल का छोटा ख़ंजर या छुरी जिसकी बाण। (धारा) जिसका बाण अनदर के रुख हो।

जमधर (स्त्री0):– हरीफ़ के वार को खाली देकर उसकी पुश्त की तरफ झपटकर आने और गर्दन पर जमघर हासे का तरीका (करना)।

जनबूद (पु0):– जम्बे का इसमे मुसग़र देखो जम्बियॉ।

जोशन (पु0):– दस्तवाना सैफ़बाज़ी की इस्तलाह मुराद बाजू (ढ़ड़) की हिफाजत की जरा जरा तलवार की जर्ब से हिफाजत को कोहनी तक की आहनी को शीश (मारना) बाजू पर तलवार मारना।
झॉज (पु0):– अलेजम छोटी छोटी पतेली थालियों की लडियों से बनी हुइ कमान जिसको मुकाबले के वक्त पहलवानों को जोश दिलाने के लिए हिलाकर झन्कार पैदा करते है।
झमकाना (क्रिया):– मुकाबले के वक्त हरीफ़ के सामने तलवार पर चमकाना यानि हरीफत्र को तलवार की आबदारी दिखाना। तलवार का मुजाहिरा करना।
झोला (पु0):– हरीफ़ पर ज़रब लगाने से कब्ल तलवार या ख्ज्जर को साधने यानि तवाज़ुल कायम करने केढ़ले हाथ की एक हरकत (देना)।
चाकी चाक (स्त्री0):– कनपटी और कान के जोड़ के दरमियान की जगह जो हरीफ़ की छुरी के वार में आ जाए।
चालशकरी (पु0):– देखो पेतरा नोआवोज़।
चिता (स्त्री0):– बकैती इसतलाही मुराद बग़ल के नीचे पसली पर छुरी की नोक की ज़रब (लगाना) और मारना।
चक्कर (पु0):– देखो दास चलत का पैतरा देखो चलत।
चमकाना (क्रिया):– देखो झमकाना।
चोरधज (पु0):– हरीफ़ के सामने तलवार और सिपर की आड़ लेकर खड़े होने का ढ़ग जिसमें टॉगे खमीदा और ऊपर का पूरा धड़ सिपर की हिफाज़त में रखकर अपनी जगह से उच्चकर हरीफ़ पर वार करते और अपना ठाइ कायम रखते।
चौरंगा (पु0):– बकैती की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के हाथ में टॉग का अड़गा लगाकर बेकाबू करने और गर्दन पर छुरी मारने का ढ़ग (करना)।
चौका चलाना (क्रिया):– हरीफ़ पर एक ही वार में चार जर्बे लगाने का तरीका। ये जर्बे दायें बायें कनपटी और दोनो पिण्डलियों पर लगायी जाती है। इस तरह के पहले दॉयी जानिब से ओर फिर हाथ पलटा खाकर तलवार के दूर दूर हो जाए। जिसको इस्तलाहन चार जर्बी घाई कहते है। देखो घाई
चौकी (स्त्री0):– फौजी पहरेदार की कायमगाह।
चौकोला पैतरा (पु0):– चौखा पैतरा हरीफ़ो में धर जाने के मौके की चलत जिसमें एक जगह को मरकज़ ठहराके चार कदम से चारों तरफ घुमाते और दुश्मन के

धड़ को तोड़कर निकलने की कोशिश में हर कदम तलवार का वार करते जाते और नजर दुश्मनो पर जमाये रखते। नक़्शा चोग़ला पैतरा
चोमखा पैतराः– देखो चोगुला पेतरा।
चहका (पु0):– बकैती की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के जबड़े पर छुरी की नोक की ऐसी ज़रब जो गाल में सुराग कर दें
चीर (स्त्री0):– सोनत हरीफ़ की रानो के दरमियान पिशाबगाह के मुक़ाम पर तलवार की काट जो खीच कर नाफ़ तक पहुंचा दी जाए। (लगाना और मारना)
छपका (पु0):– फ़ेन बॉक की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के सीने या पेट पर छुरी की नोक की ज़रब जो पर हो जाए। (करना, मारना)
छलावा (पु0):– सैफ़ बाज़ी की इस्तलाह मुराद हरीफ़ पर वार करने से क़ब्ल फरत के साथ तलवार झमकाने और उसकी नजर हटाने का ढ़ग (करना)।
छोट (स्त्री0):– 1– लछा हरीफ़ो का अपने मुकाबिल पर बेठाठ वार करना ज़रब पर ज़रब लगाने का फैसला (लड़ना और करना)।
2– मुकाबले में दुश्मन पर इस इस किस्म की मुत्तवातिर ज़र्बे और ज़र्बो को इस्तलाहन छूट या छूट का लच्छा भी कहते है।
छूट का लच्छा (स्त्री0):– देखो छूट फिकरा न0–2
छेन्द बॉध (स्त्री0):– फन विन्नौट की इस्तलाह मुराद हरीफ़ को दॉव से गाटने और हथियार छीनने का अमल यानि दॉव करके पकड़ लेने और उसके हथियार पर कब्जा कर लेने का तरीका।
हिमाइंल (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ी की इस्तलाह मुराद तलवार की ज़रब जो जिस्म को गर्दन से नाक तक तिरछा काट दे। (लगाना, मारना)
ख़ार पुश्त (पु0):– मछली की रीढ़ की हड्डी या खुजूर की पत्ती की शक्ल का जंगी हथियार जो गुर्ज़ की तरह चलाया जाता है।
ख़ाली देना (क्रिया):– पैतरा बदल कर हरीफ़ की ज़रब को रद्द करना यानि ख़ाली जाने देना।
खंजर (पु0):– छुरी की किस्म का हलाली शक्ल का हथियार (मारना)।
खुद (पु0):– अदाना, दबला सर पेशानी और कनपटी की हिफाज़त की आहनी कुला आहनी कन्नटोप।
दामन गिर्दा ढ़ाल (स्त्री0):– पलटे हुए किनारों की ढ़ाल देखो ढ़ल।

दावं और दो (स्त्री0):– सीधी और भारी तलवार जो सर पर फ़न की शक्ल फैलाव होती है। छठा कॉग में बनायी जाती है। अहले वर्मा का क़ौमी हथियार।
दॉव (पु0):– देखो बन्द और पेंच हरीफ़ पर ज़रब लगाने का क़ायद हरीफ़ पर वार करने या उसके वार से बचने का करतब (करना) दॉव की रोक को तोह (बिगाड़) और उसकी रो को जोड़ (मैट) इसी तरह बन्द पर बन्द और सबसे आखिर को अचल कहते है।
दावती (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ी के एक आखाड़ का नाम जिसमे सिर्फ तीन ज़र्बे है जो एक पैतरे पर उतार चढ़ाव से लगाई और रोकी जाती है। (हिन्दुओं में हनुमन्ति के नाम से मौसूम किया जाता है)।
दबला (पु0):– देखो खुद।
दस्तवाना (पु0):– देखो जोशन आहनी दस्ताना जो कही तक लम्बा और अक्सर तलवार के कब्जे के साथ मिला हुआ होता है।
दन्त केली (स्त्री0):– जबड़े पर मारी जाने वाली दाँत तोड़ ज़रब इस्तलाहन केली कहलाती है।
दो (पु0):– देखो दॉव।
दिवाल शमशीर (स्त्री0):– देखो पड़तला।
दवॉग (स्त्री0):– हिन्दी में घोड़े सवार सिपाही को कहते है और बनोट (सैफ़ बाज़ी) की इस्तलाह में ऐसे हरीफ़ को कहते है जो तलवार के साथ सिपर भी रखता और मुक़ाबले के वक़्त उसका इस्तेमाल करता है। बाज़ का कॉल है कि अंग से मुराद प्यादा और दवॉग से घोड़े पर सवार हो कर जंग करना है।
दो पेंचा (पु0):– बकैती के एक दॉव का नाम जिसमें हरीफ़ के पीदे आकर टॉग का अड़गा देते और घुटने के जोड़ पर घफटना मारकर गिराते और गर्दन पर छुरी का वार करते है। (करना)
दो धारा (पु0):– टॉग में लिपट कर हरीफ़ की गिरफ्त से निकलने और फिर उसकी कमर पर वार करने का दाव (करना)।
धज (पु0):– देखो ठाठ।
धज हनुमन्ति (पु0):– हनुमन्तियों का ठाठ।
डाल डाब (स्त्री0):– बग़ेर कब्जे की तलवार, तलवार का फल देखो फल।

ढ़ाड़ (स्त्री0):– डण्डे का इस्मे मुसगर सैफ़ बाज़ी की इसतलाह में बॉस की एक गज़ लम्बी लकड़ी को कहते है। जिससे मपतदियों को तलवार चलाने की मशक करायी जाती है। (पकड़ना,उठाना, मासा)
डेवढ़ा पैतरा (पु0):– पैतरा काटने का एक तरीका जिसमें एक कदम उठाकर दूसरा खिसका कर चलत की जाए तफसिल के लिए देखो पैतरा। (भरना, काटना)
ढ़ाल (स्त्री0):– फरी सिपर घेरा हरीफ़ के तलवार के वार से बचने की रोक या आड़ जो गिर्दे की शक्ल और आमतौर से बीच में से उभरी हुई सरपोशनुमा होती है। बाज़ में ऊपर के रुख़ वस्त में चार गमटीयॉ सी होती है इसको अहले फरिस शस्त आगे़ज़ कहते है।
ढ़लेत (पु0):– ढ़ाल रखने या लगाने वाला पहलवान।
ढोब (स्त्री0):– लत्ज़ ढ़ाल का दूसरा गवारुॅ तल्लफुज़ देखो ढ़ाल।
रजेटा/रझेटा (पु0):– सैफ़ बाज़ी की इस्तलाह मुराद हरीफ़ की ज़रब को बचाकर जबाबा ज़रब लगाने को बढ़ना या पलट कर ज़बाबी ज़रब लगाने का अमल इस इस्तलाह के मुतालिक़ बताने वाले ने ये बतलाया कि ये लत्ज़ अरबी लत्ज़ रजत का बिगाड़ा हुआ तल्लफुज़ है।
राग (पु0):– आहनी मोजा जो पूरी पिण्डलियों और घुटने को ढके रहे।
रावत/रावन्त (पु0):– मुर्दे शमशीर जन्त सैफ़ बाज़ी का माहिर उस्ताद।
रावन्ती (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ी शमशीर ज़नी अहले हनूत की इस्तलाह देखो हनुवन्ती।
रन सिगहार (स्त्री0):– हरीफ़ के जिस्म पर मुख़तलिफ़ हिस्सो पर पी दर पी लगाई जाने वाली तलवार की बाहर जर्बी एक घाई का इस्तलाही नाम जिसमे हर जर्ब पर जबाबी ज़र्ब लगायी जाती है।
रोक (स्त्री0):– हरीफ़ की ज़रब का बचाव पैतरे या दॉव से जिसका तोड़ हटकर किया जाता है।
रुमाली कसरत (स्त्री0):– सिर्फ रुमाली की मदद से हरीफ़ की ज़र्ब से बचने का फल इस्तलाहन रुमाली की कसरत कहलाती है। कहते है बाद उसतादाने फ़न चलने और दॉव करने में ऐसे बाकमाल हो गुज़रे है कि सिर्फ रुमाल की आड़ से हरीफ़ की ज़रब का तोड़ कर देते थे।
ज़नवा (पु0):– मुक़ाबले के वक़्त हरीफ़ के करीब हो जाने या भिड़ जाने की हालत में दायॉ घुटना टेक कर खड़े होने और वार करने का ढ़ग। (करना)

ज़िरा (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ी के मुक़ाबले के वक़्त पहलवानों के पहनने का आहनी कड़ियों का बना हुआ नीम आस्तीन कुर्ता।
ज़ंजीरा (पु0):– घाई सैफ़ बाज़ी की इस्तलाह मुराद हरीफ़ से मुकाबले के वक़्त तलवार की ज़र्रो सिलसिले वार दौर हरीफ़ पर कारी और भरपूर ज़र्ब लगाने के तरीकों के ऐतवार से उस्तादानें फ़न ने ज़ंजीरे के मुख़तलिफ़ इस्तलाही नाम रख लिये है।
ज़ंजीरा ज़रबुल जुदाल (पु0):– देखो ज़ंजीरा मुकाबले के इस तरीके में हरीफ़ को एक तरफ ज़रब दिखाई और दूसरी सुकाई और तीसरी तरफ लगाई जाती है। इस सूरत से वार की रोक बहुत मुशकील होती है बल्कि नही होती है।
ज़ंजीरा ज़रबुल शदीद (पु0):– इस तरीके मुकाबले में एक ज़रब दिखाकर दूसरी लगाई जाती है। यानि हरीफ़ को धोखा दिया जाता है।
ज़ज़ीरा ज़रबुल तेक़ाल (पु0):– बारह ज़र्बो की घाई जिसमें हरीफ़ की हर ज़रब को खाली देकर जबाबी ज़रब लगायी जाती है। दोनो हरीफ़ मुसलसल यही अमल जारी रखते है यहाँ तक की उनमे से कोई एक मग़लूब हो जाए या दोनो थक जाए।
ज़ंजीरा ज़फर पैकर (पु0):– देखो ज़ंजीरा फतेह नसीब।
ज़ंजीरा फतेह नसीब (पु0):– ज़जीरा ज़फर पैकर सैफ़ बाज़ी में हरीफ़ से मुक़ाबले का तरीका जिसमें एक वार में तीन ज़र्बे लगायी जाती है जिनके जबाब में म
मुख़तलिफ़ दो जबाबी ज़र्बे लगाता है।
ज़ंगाला (पु0):– जंगली दौर ख़ातबर जिसका एक रुख़ चपटा तथा दूसरा नुकीला होता है। देखो तब्र ज़ानूल
साम बरन (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ी की एक घाई का नाम देखो खाई।
सॉग (पु0):– सन्टा, सेलड़ा मुराद नेज़े या बर्छे की छड़।
सिपटी (स्त्री0):– लत्ज़ सक्ती का ग़लत तल्लफुज़ देखो सक्ती और तेग़।
सिपर (स्त्री0):– देखो ढाल इसतलाहन कमाई और कोहनी की ज़र्ब को भी कहते है।
सरोही (स्त्री0):– असील तलवार सैफ़ सीधी तलवार देखो तलवार।
सक्ती (स्त्री0):– सपटी संस्कृत शका बमायनी दोधारी सीधी तलवार। हिनदुओं में महादेव के नाम से मनसूब की जाती है देखो लत्ज़ छिपटी/जिल्द सोम।

सुल्तानी (स्त्री0):– फ़न बॉक की इस्तलाह मुराद ख़ंज़रनुमा छोटी छुरी एक दॉव का नाम।
सलंग (स्त्री0):– सॉप की चाल की व्रजए का पैतरा जिसमे कदम उठाने के बजाए खिसकाए जाते है और जिस्म को एक हालत में रखकर पैर रगड़ते हुए फरत की जाती है। (चलना)
सुलहत ढ़ाल (स्त्री0):– गेड़े की खाल या कछुए की पुश्त की ढ़ाल।
सनान (स्त्री0):– देखवानी
सन्टा (पु0):– 1– सेलड़ बग़ैर फल का तीर तुका।
2– नेज़े या बर्छे की छड़। तफसील के लिए देखो पाठ –5 लत्ज़ सानटा।
संग़ीन (स्त्री0):– तय धारी, साधी और नोकदार छुरी।
सोसन (स्त्री0):– देखो तेग़ और सपटी।
सोनत (स्त्री0):– देखो खींच जो गहरी काअ के लिए की जाए।
सैफ़ (स्त्री0):– देखो सरोइ।
सैफ़ बाज़ी (स्त्री0):– फैकटी, तलवार चलाने का करतब या तलवार की जंग।
सैलड़ा (पु0):– देखो सन्टा।
शशबर (पु0):– गुलाब की कली की शक्ल का बुर्ज़ जिसके मुँह पर पत्तियों की वजए के छः ख़ार या फल होते है।
शस्तआवेज़ (स्त्री0):– देखो ढ़ाल।
शफ़्ते (स्त्री0):– फ़न बॉक की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के होठों की ज़रब (मारना)।
शलक (स्त्री0):– कमची पतली छड़ बन्नोट की इस्तलाह में बाजत्र की पतली छड़ की गज सक गज लम्बी लकड़ी को कहते है जिसमें मपदियों को सैफ़ बाज़ी की मशक करायी जाती है। देखो ढ़ड़ (उड़ाना, लगाना, मारना)।
शमशीर (स्त्री0):– कटार शेर के नाखून की शक्ल की तलवार।
शेर पैकर (पु0):– शेर के जस्त करने की वजअ का ठाठ देखो धज।
शेर ज़द (स्त्री0):– फ़न बॉक की एक ज़रब का नाम जिसमें हरीफ़ को अड़गा मार कर गिराया और झपटकर सीने पर वार किया जाता है। (करना)
सादक़ी (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ी की इसतलाह मुराद बग़ैर सीनों की कमर तक लम्बी जिरह।
ज़रब हैदरी (स्त्री0):– तलवार को सर के गिर्द घुमाकर पूरी ताकत से हरीफ़ पर ज़रब लगाने का तरीका ये ज़रब पहर होता है। पहली गर्दिश में ऊपर के धड़ पर

और दूसरी गर्दिश में नीचे के धड़ पर लगायी जाती है। खसूसन दुश्मनो के घेरे में आ जाने के मौके पर फरत के साथ मुसलसल ज़र्बो का दौर कायम कर लिया जाता है। (मारना)

तमाचा (पु0):– देखो घाई।

ज़फर पैकर (पु0):– बिन ओट (सैफ़ बाज़ी) एक ठाठ का नाम देखो ठाठ और अली मदद हज फिकरा – 2

इल्म (पु0):– सैफ़ बाज़ी के आखाड़े का निशान का झण्डा।

अली मदद हज (पु0):– सैफ़ बाज़ी के एक ठाठ का नाम जिसमें हरीफ़ के सामने ऐसे पैतरे से खड़े होते है कि सैफ़ बाज़ का जिसम लत्ज़ अली की शक्त के बिना मालूम होता है और यही इस धज की वजअ तसमियाँ है। इस ठाठ पर मुकाबला करने वाले इसतलाहन अली मदिए (अलिमदे) कहलाते है।

बाद उस्ताद इस ठाठ को जफर पैकर कहते है और उसके मुख़तलिफ़ नाम और तरीके मुर्कर्रर किये है।

ग़ब मब (स्त्री0):– ठोड़ी और हलक के दरमियानी की ज़रब का इस्तलाही नाम।

फिराख़ दामन ढ़ाल (स्त्री0):– साधी कोर या किनारे की ढ़ाल देखो ढ़ाल।

फ़िरहंग (स्त्री0):– बिन्नोट बाज़ी की ख़ास इस्तलाहन ठाठ (धज) जिसमें सैफ़ बाज़ दोनो हाथों में तलवारे लेकर पैतरे से चौमुखी ज़र्बे लगाता हुआ चक्कर काटता है। (चलना)

फिन्दक (स्त्री0):– हाथ की उॅगलियों की ज़रब का इसतलाही नाम (मारना)।

कब्ज़ा (पु0):– तलवार वग़ैरह का दस्ता देखो तलवार।

करौली (स्त्री0):– बडे किसम दुरी या चाकू।

कशक़ा (पु0):– खुद का हिस्सा जो माथे को दुपाए रहता है सैफ़ बाज़ी की इसतलाह में कशका कहलाता है।

क़मची का रद्द (पु0):– देखो गुपती गतका।

कोरख़ाना (पु0):– कोर (तरकी) बमानी असलहा देखो असलहाखाना।

काट (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ी की इस्तलाह मुराद तलवार की धार या बाढ़ मिसाल के तैर पर इसफ़िहानी तलवार की काट बहुत उम्दा होता है।

कारी ज़रब (स्त्री0):– तलवार वगैरह की ऐसी मोअस्सर ज़रब जिसमें हरीफ़ जाबर न हो सकें। मिशाल के तौर पर शेर की गर्दन पर ऐसी कारी ज़रब लगी की उठ न सका।

काटॉ (पु0):– हरीफ़ को पकड़ कर रानों के बीच गॉठ लेने का दॉव (करना)।
कट (स्त्री0):– सैफ़ बाज़ी कह इस्तलाह मुराद कमर की जरब जो हरीफ़ के दायें जानिब बगल के नीचे लगायी जाए (मारना)।
कटार (स्त्री0):– देखो शमशीर।
कटोरी (स्त्री0):– तलवार के कब्जे की निचले सिरे की कटोरी की शक्ल बनी हुई आड़ देखो तलवार।
किर्च (स्त्री0):– देखो संगीन दो तिहाई साधी तलवार।
कड़क (स्त्री0):– पिण्डली के नीचे जोड़ यानि टखने के ऊपर की ज़रब (मारना) नीचे धड़ की ज़रब।
कड़ केत (पु0):– मुकाबले के वक्त पहलवानों को जोश दिलाने वाला शख़्स।
कुकरी (स्त्री0):– दॉव (दो) की शक्ल का गोराखियों और नेपालियों का कौमी हथियार जिसका दस्ता छोटा और फल दरमियान से चौड़ा और सिरे पर नोकदार होता है देखो दॉव।
कमरी पेंच (पु0):– फ़न बकैती का एक दॉव जिसमे हरीफ़ की गिरफ्त से निकलने के लिए उसकी कमर के गिर्त घुमकर उसके हाथ में पेंच डालकर अपना हाथ घुमाते ओर फिर वार करते है। (करना)
कुमकी (पु0):– हमले के दौरान में मदद देने वाला गिरोह या पहलवान।
कमन्द (स्त्री0):– हरीफ़ पर फेकने का फन्दा जिससे उसको फॉसना मक़सूस होता है। (डालना)
कंठमाला (स्त्री0):– जबड़े के नीचे गर्दन के सिर पर मारी जाने वाली ज़रब।
कन्टर सवा (पु0):– बर्छे की किस्म का हथियार जिसमें ऊपर की तरफ एक लम्बा फल और नीचे दस्ते के करीब दोनों बगलियों में ख़ार पंख होते है जो ज़रब के घाव को चौड़ा कर देते है।
कोठी (स्त्री0):– सिर से घुटने तक कि ज़र्रे का इस्तलाही नाम जिसमें खुद शरीक रहता है।
कोहनी तोड़ (स्त्री0):– हरीफ़ की कोहनी पर जबाबी ज़रब का इस्तलाही नाम।
खाड़ा और खान्टरा (पु0):– खोरा किर्च सैफ़ सीधी दो दमा तलवार या तेग़।
कहावत :– 1– तुलसी रन मु जुझना, घड़ी एक का नाम नित उठ मन से जुझना बन खान्ड संगराम।
2– भैंट के जानवर की गर्दन उड़ाने की तलवार।

खत्ती (स्त्री0):– तलवार के घाट के कब्ज़े के करीब का हिस्सा जिसपर धार नहीं होती देखो तलवार।
खड़ी पालत (स्त्री0):– घुटने से टखेन तक तलवार की साधी ज़रब का इस्तलाही नाम देखो पालत।
खोरा बंगाली (पु0):– देखो खाड़ा फिकरा– 2
खुला ज़फर पैकर (पु0):– देखो ज़फर पैकर इस धज में चलत पूरी और तेजत्र होती है।
खोक (स्त्री0):– शाने से कुल्हों तक पूरी कमर को ढ़ाल की तरह ढ़क लैन वाली आहनी पोशश।
गाछा (पु0):– लत्ज़ गुन्ज का इसतलाही तल्लफुज़ मुराद तलवार या लकड़ी के दस्ते का सिरा जो मुट्टी की गिरफ्त से बाहर निकला रहे देखो गुन्ज जिल्द।
गावमुख धज (पु0):– सैफ़ बाज़ी के एक ठाठ का नाम जिसमे हरीफ़ के सामने ख़मीदा कमर होकर सर और सिने को सिपर की आड़ में किसी कदर आगे की तरफ बढ़ाकर खड़े होते है और हरीफ़ पर ज़रब लगाते वक्त घुटना टेक देते है और इसी तरह हरीफ़ की ज़रब को खाली देते है।
गुप्ती (स्त्री0):– कमछी का रद्द गतका हाथ की लकड़ी में पोशीदा तलवार।
गुतका (पु0):– सन्टी गुप्ती संस्कृत गदा का गमायनी ढ़ाड़।
गजम/गजीम (स्त्री0):– तर्की लत्ज़ गजेन बमायनी पारवर हिन्दी मुराद घोड़े के चेहरे और गर्दन पर डालने की एक किस्म की ज़रेह।
उडतक गजम (पु0):– गुर्ज़ लवा बन्द हरीफ़ पर ज़रब लगाने का मकदर और इसी किस्म की बाज़ दूसरी सूरतो का बना हुआ आहनी हथियार या मूसल।
गोकरू (पु0):– तय हुए आहनी काँटे जो हरीफ़ की रोक के लिए मैदान में बिछा दिये जाए।
गुहार (पु0):– फन बिनौटा का एक मख़लूत पैतरा जिसमें सिलन्ग चौमुख और ज़रब हैदी की चलत शरीक होता है देखो सलंग चौमुखा और ज़रब हैदी।
घात (स्त्री0):– हरीफ़ पर ज़रब लगाने के लिए अपनी हिफ़ाजत्रत के साथ मौका और रुख़ की तलाश (करना, लगाना)।
घाट (पु0):– तलवार खंजर की बाढ़ वाला रुख़। धार की लाप देखो तलवार।
घाई (स्त्री0):– हरीफ़ पर तलवार या लकड़ी से सिलसिले वार मुर्कररा ज़रबे लगाने के मजमूऍ का इस्तलाही नाम।

ज़र्बो की तादाद और वार करने और बचेन की नौइयत के एतवार से उस्तादआने फ़न ने घाइयों के मुख़तलिफ़ नाम रख लिए है तीन ज़र्बो से बारह ज़र्बो तक की एक घाई होती है।

घेरा (पु0):– देखो ढ़ाल छोटी किस्म की सिपर।

लाठी (स्त्री0):– लठ का इस्मे मुसग़र देखो बाड़ी।

कहावतः– ''लाठी में गुन बहुत है, सदा रखे संग गहरी नदी नारा जहाँ तहाँ बचावत अंग तहा बचावत अंग झपेट कुत्ते को मोर दुश्मन दो अगीर होते हो को झाड़े कहे गिरधर कबिराऐ बात बॉधु ये गाठी सब हथियार को छोड़ हाथ में रखो लाठी '' का इस्मेमुकबर देखो लाठी और बाड़ी।

लठेत/लठेती (पु0):– लठ से दुश्मन का मुकाबला करने वाला फनदार, लठ बाज़ी का फ़न।

लच्छा (पु0):– छूट देखो छूट फिकरा– 2 फ़न बनोट की इस्तलाह मुराद हरीफ़ पर एकही वार में दोहरी और तिहरी मुसलसल और मुत्तवातिर ज़र्बे लगाने का तरीका जिसमें हरीफ़ सिर्फ बचाव करता या दॉव करता है।

लच्छा छूट इकअंग (पु0):– बग़ैर सिपर के सिर्फ तलवार से मुकाबला करने का तरीका देखो लच्छा और छूट।

लकटी (स्त्री0):– तेल पिलाकर और मसाले लगाकर तैयार की हुई लाठी।

लोह बन्द लठ (पु0):– ऐसा लठ जिसकी सिरों पर लोहे के लट्टू चढ़े हुए ओर पोरों पर तार की बन्दिश की हुई हो।

लेज़म (पु0):– देखो झॉज फ़नदार लेज़म को पाना भी कहते है।

मिर्चुवा (पु0):– तीन ज़र्बो की घाई का नाम जिसमें दायें बायें कमर (कट) और सर की जर्बे एक दूसरे के जवाब में लगायी जाती है और बोलूॅ में कमर जवाब कट कट जवाब कमर सर आखिर कहते है देखो घाई।

मिरधा (पु0):– सिपाहियों का अफसर मुतालिका नायक जमादार।

मारका आरा (पु0):– बारह ज़र्बो की घाई का नाम जो जो हस्बे जेर नामों से मौसूम की जाती है।

1– तमाचा 2– कडक 3– कनपटी 4– पालत 5– मोड़ा 6– कमर 7– कट 8– सर

9– उल्टा सर 10– होल 11– सर 12– गिरेबॉ देखो घाई।

म्यॉन (स्त्री0):– तलवार का ख़ाना जो लोहे या लकड़ी का खोल की शक्ल बनाया जाता है। देखो तलवार
नथनी (स्त्री0):– तलवार लटकाने को कब्ज़े में लगी हुई कड़ी देखो तलवार।
नीलो मारना (स्त्री0):– बेलॉग और भरपूर ज़रब का जवाब और तोड़ न हो सके (मारना)।
नमाज़ बन्द (पु0):– बॉक की एक दॉव का नाम जिसमें घुटने की ज़र्ब से हरीफ़ को गिराकर ज़र्ब लगायी जाती है।
नेज़ा (पु0):– सन्टा, सेलड़ॉ देखो बर्छा और भाला नीचे पालत पैर के टॅखने के ऊपर का हिस्सा जिसपर ज़रब लगायी जाती है। (मारना, लगाना)
हाथ दिखाना (क्रिया):– सैफ़ बाज़ी के करतब का मुज़ाहिरा करना तलवार से ज़रब लगाने का ढ़ग बताना।
हाथ मारना (क्रिया):– तलवार की ज़रब लगाना।
हत कठी/हथकटी (स्त्री0):– हरीफ़ की कलाइ तलवार का वार जो उसकी ज़रब को खाली देकर दिया जाता है। (मारना)
हिक्का (पु0):– मुकाबले के वक्त हरीफ़ के किसी अजु या हथियार को टकोहा मारने का अमल जिससे उसकी गिरफ्त ाको सदमा पहुॅचे (देना, लगाना, मारना)।
हनुवन्ति (स्त्री0):– देखो दावती अहले हनूत सैफ़ बाज़ी के फ़न के राग के नाम से रावन्ती और हनुमान के नाम से हनुवन्ति मौसुम कहते है।
होल (स्त्री0):– संस्कृत सहुला बमायनी चुभूटा टहूका का देना सैफ़ बाज़ों की इस्तलाह में हरीफ़ के किस्म में तलवार की नोक से घाव डालने का अमल तलवार को बर्छे की तरह मारने का तरीका मारना।
होल गॉजे का पेतरा (पु0):– देखो गाजा व होल का मुक़ाबले के वक्त कौस की शक्ल में फिरत जिसमें दायें बायें ज़रब लगाते हुए हस्बे मौका वार या बचाव करने के लिए चढ़ाव या उतार होता रहता है।
यकिंग (पु0):– देखो इकिंग।

<u>3 पेशा तीर अंदाजी व गुलेल बाज़ी :–</u>
बर्छीला तीर (पु0):– बछे की शक्ल की अनी का तीर देखो बर्छा देखो बर्छा।

बैराम मुश्त पकड़ (स्त्री0):– कमान की गिरफ्त का एक तरीका जिसमें कलाई किसी कद्र ख़मी ख़मीखर रखी जाती है और तीर उूगलियों से कब्जे को पकड़ा जाता उॅगलियॉ कब्जे के अन्दर के रुख़ और हथेली बाहर के रुख़ रहती है।
पटख़ना/पटख़ाना (पु0):– देखो तरकना।
परा (पु0):– तीर के फल का बगली ख़ार जो जवानी के पहलुओं में परों के मान्निद खुले हुये बने होते है देखो फल।
परीला तीर (पु0):– ख़ारदारअनी का तीर जो जिस्म में घुसकर अठक जाए और बग़ैर गोश्त कॉटे न निकाला जाए देखो परा और फल।
पैकान (पु0):– तीर का फल।
फल (पु0):– पैकान तीर की आहनी अनी नोकदार कोन कीला (जाग़नोल) ख़ारदार को परीला और बर्छे की शक्ल वाले को बर्छिला फल कहा जाता है।
तरकश (पु0):– तीर रखने का ख़ाना।
तरकना (पु0):– पटख़ना (पटख़ाना) फारसी में शस्त और चिल्ला कहलाता है देखो चिल्ला।
तड़प (स्त्री0):– छूट, लपक, कमान की कुव्वत दफ़ा यानि कशिश से छुटकर सिरों की असली हालत पर लौटने की कुव्वत।
उदाहरणः– ये कमान तड़प की अच्छी है।
तुक्का (पु0):– तीर लैस मशक करने का तीर वग़ैर फल का तीर।
कहावतः– ''लग गया तीर नही तो तुक्का''
तीर (पु0):– नेज़ा जो कमानी की कुव्वत दफ़ा के जरिए फेकर हरीफ़ पर मारा जाए या हरीफ़ की तरफ फेका जाए। नेज़े का आहनी फल पैकान और पछला सुरासुफ़ार कहलाता है। देखो कमान
तीर लैस (पु0):– देखो तुक्का।
टॉक/टनक (पु0):– 1– तीर अन्दाजी की इस्तलाह मुराद कमान की कुव्वत तड़प जो उसकी मार की दूरी और कुव्वत के अन्दाजो के लिए बोली जाती है।
2– कमान की कुव्वत का जॉच करने का आम तरीका एक है कि उसके चिल्ले में एक मुअइय्यन वज़न लटका दिया जाता है। अगर वज़न से कमान के सिरे मरकज़ की तरफ झुक आए तो कमान कमजोर तड़प की समझी जाती है।

3– मामूली कमान के लिए पॉच सेर का वज़न ओर मख़सुस कमान के लिए पच्चीस सेर तक वज़न उसकी जॉच का मिआर समझा जाता है ओा यकटॉक कमान वग़ैरह कहा जाता है।
उदाहरण– ये कमान कमजोर टनक की है।
लप्पा (पु0):– तीर या गोली की मार की हद जहाँ वो ताकर गिरे।
चक्कस (पु0):– कब्जा कमान के बीच में तीर अन्दाज की गिरफ्त को बनी हुई जगह देखो गुलेल।
चिल्ला (पु0):– ज़िह तरख़ना पटख़ना कमान के सिरो की तान जो आमतौर से तॉत की होते है। जिसके जरिए के सिरो को तड़पाया और तीर या गुल्ला चलाया जाता है। (चड़ाना, उतारना)
पतगुल बाज़ (पु0):– कमान का इस्तेमाल करते वक्त तीर अन्दाज की एक ख़ास गिरफ्त का इस्तलाही नाम जो सिर्फ तीन उॅगलियों से होती है।
वरंग (पु0):– हदफ़, ख़ाक तोदा, तीर या बन्दुक की गोली का निशाना गाह।
छाप (पु0):– गुलेल बनाने का एक किस्म का उम्दा बॉस।
छूट (पु0):– देखो तड़प।
ख़ाक तूदा (पु0):– हदफ़ चोरंग, मिट्टी का ऊॅचा ढ़ेर जो बतौर हदफ़ या चोरंग इस्तेमाल किया जाए।
धन (स्त्री0):– हिन्दुओं के देवता की कमानों में से एक कमान का नाम।
ढ़ेकली (स्त्री0):– मंजनीख़ भारी पत्थर को दूर फेकने की कला।
ढ़ेलमास/ढ़ेलवास (पु0):– देखो गोफिया।
ज़ाग़ नोलअनी (पु0):– तीर का नेज़े की शक्ल का नुकीला फल देखो तब्र ज़ाग़ नोल।
ज़ेह (स्त्री0):– देखो चिल्ला कमान के सिरे।
सोफ़ार (पु0):– देखो तीर का पिछला सिरा 2– बग़ैर फल का तीर छड़ तुक्का।
शस्त (स्त्री0):– देखो तरकना।
शेर धान गिरफ्त (स्त्री0):– देखो बहराम मुश्त पकड़, बहराम मुश्त ठाठ पर पल्ला ज्यादा हो (करना)।
गिर्द मुश्त पकड़ (स्त्री0):– कमान की गिरफ्त का एक तरीका जिसमें उॅगलियों से कब्जे को मजबूत पकड़ते है और ऊपर अॅगूठा रखते है। देखो कमान
गिर्दा और गिर्दा कमान (पु0):– कमान की लकड़ी या बॉस।

गिरह कुशा (पु0):– रॉग काला एक ख़ास किस्म का परेला तीर देखो परेला तीर।
गोशा (पु0):– कमान के सिरों का ख़ाचा जिसमें तानत अटकायी या बॉधी जाती है। कमान का सिर।
घुन्नु तीर (पु0):– देखो फ़लाख़न।
लन्गी (स्त्री0):– गुल्ला या ढ़ीला मारने या फेकने के चमटे के शक्ल की खपच्ची देखो गुलेल।
मनजीनीख़ (स्त्री0):– देखो ढ़ेकली।
नावक (पु0):– तेज और बारीक अन्नी का छोटा नेज़।
नक़शकमान(स्त्री0):– खुशनुमा कमान बरख़िलाफ़ उस कमान के जो दोहरी शक्ल की कब्जे पर से दो हिस्सो में अलहैदा मालूम होती है (देखो कमान)।
हदफ (पु0):– देखो चौरंग।
यक वक कमान (स्त्री0):– देखो टॉक (टनक) फिकरा – 3
पेशा अतिशबाज़ी:–
अतिशबाज़ (पु0):– अतिशबाज़ी बनाने वाला माहिरेफन देखो अतिशबाज़ी।
अतिशबाज़ी (स्त्री0):– उर्दू बोलचाल और इस्तलाही आम में बारुद के तफरीही मुशगित्रल को अतिशबाज़ी कहा जाता है। उसके बनाने वालो ने मुख़तलिफ़ वज़न की बारुद में पुटास और लोह चूॅ का जुज़ बड़ा कर तरह तरह के अतिशे गुल बुटे और बाज़ दूसरी चीज़ तमाशा दिखाने को इजात की जो इसमें तासगी है उनका मुज़ाहिरा शादी ब्याह और दूसरी खुशी की तकरीबो में किया जाने लगा है। अतिशबाज़ी की इजात दर हकत्रीकत जंगी जरुरियात से हुई और वही उसका मौका इस्तेमाल था मग़र फ़ने जंग की तरक्की से ये इजात तफ़रीह मशगला बन कर रह गयी। अमरीका जापान और यूरोप वालो ने इसमें अजीब अजीब जिददत्ते पेदा की है (छोड़ना, चलाना) अतिशबाज़ी का मुजाहिरा करना।
अतिशी अनार (पु0):– अनार की शक्ल के जर्फ में बारुद भरकर तैयार की हुई अतिशबाज़ी और यही उसकी वजअ तसमिया है। आम बोलचाल में सिर्फ अनार कहते है। कारीगरों ने इसकी बारुद में मुख़तलिफ़ किस्म के लोह चून और पटास के अजज़ा मिलाकर उसके जलने में मुख़तलिफ़ कैफियते पैदा की है और उनकी मुनासिबत से अलौहिदा अलौहिदा नाम रख लिए है।

जब अनार की बारुद को आग लगायी जाती है तो आम का एक पौधा बन जाता है जो बारुद की मिकदार ओर वज़न के लिहाज से छोटा बड़ा और जोरदार

या कमजोर होता है। जंग के मौके पर हरीफ़ के हॉ आग लगाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।
अतिशी परकाला (पु0):– देखो शताबा।
अतिशी क़लम (स्त्री0):– देखो चहका।
आफ़ताबी (स्त्री0):– देखो चन्द्रमुखी फिकरा –2
उडन अनार (पु0):– हवाई अतिशी अनार की एक किस्म जो पुटास के मुरक्कब से कुटवत की हद तक हवा में उड़ा चला जाता है। देखो अतिशी अनार फिकरा –2
उड़न पटाख़ा (पु0):– एक किस्म का तेज किस्म का सूस बन्द पटाखा जो शताब लगाते ही कुव्वत से हवा में उड़ जाता और ऊपर जाकर फटता है।
उड़न गोला (पु0):– अग्न गोला, उड़न पटाखे की किस्म की अतिशबाज़ी देखो उड़न पटाखा जंगी तरुरत के लिए इस किस्म के गोले में लोहे टुकड़े और बाज़ दीगरज़रर रीसा चीज भर दी जाती है जो गोले फटते वक्त बिखर कर जिस चीज पर लगती है उसको नुकसान पहॅूचाती है। नुमाइस के लिए गोले के अन्दर सुर्ख और सब्ज़ पोटास की गोलियॉ रख दी जाती है। जो गोले फटते वक्त खिलकर सुर्ख सब्ज़ फुलो की शक्ल फिजा में बिखर जाती है इस मंजर की वजअ इस किस्म के गोले अतिशबाज़ों की इस्तलाह में तारा मण्डल कहा जाता है। ओर छत्ता हवाई और डड़न गोला इफ्त रंग भी कहते है।
अग्नबान/अग्निबान (पु0):– खुदन्गा वो तीर जिसमें पैकान की जगह अग्नि गोला लगाकर दुश्मन की तरफ चलाया जाए।
अग्न बजरा (पु0):– अतिशबाज़ी की बनाइ हुई नॉव जो किसी खुशी की तकरीब पर पानी पर तैराकर बहरी जंग का ऩाजारा दिखाने को तफ़रीह के लिए चलायी जाती हैं।
अग्न बरेटी/अक्न बैंटी (स्त्री0):– ऐसी सलाह जिसकके सिरों पर भड़कते हुए आतिशी गोले हो जिसको घुमाकर दुश्मन की सफ़ों को तोड़ा और उसकी भीड़ को तत्तर बित्तर किया जा सकें।
अग्न पंख (पु0):– देखो अग्न चर्ख़।
अग्नतांत्वॉ (पु0):– देखो चर्ख़।
अग्नचादर (स्त्री0):– फास्फोरस के मसाले से बनाई हुई एक किस्म की चादर की शकल की अतिशबाज़ी जो अन्धेरे में सुनहरी चादर की तरह चमकती है। इसमें बाज़ का मसाला सफेदी मइिल रंग का बनाया जाता है। इसकी चमक नकसी

होती है और दूर से आतिशी चादर मालूम होती है जिससे दूश्मन को धोखा होता है।

अग्न चरख़ (पु0):– अग्नपंख, अग्नतात्वॉ चॉख या चक्कर के शक्ल की बनाई हुई आतिशबाज़ी जिसके दौर पर बॉस की बोरियॉ (नलवें) तेज किस्म की बारुद भर कर बॉधी और सताबा के जरिए बाहम मिला दी जाती है जब इसमें आग लगायी जाती है तो बारुद की उड़ान से चक्कर को कीले पर घुमने लगता है। बारुद के नलवों की तादाद के लिहाज से आतिशबाज़ों में चरख़ इस्तलाही नाम रख लिए है जैसे चौगोला, छमास, मौजदरियॉ, जुगनू नौचन्दा वग़ैरह। छोटे किस्म के चरख़ को चरर्खी या पंख कहते है।

अग्नचक्कर (पु0):– हल्के की शक्ल की तेज बारुद की बनी हुई अतिशबाज़ी जो आग लगाने पर फिक्री की तरह जमीन पर चक्कर खाती है। आम बोलचाल में सिर्फ चक्कर कहते है।

अग्नछड़ी (स्त्री0):– बारुद की बनायी हुई छड़।

अग्न गोला (पु0):– तेज बारुद का बनाया हुआ गोला जोआग लगाने पर शोला निकलता हुआ ऊपर उड़ जाता है और मिक़दार के मुआफिक बुलन्दी पर पहॅुच कर □ता और बिखर जाता है। देखो उड़न गोला फिकरा न0 2 आम बोलचाल में गोला या तारमण्डल कहलाता है।

अग्नहिनडोला (पु0):– अग्न चर्ख़ की किस्म की आतिशबाज़ी जो हिन्डोले की शक्ल बनायी जातीी है और यही उसकी वजअ तसमियॉ है। देखो हिन्डोला ओर अम्न चर्ख़।

बारुद (स्त्री0):– दारू अतिशबाज़ी का मसाला शोरा गन्धक और कोटाले का मरक्कब उनका तनासुब हस्बे जरुरत होता है और दूसरे अजज़ा मिलाकर मुख़तलिफ किस्म की बनायी जाती है पटास और शक्कर के मरक्कब से भी तैयार की जाती है।

पटाख़ा (पु0):– फटाका, फट जाने या फटकर बिखर जाने वाली अतिशबाजी यानि जिसके फटने में जोर की आवाज हो। मुख़तलिफ़ किस्म के छोटे बड़े पटाखे बनाये जाते है जो बारुद की मिक़दार और तेजी के लिहाज से फटते और आवाज देते है। उस्तादाने फन ने कई कई आवाजों और मुख़तलिफ़ किस्म के पटाख़े इजाजत किये है। अग्न गोला या उड़न गोला भी उन्ही की एक किस्म का नाम है। इस किस्म के तमाम पटाख़े आग लगाने से छूटते है इनके अलावा पटास और

मन्सल के मरक्कब से भी पटाख़े और गोले बनाये जाते है जो रिगड़ या किसी चीज से टकरा कर भड़क उठते और फट जाते है इसलिए बहुत ख़तरनाक होते है।

पैक (स्त्री0):– बारुद का गुल शोरे या गंधक का जला हुआ कोयला या मददा आतिशबाज़ों की इस्तलाह में फुलझड़ी या महताबी की बारुद के लजे हुए माददे को कहते है।

फटाका (पु0):– देखो पटाका, पटास का गोला रिगड़ या टक्कर से फटने वाला गोला।

फुलझड़ी (स्त्री0):– 1– आतिशबाज़ों की इस्तलाह मुराद लौह चून की बनी हुई क़लम की शक्ल की आतिशबाज़ी जिसको चलाने से लोहे के ज़रराद जल कर खिलते ओर सितारों की शक्ल चारों तरफ बिखरते है। (छूटना, छोड़ना)
लोह चोन की मिख़दार और उसकी किस्म के लिहाज़ फुलझड़ी के चलने में जो कैफियत पैदा होती है उससे कारीगरों ने उसके मुख़तलिफ़ नाम रख लिए है। जैसेः– मोतिया, गुठिया, तोड़ेदार या किरनदार फुलझड़ी वग़ैरह।

तारामण्डल (पु0):– देखो उड़नगोला फिकरा न0–2

ठेक/ठेकी (पु0):– आतिशबाज़ी के ज़र्फ़ या नलवें के पैदे के सुराख़ को बन्द करने की डाटर (लगाना, निकालना)।

चटापटी (स्त्री0):– पटाख़े की एक किस्म जो बारुद की मिक़दार के लेहाज़ से चिंगारी की तरह उड़ता और चटख़ता रहें। जंग के मौके पर हथियारों को डराकर भगाने के लिए इस्तेमाल की जाती थी।

चक्कर (पु0):– चहैक की किस्म की आतिशबाज़ी जो हल्के नुमा बनायी जाती है (देखो फतंगा)।

चन्द्रमुखी (स्त्री0):– महताबी आतिशबाज़ी की एक किस्म जो किसी चीज पर रोशनी डालने या रोशनी करने के लिए इस्तेमाल की जाए।

इसकी दो किस्मे होती है ज्याद चमकीली और सफेद रोशनी वाली को सूरज मुख़ी आफताबी और धीमी रोशनी वाली को चन्द्रमुख़ी महताबी कहते है।

चहका (पु0):– छछूंदर आतिश क़लम एक किस्त की आतिशबाज़ी जो बहुत तेज बारुद से कलम की शक्ल की बनायी जाती है। आग लगाने पर तड़पती हुई ओर लोटती हुई निहायत तेजी से जमीन पर इधर उधर दौड़ती हुई हर तरफ आग लगाती फिरती है।

इस सीफ्त की वजह से आतिशबाज़ों की इस्तलाह में छछूदर चूहे की किस्म का (चुलबुला जापवर) कहलाती है। तमासे के छोटी और जंगी जरुरत के लिए हस्बे जरुरत बड़ी बनायी जाती है देखो खुतंगा।

छत्ता हवाई (पु0):– उड़न गोला, हफ़्त रंग देखो उड़न गोला फिकरा –2

छछूंदर (स्त्री0):– आतिशबाज़ों की इस्तलाह मुराद चहका चहका फिकरा –2 देखो खुतंगा।

खुतंगा/त्रुदंगा (पु0):– अग्नि बॉन हवाई फ़ारसी लत्ज़ खुदग बमायनी छोटा तीर का इस्तलाही तल्लफुज़ एक ख़ास किस्म के आतिशबाज़ो जो तीर की शक्ल ठोटी और शताबा लगाने से तीर की तरह उड़ी चली जाती है। इसकी रफ़्तार ओर दूरी बारुद की तेजी और मिख़दार की लिहाज़ से होती है। जंग के मौके पर दुश्मन के इलाके में आग लगाने के लिए इस्तेमाल की जाती थी। (अग्निबाज़)

ख़ोल (पु0):– फुलझड़ी छछूदार (चहका) महताबी और खुतंगे के नलवे का इस्तलाही नाम।

दारद (स्त्री0):– देखो बारुद।

दफ्ती (स्त्री0):– मिलट, पुठ्ठा, मक़्वी मोटी किस्म का बनाया हुआ काग़ज जो बाज़ की ख़ास किस्म की आतिशबाज़ी का खोल बनाने के लिए तैयार किया गया है।

खुश नविसियों की मुश्क़ का पिठ्ठा मिसल बन्द जिल्द बॉधने का पठ्ठा।

दम (पु0):– सॉस आतिशबाज़ों की इस्तलाह मुराद आतिशबाज़ी का जोर या अम्ली कुत्वत।

उदाहरणः– कमजोर दम का चहका आग नही फैलाता।

उदाहरणः– कमजोर दम का अनार ऊपर नही उड़ता।

दमक चूँ (स्त्री0):– आतिशबाज़ों की इस्तलाह मुराद बारुद या फुलझड़ी में लोह चोन के ज़र्ररात के फटने की तड़प और चमक या तड़पती हुई चमक।

दो खड़ा पटाखा (पु0):– दो आवाज पटाखा जो एक आवाज जमीन पर और दूसरी आवाज ऊपर उड़के दे।

दी दीपक चून (पु0):– उमदा किस्म के पुराने लोहे का कालवा चून देखो लोह चून।

सॉस (पु0):– देखो दम।

सूरज मुखी (स्त्री0):– अफताबी देखो चन्द्रमुखी फिकरा –2

सिन्घाड़ियॉ पटाखा (पु0):– मुसलसनुमा बना हुआ पटाखा तस्वीर के लिए देखो खुन्तंगा।
शताबा (पु0):– आतिशीपरकाला बारुद चडा हुआ डोरा आतिशबाज़ तक या आतिशबाज़ी में आग दौड़ाने के तैयार किया गया है। ते किस्म की बारुद की बनी हुई आतिशबाज़ी को उनके जरिए आग लगाते है देखो खुतंगा।
गुबार (पु0):– देखो हवाई बुर्ज।
कैट (स्त्री0):– देखो पैक।
मुन्ज आतिशी (पु0):– देखो छत्ता हवाई और उड़ान गोला फिकरा – 2
लोह चून/लोह चुन (पु0):– लोहे का बारीक बुराद फुलझड़ी और बाज़ दीगर नुमाइशी आतिशबाज़ी में फूल पैदा करने के लिए बारुद के साथ मिला दिया जाता है। लोहे के बारीक जर्रात बारुद में गलकर सितारों की शक्ल खिल जाते है।
महताबी (स्त्री0):– देखो चन्द्रमुखी फिकरा – 2
नासपाल (पु0):– आतिशबाज़ो की इस्तलाह मुराद बहुत बड़ी किस्म के आनार के वजअ की आतिशबाज़ी।
वज़न (पु0):– आतिशबाज़ो की इस्तलाह मुराद आतिशबाज़ी की बारुद के अजज़ा का हस्बे ज़रुरत मुनासिब मुरक्कब।
आतिशबाज़ी का नमूना (दिखाना) नमूने की आतिशबाज़ी छोड़ना।
हथफूल (पु0):– हल्वी बारुद की नुमाइशी फूलदार आतिशबाज़ी जो जो हाथ पर रखकर छोड़ी जा सकें।
हवाई (स्त्री0):– देखो अग्निबान और खुतंगा (खुतंगा)–
''कौन कहता है कि हम तुम में जुदाई हो गई, ये हवाई किसी दुश्मन ने उड़ाई होगी''।
हवाई बुर्ज (पु0):– गुबारा नुमाइशी आतिशबाज़ी जो गुब्बारे के नमूने पर बुर्ज की शक्ल बहुत बारीक कागज़ की बनाई जाती है और एक ख़ास किस्म की बारुद का धुऑ भरकर शादी वग़ैरह की तक़रीबों पर उड़ाते है।
<u>पेशा तफंगबाज़ी–</u>
अस्लहा आतिशी (पु0):– बारुद की कुटवत से चलाये जाने वाले जंगी हथियार बाहराने जंग ने अस्लहा की चार किस्मे की है –
1– अव्वल हाथ की कुटवत से चलाये जाने वाले असलहा मसलन नेज़ा, तलवार, बुर्ज, कुल्हाड़ा बग़ैरह।

2– जज़ब दफा के ज़ोर से चलाने वाले जैसे तीर गुल्ला वग़ैरह।
3– कुल की ताकत से चलाने वाले हथियार जैसे मंजनीक़, गोभियार, बग़ैरह।
4– बारुद की कुटवत से चलाने वाले हथियार जैसे तोप, बन्दूक, वग़ैरह वग़ैरह।
एड़ा (पु0):– बन्दूक के कुन्दे का पैन्दा या थाप देखो बन्दूक एड़ी का इस्में मुक्ब्बर।

बन्दूक के घोड़े की कमानी की लपक की रोक का कीला जो कमानी को अपनी ज़गह कायम रखें। आड़ का ग़लत तल्फ़ुज़ मिसाल के तौर पर बन्दूक चलाते वक़्त कुनदे के ऐड़े को शाने के पास खूब अच्छी तरह से जमा कर अपनी तरफ खीचे रखो।

बाड़ (स्त्री0):– शलक़ बन्दूको या तोपों की मुर्कररा तादात का बवक़्त वाहिद एक साथ सर होना या छुटना (मारनाख्वलाना)।
बिटनी (स्त्री0):– तुमका अंग्रेजी निपल तोड़ेदार मार बन्दूक की नाल पर आग दौड़ने या शताब लगाने को गुडीं तुमा कोठीदार मुँह जिसमें रंजक डाली जाती है। देखो रंजक और बन्दूक।

बाज़ मुकामात पर बिटनी को कान जांगी और भैन तवॉ भी कहते है।
बर्क़ अन्दाज (पु0):– पैदल बन्दूकची देखो बन्दूकची।
बल्दी (स्त्री0):– फारसी लत्ज़ बल्द बमायनी रैबर का इस्तलाही तल्लफुज़ बन्दूकचियों की इस्तलाह मुराद हदफ़ निशाने का चॉद जिसपर बन्दूक का निशाना सही किया जाए। बाज़ बन्दूकची बल्ज़ी तल्लफुज़ कहते है।
उदाहरण– हर सौ गज़ के फासले पर छः इंच बल्ज़ी का बढ़ाया जाए।
बन्दूक (स्त्री0):– तफंग आतिशी अस्लहा जिससे गोली और छर्रा चलाया जाए। (चलाना, छोड़ना, मारना)।
बन्दूकची (स्त्री0):– बर्क अन्दाज तफंगी बन्दूक रखाने वाला सिपाही। बन्दूक चलाने की मशक रखने वाला।
बेधर्मी (स्त्री0):– बन्दूकचियों की इस्तलाह मुराद एक नाली की गोली की बन्दूक इस नाम की हकीकत यूँ बयान की गई है जब हिनदी सिपाहियों को विलायती राईफल दी गयी तो वो आपस की गुफ़्तगू में उसको बेधर्मी के नाम से मौसूम करते थे। स्फ्ता रफ्ता अस्लहा साज़ो में वो गोली की एक नाली बन्दूक के लिए मख़सूस हो गया था लेकिन पुराने कारिगरों के साथ ये नाम भी करीब करीब मुर्दा हो गया है।

भरमार बनदूक (स्त्री0):– पुरानी किस्म की नाल में बारुद ओर गोली भरकर चलायी जाने वाली बन्दूक।
भेद (पु0):– बन्दूक की नाल का सुराख़ (हिन्दी बमायनी सुराख)।
भेदना (क्रिया):– सुराख करना या बनाना।
भेनतवॉ (पु0):– देखो पअनी फिकरा – 2
पालकी (स्त्री0):– कारतूस वाली बन्दूक की नाल को कुन्दे से जोड़े रखने वाली हथ्थी जो लबलबी के नीचे लगी रहती है। कारतूस लगाने और निकालने के लिए उसको एक तरफ को हटाने से नाल का पिछला सिरा ऊपर उठ आता है देखो बन्दूक।
पत्थर कल्ला (स्त्री0):– चक्रमाती बन्दूक कदीम साख़्त की संग चकमाख़ से चलायी जाने वाली बनदूक उसके घोड़े के मुॅह में चकमाख़ का पत्थर लगा होता है। जब घोड़ा पटनी पर गिरता है तो पत्थर पटनी से रगड़ खाकर आग देता है जिससे पटनी की बारुद भड़कती और बन्दूक चल जाती है। यही पत्थर उसकी वजअ तसमियॉ है।
पिस्तौल (पु0):– देखो तिफंगचा।
पंचा/पैन्चा (पु0):– बन्दूक नाल में से डाट या गोली निकालने का पेंच दार मुॅह का गज़ मडोड़ी या मरोड़ी का गज़।
पहन/पहनाव (पु0):– नाल से निकल कर निशाने पर पहुचने तक गोली का ऊपर की तरफ चढ़ाव (देखो गोली पीना)।
प्याला (पु0):– देखो कोठी।
फटाका (पु0):– 1– बन्दूक की गोली का टप्पा देखो टप्पा।
2– फटने वाली गोली या गोला शेल (अंग्रेजी)।
3– बन्दूक के चलाने की आवाज़।
फटकार (स्त्री0):– देखो तोड़।
फुरौरा (पु0):– यरग़ब, बनदूक या तोप की नाल साु करने का बुशदार गज़।
फूल कील (स्त्री0):– फुल्ली भरमार बन्दूक के घोड़े को कसा रखने वाला फुल्लीदार पेंच या पेचदार कीला देखो बनदूक।
तख़्त (पु0):– बन्दूक की नाल का बैठक या कुनदे के मुॅह पर कसी होती है और जिसमें घोड़ा और उसके मुतालिका पुर्ज़े लबलबी और उसकी कमानी और पालकी वग़ैरह जड़ी रहती है देखो बन्दूक।

तिफंग (स्त्री0):– देखो बनदूक।
तिफंगचा (पु0):– तिफंग का इस्में मुसग़र पिस्तौल उर्दू में तमंचा (तमनचा) कहते है जो तमाचा (तमाचा) का इस्मेमुसग़र है फ़ारसी दा तिफन्चा और तपन्चा बोलते है जो तपान्चे का इसमेमुसग़र है।
तकनी (स्त्री0):– देखो देदबान।
तुमका/तुमकाना (पु0):– देखो बिटनी (निपिल)।
तंग दहन नाला (स्त्री0):– वो नाल जिसका मुँह पिछले हिस्से से किसी कद्र तंग यानि सलामीदार बना हुआ हो। (गाओमुख) नाल।
तोप (स्त्री0):– तुर्की बमायनी फौज लश्कर उर्दू में बन्दूक की किस्म के बड़े और वजनी गोले मारने और फेकने की जसीम नाल को कहते है। जो गोले के कुत्र के मुवाफ़िक मुखतलिफ़ जिसामत की बनायी और किसी चीज़ पर कायम कर के छोड़ी या चलायी जाती है जिस तरह बन्दूक के सनत में नई नई इजादे हुई है उसी तरह तोप में भी बड़ी बड़ी जिद्दत पैदा की गई लेकिन दोनो की कदीम और इफतदाई असल बाक़ी है (चलाना, छोड़ना, मारना)।
तोपची (पु0):– तोप छोड़े या चलाने वाले मशाक़ माहिर।
तोड़ (पु0):– बन्दूक की गोली का जोर, मार, फटकार, धमाका और कुव्वत शिकस्त दबाव।
फिकरा– 1– ख़ारदार नाल की बन्दूक की गोली का तोड़ ज़ोरदार होता है।
2– राईफ़ल बड़े तोड़ ज्यादा पिटते और सही निशाने का होता है।
तोड़ा (पु0):– फलीता, शताबा, आतिशी, परकाला, जो पुराना वजअ की बन्दूक चलाने के लिए घोड़े के जरिए इस्तेमाल किया जाए जैसे पत्थर कल्ला बन्दूक में संगचकमान देखो पत्थर कला।
तोड़ेदार बन्दूक (पु0):– फलीतेदार बन्दूक जो फलीते या शताबे से चलायी लाए देखो तोड़ा।
तोसदान (पु0):– 1– तोशादान का इस्तलाही तल्लफुज़ मुराद भरमार बन्दूक के कुन्दे में पटाख़े और रंजक रखने को बनायी हुई डिबिया।
2– जदीद किस्म की बन्दूक या राइफ़ल में नाल के नीचे जाइद कारतूस जमा रखने की जगह (मैगज़ीन) बाज़ लोग ख़ज़ाना और काठी भी कहते है।

तीर (पु0):– बन्दूकचियों की इस्तलाह मुराद बन्दूक की नाल आमतौर से एक नाली बन्दूक की नाल को जो कुनदे से अलैहिदा हो तीर कहा जाता है। मिसाल के तौर पर छोटे तीर की बन्दूक धक्का कम देती है।
टप्पा (पु0):– बनदूक की गोली की मार का फासलो यानि वो मुकाम जहाँ कुव्वते रफ्तार ख़त्म होकर गोली गिर जाए।
उदाहरण– 1– राइफिल की गोली लम्बा टप्पा लेती या मारती है।
2– गेंद बल्ले की खेल की एक इस्तलाह जो गेद को खिलाड़ी के करीब जमीन पर टक्कर देने के लिए बोली जाती है देखो गेंद बल्ला।
टिकटिकी (स्त्री0):– देखो दीदबान।
टोपी (स्त्री0):– भरमार बन्दूक का फटाका जो बनदूक के निपल (बटनी) के सर पर आता हुआ छोटी सी टोपी की शक्ल का बना हुआ होता है और यही उसकी वजअ तसमियॉ है। उसकी तह में टक्कर से आग बढ़क जाने वाला मसाला जमा दिया जाता है। जो बन्दूक की घोड़े की ज़र्ब से भड़ककर बारुद में आग लगा देता है। यही टोपी कारतूस के पेंदे में भी उसी गर्ज़ से लगायी जाती है।
टूटा (पु0):– बन्दूकचियों की इस्तलाह मुराद कारतूस (देखो कारतूस)।
जांगी (स्त्री0):– देखो बटनी फिकरा –2
जजील (स्त्री0):– देखो तोड़ेदार बन्दूक और कराबैन।
झिरी पत्ती (स्त्री0):– बन्दूक की लबलबी का घर या सुराख़ बनी हुई फौलादी तख़्ती जिसमें लबलबी का सिरा बाहर निकला रहता है देखो बन्दूक।
चाप (स्त्री0):– आवाज़ इस्तलाहन बन्दूक के घोड़े की कमानी पर चढ़ने की आवाज या खटका चापू चलने वालो के पाूव की सुनता है मगर काई चेहरा इस बेचारे को नही आता है नजर मिसाल के तौर पर कमानी की खराबी से घोड़े की चाप नही होती।
चरख़ी (स्त्री0):– कारतूस का मुॅह बन्द करने की दस्तीकल।
चक्कर (पु0):– लंगर बनदूक के घोड़े की कमानी की हल्क नुमा दाब जिसके हटने से कमानी की फटकार (उड़ान) घोड़े की मार का सबब होता है। कमानी की रोक।
छतियाना (क्रिया):– बन्दूक चलाने के लिए कन्दे के ऐडत्रे को मुकाबिल लाकर शाने के करीब टीकाना और नाल को निगाह के सीध में करना।
उदाहरण– अच्छे बन्दूकची के छतियाते ही सही निशाने पर होती हैं।

छर्रा (पु0):– बटॉना, शिकार के लिए बन्दूक में चलाने को सीसे का बना हुआ दाना जो हस्बे जरुरत बारीक और मोटे बनाये और इसी लिहाज़ से ख़ास मिक़दार में भरे जाते है।
ख़ार (पु0):– बन्दूक के नाल के अन्दर बनी हुई मड़ोडी या बल्लदार लकीरे जिसमें चक्करकर निकलने से गोली की रफ्तार ज्यादा तज और लम्बी हो जाती है। अंग्रेजी में ग्रोव कहलाते है और आला किस्म की कीमती बन्दूको में बनाये जाते है।
उदाहरण– नाल के ख़ार धुस जाने से बन्दूक का तोड़ कम हो गया और गोली निशाने पर नही लगती।
खज़ाना (पु0):– देखो तोसदान फिकरा – 2
दिमानक (स्त्री0):– धमाक का दूसरा तल्लफुज़ देखो धमाका।
दमदमा (पु0):– धुस बन्दूकचियों की पनाहमाह जो मैदान में जमीन के ऊपर मिट्टी का तोदा लगा कर हसबे जरुरत लम्बी चौड़ी और ऊॅची बनायी जाए। बरख़िलाफ़ मोर्चे के जो ज़मीन दोज ख़नदक़ के तौर पर बनाया जाता है।
दो जर्बी बन्दूक (स्त्री0):– आमतौर से दो नाली बन्दूक को कहा जाता है लेकिन जदीद इजात की बन्दूक में ज़र्बो (फ़रों) के लिए कोठी बनायी जाती है। जिसमें उसके मुताबिक करतूस रख दिए जाते है। जो लबलबी की हरकत के साथ नाल में आते और टुटते रहते है। मशीनगन की इजात ने इन ज़र्बो को लातादाद बना दिया जिसकी ज़र्बे गोलियों की बौछार करती है।
दुम्बाला (पु0):– बन्दूक की नाल पीछला हिस्सा जिसमें कारतूस रखा जाता है। ओर उसकी मार के लिए सिरों पर कीलदार बटनी बनी होती है। जिसपर घोड़ा गिरता है।
वेदबान (पु0):– खॉची, तकनी बन्दूक की नाल के पिछले सिरे के करीब ऊपर के रुख़ जाविए की शक्ल का लगा हुआ पुर्ज़ा जिसमें से नज़र मक्खी पर जमकर निशाने से मिलायी जाती है।
धक्का (पु0):– बन्दूक चलाने का झटका जो जो बनदूकची को छाती पर महसूस होता है। (देना)
धमाका (पु0):– छोटी किस्म की बन्दूक (टीमीगन)।
डान्टा (पु0):– सुनबा बन्दूक की नाल में सुराख़ करने का ख़ास किस्म का मरोडीदार कटाव का फौलादी वर्मा जिसमें से लोहे बुड़ादा बाहर निकलता रहे।

राय (पु0):– बनदूकचियों के सरदार था ख़िताब।
राईफ़ल (स्त्री0):– अंगेजी लत्ज़ मुराद गोली चलाने की ख़ास बनदूक।
रंजक (स्त्री0):– फ़ारसी लत्जत्र रन्द का उर्दू तल्लफुजत्र बन्दूकचियों की इस्तलाह मुराद एक बारीक बारुद जो बन्दूक की बटनी में डाली जाए जिसको शताब लगाने से नाल की बारुद में आग पहुॅच जाती है उड़ना मुराद रंजक की आग का नाल की बारुद पर असर न करना खुद जल कर उड़ जाना (चाटना) शताबे का रंजक को जला देना और नाल की बारुद में असर न करना।
रंदक (स्त्री0):– रन्द का इस्में मुसग़र वार दा रंजक देखो रंजक।
रिवाल्वर (पु0):– अंग्रेजी लफ्ज़ एहले यूरोप की इजात मुराद चन्द फेरी तमन्चा जो लबलबी की हरकत से चलता रहे। देखो तमन्चा।
रिवान्ग (स्त्री0):– रवाू का ग़लत तल्लफुज़ बन्दूकचियों की इस्तलाह मुराद ऐसी गोली जो बन्दूक की नाल में फसकर न जाए बल्कि लुढ़कती हुई अन्दर पहुॅच जाए।
रहकला/रद्दकल (स्त्री0):– संस्कृत रकिला बमायनी तोप खीचने की गाड़ी मिजाज़न छोटी ओर हल्की किस्म की तोप को कहते है। जिसको दो बैल आसानी से खीच सके। ज़म्बूर (स्त्री0):– कड़क बिजली बन्दूक की वज़ा एक किस्म की छोटी ओर हल्की तोप जो आसानी से उठाकर जे जायी और हर जगह क़ायम करके चलायी जा सके। यदीद इजात की इस किस्म की तोप टामी गन कहलाती है।
रनबोर्ची (पु0):– हल्की किस्म की तोप रखने और चलाने वाला सिपाही देखो ज़म्बूर।
ज़म्बूर ख़ाना (पु0):– हल्की किस्म का तोप जमा रखने का मुक़ाम जहाँ से उनकी नक़्ल या हम्ल में आसानी हो।
सिंधाड़ा (पु0):– बन्दूकचियों की इस्तलाह मुराद बनदूक का मुसलसी शक्ल का लम्बोतरा कुन्दा देखो कुन्दा।
सिधड़ी (स्त्री0):– बारुद रखने की कुप्पी जो कदीम जमाने में सीग की बना ली जाने की वजअ सेन्धडी कहलाती थी।
शल्क (स्त्री0):– तुर्की लफ्ज़ शक्ल का उर्दू तल्लफुज़ मुराद तोपो या बन्दूक के छूटने की बाड देखो बाड।

शेरदहन नाल (स्त्री0):– बन्दूक की ऐसी नाल जिसका मुँह नफ़ीरी के मुँह की तरह फैला हुआ हो।
तफ़क्चा/तपन्चा (पु0):– देखो तफन्गचा।
तमन्चा (पु0):– तमन्चा या तफ़क्चा का उर्दू तल्लफुज़।
फर्शी (स्त्री0):– दो नाली बन्दूक की नालो के जोर पर लगी हुई पट्टी जिसके साथ नाले पेवस्त होता है। और जिसपर से मक्खी पर निगाह मिलाते और निशाना बाँधते है। देखो बन्दूक
फ़लीतेदार बन्दूक (स्त्री0):– देखो तोड़ा ओर तोड़दार बन्दूक।
क़राबे (स्त्री0):– शरदहाान नाल बनदूक देखो शेरदहान नाल।
कसरतूस (पु0):– टूटा अंग्रेजी जफ्ज़ कारटिरिज का उर्दू तल्लफुज़ बाज़ मुकामात पर कारतूस को टूटा कहते है जो बन्दूक भरने और खाली करने का एक आसान तरीका है। बन्दूक की इजादों के साथ उसकी साख़्त में भी बड़ी जिद्दते की गई है।
कान (पु0):– निप्पल देखो बटनी मिसाल के तौर पर शिश्त बाँधने या निशाने पर निगाह जमाने की मश्क के लिए तोड़दार बन्दुक के कान में रंजक डालकर छोड़ी जाती हैं
कत्ता (पु0):– घोड़े की कमानी की दाब या आड़ जो उसको खुत्रलने से ज़द के रखे तफ़सील के लिए देखो जिल्द– पेशा घड़ी साज़ी।
कड़क बिजली (स्त्री0):– देखो ज़म्बूर।
कमानी (स्त्री0):– पेशावरों की मुशतरक इस्तलाह मुराद ऐसी शय या पुर्ज़ा जो अबाकर या मुडली बनाकर छोड़ने पर कुव्वत से खुले या फैले ऐसे पुर्ज़े को खुलने से रोके रखने वाला पुर्ज़ा इस्तलाहन कुत्ता कहलाता है। जिसको हटाने से कमानी फ़ोरन खाली हो जाती है। बन्दूक के घोड़े की कमानी चिमटे की शक्ल का एक पुज़्र होता है। जिसकी कुव्वत दिफा पर घोड़े की ज़रब पर दारोदार होता है।
कुन्दा (पु0):– बन्दूक की मोठ या हथ्थी जो आमतौर से मज़बूत लकड़ी की मुसलसनुमा बनी हुई होती है। और यही उसकी वजअ तसमियाँ है देखो बन्दूक।
कोठी (स्त्री0):– 1– प्याला बन्दूक की नाल में गोली और बारुद भरने की जगह (पेशावरों की मुशतरक इस्तलाह)।
2– निप्पल का निचला सिरा जिसमें रंजक डाली जाती है।

3– तोसदान (मैगज़ीन) चन्द ज़र्बी बन्दूक में कारतूस जमा रखने की जगह देखो तोसदान फिकरा – 2
खाँची (स्त्री0):– देखो देदवान।
ग्राप (पु0):– अंग्रेजी लत्ज़ ग्रुप का गल्त तल्लफुज़ शिकारियों की इस्तलाह मुराद ख़ारा वज़न के छर्रो की मुकर्रर तदाद जो गोली के बजाए कारतूस पानाल मे भरी जाए या नाल में भरी जाए। (मारना)
गोली पतियाना (क्रिया):– बन्दूक की नाल से छुटकर गोली का हवा में छपआ हो जाना जिसकी वज़ह से निशान न लगे। गोली में ये नुक्स सासे के सेल की वजह से होता है। यही हालत छर्रो की होती है। इसलिए इसतलाहन इसको छर्रा कहा जाता है।
गोली पीना (क्रिया):– गोली का बन्दूक की नाल से निकलकर हस्बे ताकत ऊपर चढ़कर निशाने पर पहुँचाना मुराद सीधा निशाने की तरफ न जाना बल्कि कौसनुमा शक्ल में जा कर निशाने पर लगाना। गोली का चढ़ाव करना।
घोड़ा (पु0):– बन्दूक के पटाखे पर मारने वाला घोड़े के चेहरे की वजह का पुज्रा जिसकी ज़रब से पटाखे का मसाला भड़क उठता है और बारुद में आग लगा देता है। ये पटाखा भरमार बन्दूक के निप्पल पर और कारतूस के पैंदे के बीच में लगाया जाता है। बाज़ जदाद इजात बन्दूको में घोड़ा नही होता बल्कि नाल के तख़्त के अन्दर कारतूस के पैंदे की जद में नोकदार कमानी लगी होती है जो लपलपी दबाने पर घोड़े का अमल करती है देखो बन्दूक।
लबलबी (स्त्री0):– बन्दूक के घोड़े की कमानी के कत्ते को उसकी बैठक से ख़िसका देने वाला पुर्ज़ा। कत्ते के अपनी जगह से हटाने पर कमानी खुलती और घोड़े को गिराती है देखो बन्दूक (दबाना) लबलबी को उँगली की हरकत से अन्दर के रुख़ ख़िचना देखो कत्ता, घोड़ा और कमानी।
लंगर (पु0):– देखो चक्कर।
मशीनगन (स्त्री0):– जदीद इजाद बन्दूक जो कल के ज़रिए चलती और बौछार करती रहती है।
मग़ज़ कील (स्त्री0):– बन्दूक की पालकी का कीला जो जदीद किस्म की बराजत्र बनदूको की नाल को कुन्दे से जोछ़े रखता है और हस्बे जरुरत कारतूस लगाते और निकालते वक़्त नाल को कुन्दे से खोलने और बन्द करने के लिए कुन्जी का काग देता है देखो पालकी और बनदूक।

मकड़ी (स्त्री0):– बन्दूक के घोड़े को कमानी के चक्कर को दबाये रखने का पुर्ज़ा देखो चक्कर और कत्ता।
मक्खी (स्त्री0):– नज़र गाह बन्दूक की नाल के अगले सिरे के मुँह पर छोटी से घुड़ी की शक्ल का लगा हुआ पुर्ज़ा जिससे नज़र मिलाकर निशाना बाधँ जाता है यानि निशाने की साध देखते है (देखो बन्दूक) (मिलाना) मक्खी के मुकाबले में निशाने को लाना।
मक्खी पोश (पु0):– मक्खी का हिफ़ाजत का ढ़क्कन मुहाफिज़े मक्खी।
मुन्द्रा (पु0):– देखो बिटनी।
मोर्चा (पु0):– फ़ारसी मोरचाल या मोस्वल का उर्दू तल्लफुज़ मैदाने जंग में बनदूकचियों के पनाह लेने को ख़न्दक की शक्ल का बना हुआ गढ़डा जो हस्बे जरुरत छोटा बड़ा और गहरा बनाया जाता है। मोर्चा और दमदमे के फ़र्क के लिए देखो दमदमा।
बन्दूक की नाल में जंग लगी हुई जगह या जंग खाया हुआ निशान
मिज़ाजन जंग जो नाल में जग जाए। (लगना)
मोहरा (पु0):– देखो एड़ा।
मैगज़न (पु0):– 1– देखो तोसदान।
2– बारुद और उसकी हुई चीज़ों गोदाम या बारुद ख़ाना।
नाल (स्त्री0):– 1– बन्दूक का तीर यानि नली।
आतिशबाज़ो की खिलौना तोप जो लकड़ी के कुन्दे में नाल का दस या बारह इंच लम्बा टुकड़ा जुड़का बनायी और तफरीह या किसी तकरीब के मौके पर आवाज करने को छोड़ी जाती है। इस्तलाहन नाल कहलाती है।
निशाना (पु0):– सदफ वो पेश नजर जगह जिसपर ज़रब लगानी मक़सूद हो (लगाना ,ताकना और रजमान पर बैठना) पेश नजर जगह पर सहीज़रब लगाना। ठीक मुक़ाम मक़सूद पर मार पड़ना। (जमाना) निशाने सही करना। (निगाह को निशाने से मिलाना।
नज़रगाह (स्त्री0):– देखो मक्खी दबदबाना।
यरगू (पु0):– देखो फुरैरा।
यक़ज़रबी बन्दूक (स्त्री0):– एक नाली बन्दूक।
<u>ज़मीमा फ़सल दोम वरज़ीशी खेल</u>

आड़गोड़ (पु0):– गोड़ियो के खेल की इस्तलाह मुराद वो बड़ी और वजनी गोड़ी जो निशाना लगाने के लिए खेल के मैदान में खिलाड़ियों की टोलियों के बीच में रख दी जाए। गोड गेदे का इस्तलाही तल्लफुज़ है देखो गेड़ी (मारना)।
आड़ी (पु0):– खिलाड़ियों की टोली का हमजोली साथी मददगार हिमायती ओर ज़शी खेलो की मुशतरक इस्तलाह (बनाना)।

फ़न बॉक के एक दॉव का नाम।

ऑख मिचोली (स्त्री0):– टरमरी हरीफ़ से दुपकर बच निकलने की मशक का खेल जो इस तरह होता है के खिलाड़ियों की टोली कुरा अन्दाजी के जरिए अपने में से किसी एक को हरीफ़ बनाकर उसको इस्तलाहन चोर कहते है। और मुअतबर खिलाड़ी को हिमायती बनकर एक महफूजत्र जगह बिठा देते है। इस हिमायती को इस्तलाह दायी कहते है। दायी चोर की ऑख पर पट्टी बॉधकर पास बिठा लेती है। जब यब खिलाड़ी अपनी पनाहगाहो में जा छुपते है तो चोर की ऑखे खोलकर छोड़ देती है। वो जिस जगह खिलाड़ी की आहट पाता या शुब्हा करता है। छुपके छुपके दबे पैरों जाता है। खिलाड़ी भी उसकी नकल व हरक़त से होि
शयार रहते हैं और जिस तरफ उसका रुख देखते है उस तरफ से किसी दूसरी तरफ निकल जाते है और जब मौका पाते है भागकर हिमायती की पनह में आ जाते है जो खिलाड़ी गफ़लत करता या सुस्त होता है और चोर के हाथ आ जाता है तो फिर वो चोर बनाया जाता है। अगर तीन या सा मरतवॉ कोई खिलाड़ी न पकड़ा जाए तो चोर को खुद सज़ा देकर खत्म कर दिया जाता है।
इबबीका (पु0):– गिल्ली डण्डे के खेल की इस्तलाह देखो गिल्ली डण्डा।
उचक बिल्ली (पु0):– देखो चील झपट्टा।
अगली झप (पु0):– देखो अनधा भैसा ऑख मिचौली की तरह का खेल इस फ़र्क के साथ इसमें हरीफ़ की जस को इस्तलाहन अंधा भैसा कहते है। ऑखें बन्द रखी जाती है और खिलाड़ी उसको चारों तरफ से घेर लेते है वो उनकी आहट या आवाज पर झपट कर पकड़े की कोशिश करता है इस अमल में जिस किसी को पकड़े या छूले वो उसका कायम मक़ाम बनाया जाता है।

इस खेल का दूसरा तरीका किसी निशाने पर ऑखें बाधकर अटकल से जत्ररब लगाता है इसमें कामयाब खिलाड़ी इनाम पाता है। इस तरीको को बाज़ मुकत्राम पर अलग झप ओर अंधा बादशाह कहा जाता है।

बुत्ता (पु0):– गिल्ली डण्डे के खल की इस्तलाह मुराद डण्डे से गलली को मार कर दूर फेकने का का अमल (लगाना, मारना)।
बित्ती (स्त्री0):– देखो चड़ी चड़ौल।
बिलर्यड (पु0, स्त्री0):– विदेशी घेसू खेल जो हिन्दुस्तान में अंग्रेजो का फैलाया हुआ है। इस खेल का कोई हिन्दुसतानी नाम नही रखा गया हिन्दुस्तान की हर जुबान में इसका असली नाम जबान जद आम हो गया है। मेज पर गेद और छड़ियों से खेला जाता है।

इस किस्म के खेल की एक मुख़तरस सूरत फ़िगर बिलर्यड कहलाती है ये भी अपने असली नाम से मशहूर है और तालीम याफ़ता घरानो में बहुत चल गया है।
बैडमिटल (पु0, स्त्री0):– विदेशी मैदानी खेल इस खेल के लिए भी कोई हिन्दुस्तानी नाम नही है। इसका खेल टेनिस के खेल की एक मुख़तरस और सहल सूरत है देखो टेनिस।
भिड़वितारा (पु0):– देखो चादर छुपवॉ।
पाला (पु0):– खिलाड़ियों ओर बाज़ीगरों की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के मुक़ाबले के मैदान का मख़सूस मुक़ाम (हददेफ़ासिल) यहाँ से हरीफ को भगा देते या जिसके जीत लेने को कामयाबी मान लिया जाए (जीतना, हारना)।
पिठ्ठू (पु0):– खिलाड़ियों की इस्तलाह मुराद पुश्त व पना। हिमायती मद्दगार साथी तफसील के लिए देखा पेशा जहलवानी (बनाना)।
पिंगपॉग (पु0):– बिदेशी घरेलू खेल मसलन दूसरे बिदेशी खेलों को उसका भी कोइ बिदेशी नाम नही है। टेनिस की किस्म से ओर कमरे में एक मुख़सतर सी मेंज पर बहुत छोटे बल्ले और गेंद से खेला जाता है।
पिनकोर्चा (पु0):– निशानेबाज़ी की मशक का खेल जिसका तरीका चन्द छोटी छोटी चीज़ों को ज़मीन पर ऊपर तले रखकर गेंद का निशाना बनाया जाता है और एक मुक़र्ररा फ़ासले पर गेंद मारकर निशाना सही करने की मशक की जाती है।
पिंग (पु0):– झोले के लम्बे झोटें जो झोलें में खड़े होकर बैठकियॉ लगाकर बढ़ाये जाते है इस मशक से सॉस बड़ता और टॉगे मज़बूत होती है। और दोनों की वर्ज़िया हो जाती है।

फल बिछुल (स्त्री0):– देखो झॉयी मॉयी ऐड़े बेड़े घूमने दौड़ने का खेल उसको ताल बम भी कहते है।
ताल बम (स्त्री0):– देखो झायें मायें।
टटी कुदाई (स्त्री0):– एक बुलन्दी की टटी फलॉगने का वरज़िश खेल जिसकी मशक घोड़े सवार होकर और प्यादा दोनों तरह से की जाती है पहली सूरत में घोड़े की सवारी की मशक और दूसरी में दौड़ने और फादने की महारत बढ़ती है।
टोली (स्त्री0):– खिलाड़ियों की जमात (पार्टी)।
टेनिस (पु0,स्त्री0):– बिदेशी मैदानी खेल हिनदुस्तानी ज़बान में इसका कोई नाम नही है। मुर्कररा जगह पर गेंद और बल्ले से खेला जाता है हार और जीत मालूम करने को मैदान के बीच में करीब तीन फिट उचाँइ पर लम्बा जाल तान दिया जाता है।
जीत (स्त्री0):– हरीफ़ पर कामयाबी या फ़तह।
झाड़ बन्दर (पु0):– चील झपटे के खेल का मुक़ाबी नाम देखी चील झपटा।
झड़ैल (स्त्री0):– मुसतसना हरीफ़ से हाथ या पेर के छू जाने को हार की सदन न मानना। (बोलना) (हाथ पैर को हरीफ़ से छुट जाने को मुसतसना करना) मिसाल के तोर पर हाथ पैर झड़ौल है।
साय मॉय (स्त्री0):– तामबम चकर धन्नी, चकरफेरी एक खेल का नाम जिसमें खिलाड़ी हल्का बॉध कर खड़े होते है और एक दूसरे को हाथ पकड़ कर दयरा बना लेते है फिर बाहम एक दूसरे को खीचते हुए जोर से घूमते है। इस हल्के के मरकज़ पर एक खिलाड़ी खड़ा किया जाता है। अगर वो हल्का तोड़कर निकल जाए तो तमाम खिलाड़ी चक्कर खाते हुए इसको पकड़ने को दौड़ते है और चक्करा कर गिरते जाते है।
जुज्जू (पु0):– झोंटे का इस्ममुसग़र देखो झूटा।
मूली झूल्लइयॉ (स्त्री0):– अधूरा झूला जो दो या एक लटकी हुई रस्सी का होता है। जिसको हाथो से पकड़ कर लटक जाते है। ओर झोटे लेते है ओर पेंग बढ़ाते है।

किसी लम्बी बल्ली के सिरे से बंधी लटकी हुई एक या कई रस्सियों का झूला जिसको पकड़कर लटकते ओर बल्ली के गिर्द चक्कर लगाते है।
झूला (पु0):– जमीन से अधर लटकी हुई या उसी किस्म की कोई और चीज़ झुले की वज़िर्श के लिए मजबूत रस्सा या ज़ंजीर इस्तेमाल की जाती है। (झूलना)

झोंटा (पु0):– झूले आगे पीछे हरकत जो हवा के असर से हो या झूलने वाले के अम्ल से (लेना) झूले में बैकर खड़े होकर या लटककर आगे पीछे हरकत करना (बढ़ना) झोटें की हरकत को लम्बा करना।
चादर छुपवॉ/चद्दर छुपवॉ (स्त्री0):– भिड़ो तारा (दक्खिन) एक खेल जिसमें से खिलाड़ियों में से किसी एक खिलाड़ी को चादर के अन्दर छुपा दिया जाता है बाकी सकब खिलाड़ी छुप जाते है। फिर चोर खिलाड़ी की ऑखें खोलकर चादर के अन्दर की खिलाड़ी की शिनाख़्त करायी जाती है। अगर वो सही बता दे तो फिर दुपने वाला चोर बनाया जाता है। ताआखिर।
चप्पा (पु0):– गिल्ली डण्डे के खेल की इस्तलाह मुराद डण्डा मारना।
चड़्ढ़ी चडोल)स्त्री0):– चड़्ढ़ी टप्पा एक खेल का नाम जिसमें दो दो खिलाड़ियों की जोड़ी बनाकर एक हल्के में खड़े होते है। हर जोड़ी का एक खिलाड़ी सवार और दूसरा घोड़ा बनता है इसमें जो अफसर होता है वो घोड़े से उतर कर खेल का मुर्कररा कलमा मुॅह से कहता हुआ हल्के के गिर्द दौड़ता हुआ चक्कर लगाता है। इस दौड़ में अगर उसका दम टुट जाए यानि सास ले ले तो तमाम सवार खिलाड़ी घोड़े बन जाते है इस खेल को बाज़ मुक़ाम पर सुरग लााल घोड़ी ओर बाज़ जगह चड्डी टप्पा कहते है। यानि सवार घोड़े बन जाते है ताआखिर।
चरख़ (पु0):– झूलो का चक्कर जिसको आमतौर पर चक्कर कहते है छतरी की शक्ल का बना होता है जिसके चारो तरफ मुख़्तलिफ़ किस्म की नशिशतों के झूले लटके होते है जिनपर शौकीनो को बैठाकर चक्कर देते है। देशी चरख़ को एक दो आदमी घुमा लेते है। सर्कसो के विलायती बने हुए चररकत्र जो बहुत बड़े और फैलावदार होते है। इंजन या बिजली की कुव्वत से चलाये जाते है।
चरख़ची (पु0):– चरत्रा का मालिक या घुमाने वाला शख़्स।
चरखी बिल्ला (पु0):– देखो चुम्मो रानी।
चकफेरी (स्त्री0):– देखो झायें मायें।
चक्कई (स्त्री0):– लट्टू की किस्म का खेल जिसमें डोरी बॉधकर फेकते है जो पलटकर वापस हाथ में आ जाती है (फिराना)।
चम्मोरानी (स्त्री0):– चरखी बिल्ला देसी मैदानी खेल जो एक महदूद जगह में चार या आठ खाने बना कर खेला जाता है। खिलाड़ी इसके पहले खाने में पटतर या ठिकरे का गत्ता डालता है और फिर उचककर उस ख़ने में जाकर एक एक टॉग से खड़ा होकर गित्ते को पेर मारकर खाने के बाहर लाता है। अगर गित्ता खाने

की लक़ीर पर टिक जाए तो खिलाड़ी हार मानी जाती है। इस गित्ते के दक्खिन बिल्ला और शुमाली हिनद में रानी कहते है। ओर यही इस खेल की वजअ तसमियॉ है।

चोर (पु0):– बाज़ वर्जिश खेलो के खिलाड़ियों की मुशतरक इस्तलाह मुराद खेलने वाली टोली में का वो खिलाड़ी जो हरीफ़ बनाया जाए।

चोगान (स्त्री0):– पोलो (अंग्रेजी) गेंद बल्ले का खेल जो घोड़ो पर सवार होकर खेला जाए जिसका मकसद दरअसल घोड़े की सवारी की वज़िश का मशक होता है।

चीप चन्डोल (पु0):– गिल्ली डण्डे के खेल का मुकत्रामी नाम देखो गिल्ली डण्डा।

चील झप्पट्टा (पु0):– झाड़ बन्दर दौड़ और झपट का खेल जिसमें कुरा अन्दाजी के जरिए एक खिलाड़ी को मैदान में बिठा दिया जाता है और उसके गिद्र एक मुर्क़ररा प्यासले पर दूसरे खिलाड़ी घेरा बॉध लेते है ओर उसकी निगाह बचाकर झपटकर उसको छूने आते है इनमें से जो कोई पकड़ा जाता है वो शिकस्त खिुर्दा समझा जाता ओर अलोहिदा बिठा दिया जाता है इसी तरह खेल यात्म हो जाता है।

दौड़ (स्त्री0):– तेज़ भागने का वर्ज़िश गेंद बल्ले की खेल का एक इसतलाह देखो गेंद बल्ला।

सप्तरूल (पु0):– खिलाड़ियों की टोली का सरकर्दा।

सरपट दौउ़ (स्त्री0):– सर सामने करके या ऊपर का धड़ सामने को झुका कर तेज दौड़ने की मशक।

सुरंग लाल घेड़ी (स्त्री0):– देखो चढ्ढ़ी चडोल।

सटी सज्जा (स्त्री0):– पानी के अन्दर ऑख मिचौली का खेल। ऑख मिचौली।

फुटबाल (स्त्री0):– विदेशी मेदानी खेल जो हिनदुस्तान में अंग्रेजी राज का फैलाया हुआ हैं इसका कोई हिसतानी नाम नही हैं हर हिनदुस्तानी बोली में अपने असली नाम से मशहूर है और बहुत आम है।

फिंगर बिर्ल्यड (स्त्री0):– देखो बिर्ल्याड फिकरा – 2

कबाड़ी (स्त्री0):– गिल्ली डण्डे के की इस्तलाह मुराद हारे हुए खिलाड़ी का दूर ेकी हुइ गिल्ली को उठाकर भागते हुए कुच्छी पर आना (भागना) देखो गिल्ली डण्डा फिकरा – 2

कब्बडी (स्त्री0):– देसी मैदानी खेल जिसमें खिलाड़ियों की दो टोलियाू आमने सामने खड़ी होती है और बीच में एक हद फ़ासिल बना लेते है जिसको इसतलाहन पाला कहते है। फिर किसी एक टोली का एक खिलाड़ी मुक़ाबिले के लिए दूसरी टोली वालो की तरफ जाता है और एक सॉस भरे तक उनसे मुक़ाबला करता है और इस अर्से में दोड़ फिरकर उनको मारने की और वो सब उसको पकड़ने की कोशिश करते है एक सॉस में ये उनमें से जितने को छू दे और वापस पाले (हदे फासिल) पर आ जाए तो वो सब हारे हुए समझे ओर खेल में अलहैदा कर दिए जाते और अगर वो अपने इस हरीफ़ को पकड़ ले और पाले तक न आने दे यहाँतक के उसका सॉस टूट जाए तो उसको हारा माना ओर खेल से अलहैदा कर दिया जाता है।

क्रिकेट (पु0):– विदेशी मैदानी खेल उर्दू में गेंद बल्ला कहलाता है। देखो गेंद बल्ला।

करोकी (स्त्री0):– विदेशी मैदानी खेल जो बज़ाहिर पोलो (चोगाना) के खेल से मुख़तरस ओर मामूली शक्ल में आम खिलाड़ियों या तालबे इलमों के लिए इजात किया मालूम होता है। उर्दू में इसका कोइ नाम नही है।

कोड़ी ज़तन (स्त्री0):– देसी मेदानी खेल जिसमें कौड़ी या इसी किस्म की किसी चीज को ज़मीन में गड़हा करके दबा दिया जाता हे ओर जगह जगह उस जेसे निशान बना दिये जाते है। तमाम खिलाड़ी उसकी तलाश के जिए मैदान में जाते है जो उस कौड़ी को ढुढ निकालता है वो कामयाब समझा जाता और दूसरे खिलाड़ी पर हाकिम बनाया जाता है इस खेल का एक तरीका यह है कि मैदान में मिट्टी की छोटी ठोटी ढेरियॉ लगा दी जाती है और एक खिलाड़ी उसमें से हा ण्क के करीब जाकर बैठता है ओर इसी अमल में किसी एक ढ़ेरी में कौड़ी या मुर्कररा निशानी दुपा देता है जिसको ढूढने को दूसरे खिलाड़ी भेजे जाते है।

खाई फजॉग (स्त्री0):– मैदानी खेल जो गढ़हे नाले ख़न्दक या खाई को फलॉगने की मशक के लिए खेला जाता है कामयाब खिलाड़ी ईनाम के मुशतहक होते है। घोड़े सवार हाकर भी ये मशक की जाती है।

गाफ़ (पु0/स्त्री0):– विदेशी मैदानी खेल जिसको हिनदुस्तानी खेल में गिल्ली डण्डे की जदीद इजात सूरत समझना चाहिए। क्यूँकि ये गिल्ली डण्डे के तरीके पर मामूली मबदीली के साथ खेला जाता है। डण्डे के बजाए इसमे लम्बी डण्डी

का चोंचदार बल्ला होता है। और गिल्ली के बजाए रबर की ऐ छोटी ठोस गेंद इस गेंद का उर्दू में कोई नाम नही।
गद्दा (पु0):– गेंद बल्ले या गेंद के इसतलाह मुराद गेंद का बुलंदी से ज़मीन पर गिरकर ऊपर को उचक जाने का अमल (खाना, लेना)।
गुच्छी (स्त्री0):– कोइ गोलक गिल्ली डण्डे और गोलियों के खेल की इस्तलाह मुराद पॉच छः इंच लम्बा नाली जो गिल्ली को दूर फेकने के लिए डण्डे का मुॅह टिकाने को ज़मीन खोदकर बना ली जाती है।

गोलियों के खेल की गॅच्छी गोल शक्ल की बनायी जाती है और एक मुर्कररा फासले पर खड़े होकर गोलियॉ इसमे फेकी जाती है बाज़ मुक़ाम पर गोलक और गुल गुच्छियॉ कहते है। (भरना) गुच्छी पर गिल्ली रखना या गुच्छी में गोलियॉ डालना।
गुल गुच्छियॉ (स्त्री0):– देखो गुच्छी फिकरा – 2
गिल्ली (स्त्री0):– गिल्ली डण्डे के खल की इस्तलाह मुराद डण्डे की जोड़ी या पॉच छः इंच लम्बी और नोकीले मुॅह की बनायी जाती है। जिसको खेल में डण्डा मारकर दूर फेका जाता है।
गिल्ली डण्डा (पु0):– देसी मैदानी खेल जिसमें खिलाड़ी गिल्ली को डण्डे से मारकर दूर फेकता है और खेल के कायदे के तहत ये अमल कई बार किया जाता है। दूसरे खिलाड़ी गिल्ली को उसकी जगह यानि गुच्छी पर लौटाने की कोशिश करते है। इस अमल में कामयाबी उनकी जीत समझी जाती है। बिल्ली डण्डा लगभग दो फिट लम्बा होता है और ज्यादा से ज्यादा एक इंच कतर का होता है।
गोलक (पु0):– देखो गुच्छी फिकरा – 2 बाज़ खिलाड़ी गुल गुच्छियॉ कहते है।
गेड़ी (स्त्री0):– लफ्ज़ गेड़े का इस्मे मुसग़र देखो जिल्द अव्वल – 7 एक ख़ास किस्म के दरख़्त का लम्बा और औसत दर्ज़े का मोटा तना जो छप्पर और खपरैल छुपाने के काम आता और इस्तलाहन बल्ली कहा जाता है। गेढ़ी खिलाड़ियों की इस्तलाह में कोहिनीदार मुॅह की करीब ढ़ेड़ दो फिट लम्बी औसत दर्ज़े की मोटी लकड़ी को कहते है जो इस्तलाहन गेड़ियॉ खेलना कहा जाता है इस खेल में एक गेडी को पाने पर यानि खेल के मैदान के बीच में रखते है और एक खिलाड़ी उसपर अपने हाथ की गेंड़ी तानकर जोर से मारता है। इस ज़रब से पालेपर रखी हुई गेंड़ी अगर मुर्कररा हद के बाहर जा पड़े तो इस पर कब्जा कर लिया जाता

है और दूसरी गेंड़ी निशाना लगाने के लिए रखी जाता है। नकाम खिलाड़ी अलहैदा कर दिया जाता है।
गेंद बल्ला (पु0):– क्रिकेट गेंद और बल्ले का मशहूर और मारुफ़ खेल आमतौर से अंग्रेजी इस्तलाहन मरुज है।
लाल (पु0):– 1– गिल्ली डण्डे की खेल की इसतलाह दस डण्डों की नाप के बराबर ल्ली फेकने को एक लाल कहते है।
2– दस लाल की एक कबाड़ी और बीस लाल का एक मुण्डा कहलाता है। (बनाना)
लोन पाट (पु0):– मैदानी खेल लोन पाट कहलाता और हर जगह खेला जाता है। इस तरह के ज़मीन पर एक मुर्कररा पैमाइश का तीन खानों का मैदान बनाया जाता है जिसपर दो दो खिलाड़ी बिल मुकाबिल खड़े होकर कब्बडी की तरह खेल खेलते है और एक ख़ाने से दूसरे ख़ाने मे चलते हुए पाले तक जाते है। ख़ानो के नाम अगल छाप चुआ अड़काली और इंगपाट हैं। ओर उसके बीच का ख़त जो हदे फासिल होता है। सरनाट कहलाता है।
नट (पु0):– सर्कस के खिलाड़ियों की तरह बॉस ओर रस्सी वगैरह के ऊपर मुख़तलिफ़ किसम के वर्ज़िश करतब करने वाले एक कबीले का नाम इस्तलाहन बॉस पर कलाबाज़ियॉ खाने और रस्सी पर चलने वालो को कहते है।
नट बाज़ी (स्त्री0):– मुख़तलिफ़ किस्म के वर्ज़िश करतब और उनका तमाशा दिखाने का फ़न।
नेरा बाज़ी (स्त्री0):– नेरा मारने की मशक जो ज़मीन पर गड़ी हुई मेख़ को घोड़े पर दौड़ते हुए निशाना बनाकर की जाती है।
वॉलीबाल (स्त्री0):– विदेशी खेल जो फुटबाल की तरह तंग मैदान में हाथ से खेला जाता है। इस खेल का कोई हिन्दुस्तानी नाम नही।
हॉकी (स्त्री0):– विदेशी मैदानी खेल जो कोहनीदार डण्डों से गेंद को मारकर खेला जाता है। फुटबाल की खेल की तरह इसका भी मैदान ओर हारजीत होती है। देसी खेलों में गिल्ली डण्डे और गेड़ियों का खेल इसकी एक अदना सूरत समझी जा सकती है।
हिन्डोला (पु0):– एक किस्म का झूला जिसमें झूलेनुमा खटोले मतवाज़ी लटके होते है। देसी हिन्डोले में चारों तरफ सिम्त चार खटोले होते है जिनके ढ़ॉचे के बीच में धुरा होता है जिसपर उनके पहिये की तरह घुमाया जाता है। विलायती हिन्डोला

बहुत बड़ा होता है और उसमें बहुत से खटोले होते है ओर बिजली की कुव्वत में घुमाया जाता है। हिन्डोले के हिस्से बॉक थला धुरी कत्ती ओर खटोला कहलाता है।
हिन्डोलची (पु0):– हिन्डोला घुमाने वाला शख्स।

तीसरी फ़सल बाज़गरी

1. मुर्ग़ बाज़ी मय तीतर बटेर और बुलबुल बाज़ी

अटकना (क्रिया):– अलील करना मुर्गी के पट्ठों का चलते चुभते बतौर आदत आपस में एक दूसरे के साथ एक एक दो दो चोंचे लड़ाना मुठभेड़ करना, छड़पना।
अटपलका करना (क्रिया):– देखो दो पलका करना।
असील मुर्ग (पु0):– नरचील या गिद्ध के साथ मुर्गी का जोड़ा लगाने से पैदा हुई वी नसल का मुर्ग़ पुर गोश्त वज़नी और गुठे हुए जिस्म ऊँचे हाड सुतवान परों का बहुत जो वट लड़ाकू होता हैं। इसकी ऑखे मसलदाना मखारीत तोतें की ऑखो के मुशाबा कल्ला लम्बा चौड़ा बेगोश्त लोलकियॉ कम कलगी़ छोटी और मोटी होती है। मादा अण्डे कम देती है बाज़ मुर्ग़ बाज़ असील मुर्ग़ को कुलंग कहते है। कहावत–माँ टेनी, बाप कुलंग, बच्चे रंग बिरंग।
अलील पट्ठा (पु0):– असली मुग़्र का नौ उम्र पट्ठा जो लड़ाने के काबिल न हुआ है आजाद फिरता ओर दूसरे पट्ठो से अलील करता रहे उर्दू रोज़मर्रा में लत्जत्र अलल बदेर और अलल टप बोला जाता है जिसका मफुम बेसूध बिछड़ा और बग़ैर समझा काम या बेतुका अमल होता है।
अलील करना (क्रिया):– देखो अटकना।
अनारा (पु0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद थक रंग सुर्ख़ पर या ऑखों का मुर्ग़।
अन्डोसी (स्त्री0):– बार आवर अण्डे देती हुई या अण्डे देने वाली मुर्गी वगैरह वो मुर्ग़ी जो अण्डे देने की दम्र पर आ गई हो।
अन्नी (स्त्री0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ के पेर का कॉटा जो नौजवानी पर निकलना शुरु होता है। और बढ़कर नेजे की अन्नी की शक्ल हो जाता है यही उसकी वजअ तसमियॉ है (मारना) मुर्ग़ का अन्नी से हरीफ़ पर हमला।

औलाँग/ओलंग (पु0):– बदनसला या बेमेल नस्ल का मुर्ग़ उर्दू रोज़मर्रा में एक लत्ज़ ओला बोला जाता है जिसका मफ़ूम बेमेल या बेजोड़ होता है।
उदाहरण– पहले पहल मेज कुर्सी पर बैठकर खाना बहुत ओलो मालूम होता था।
उदाहरण– ऊँची ऐड़ी का जूता पहनकर चलना उल्लू मालूम होता था।
ओंडॉ (पु0):– घोघा, पोटा मुर्ग़ वगैरह की दाना पानी भर लेने की पटोली। जो मददे के बजाए गर्दन के नीचे सीने के सामने होती है।
उदाहरण– मुर्ग़ को लड़ाने से पहले उसका ओंडॉ साु कर लिया जाता है।
एक पानी करना (क्रिया):– देखो पानी करना। पानी लत्ज़ पाली का इस्तलाही तल्लफुज़ हे जिससे मुराद मुर्ग़ को वक़्त मुर्कररा के लिए पाले में सिर्फ एक मरतवा लड़ाना या झड़पाना जिससे कतई हारजीत न हो और फिर हटा लेना। एक मरतबा के मुक़ाबले के लिए पाले में छोड़ना।
बारआवर (पु0/स्त्री0):– 1– अण्डो पर आई हुई मुर्ग़ी देखो अन्डोसी।
2– मुर्ग़ी के जिस्म में अण्डे बनने या परवरिश पाने की थैली या नाल।
बाजारी (स्त्री0):– मुर्ग़ बाज़ो के इस्तलाह मुराद भूरी रंगत की सफेद या – बारीक चित्तीदार मुर्ग़ी वग़ैरह। मुर्ग़ बाज़ो में यह क़िस्म बहुत मशहूर है। परों की रंगतो के लिहाज़ से सुर्ख़ बाजारी। स्याह बाजारी वगैरह नाम मशहूर है।
बाज खड़ा (पु0):– बाखला (बारखला) सुर्ख़ व सफेद रंग के मिले जुले परों का मुर्ग़ वग़ैरह या दो रंगो के परो का मुर्ग़।
बछाना/बाछियाना (पु0):– 1– लड़ाई में मुर्ग़ का अपने हरीफ़ के पर चोंच या अन्नी मासा जिससे ज़ख़्म पड़ जाए।
2– मुर्ग़ के जबड़ा पकने की बीमारी।
बाखला/बारखला (पु0):– देखो बाज़ खड़ा।
बाण (स्त्री0):– जाफरी कुल कुल मुर्ग़ियों के बन्द करने का जाल।
बाज़ी (स्त्री0):– खेल मुराद मुर्ग़ के लड़ाने का खेल (बुदना) मुर्ग़ लड़ाने का क़ौल व करार करना।
बाूजबार/बॉझबार (स्त्री0):– मुर्ग़ी के जिस्म में अण्डे बनने की थैली या नाल जो किसी ख़राबी की वजह से सिकुड़ कर बेकार हो गई हो और उसमें अण्डे के नथवे को परवरिश करने की काबिलियत न रही हो। (होना)

बेड़ी करना (क्रिया):– लड़ाकू मुर्ग़ को अन्नी मरने से रोकने के लिए उसके पेरो में डेला बन्द डालना जिससे वो चल फिर तो सकें लेकिन हरीफ़ पर अन्नीन मार सके। या हमला न कर सके।
जफल पायी (स्त्री0):– अन्नी से हरीफ़ पर हमला करने के लिए मुर्ग़ का उल्टे कदम पीदे हटने का अमल (करना) हरीफ़ पर कुव्वत से हमला करने को दो तीन कदम पीछे हटना मैदान करना।
बिछुआ/बिछुवे (पु0):– मुर्ग़ की एक नस्ल का नाम।
बहसना (क्रिया):– झड़पना लड़ने के वक़्त अन्नी मारने से कब्ल मुर्ग़ो का आमने सामने होकर दो दो चोचों करना। खेदालना चोंचे मिलाना जिस ताह पलवान हाथ मिलाते है।
बदगोश्त (पु0):– वो मुर्ग़ जो गोश्त फूलने से मद्दा हो जाए।
लग़बग़ाना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो इस्तलाह मुराद मुर्ग़ वग़ेरह का मस्ती लड़ाई के वक़्त गर्दन के पर फूल कर गुनगुनी आवाजा निकालना।
लबग़ी (स्त्री0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ के जबड़े के नीचे दाढ़ी की तरह लटकी हुई सुर्ख़ खाल।
बगबगी (स्त्री0):– बग़बग़ी का दूसरा तल्लफुज़ देखो बग़बग़ी।
बल करना (क्रिया):– हमला करने से पहले मुर्ग़ का हरीफ़ के सामने तिरछा होकर कतराते हुए आना।
बोल पड़ना (क्रिया):– लड़ते हरीफ़ के काटने की मार से मुर्ग़ा का चीख़कर मुँह फेर देना। जिस तरह पहलवान चीं बोल देता है। मुर्ग़ बाज़ मुर्ग़ के इस तरह चाख़ मारने को इस्तलाहन बोल पड़ता है।
उदाहरण– हरीफ़ की अन्नी की मार की ताब न लाकर मुर्ग़ बोल पड़ा।
बूदा मारना/बोन्द मारना (क्रिया):– लड़ाई में हरीफ़ के मुँह या कलग़ी पर मुर्ग़ का चोच मारना या चोंच मारकर गोश्त नोचना।
बहिंगम (पु0):– वो मुर्ग़ जिसका ताज मामूल से बड़ा सीधा पतला कंगूरेदार मसलटेनी मुग़्र के हो और लोलकियॉ नीचे लटकी हुई हो।
पाखट (पु0):– दो वर्ष से ज्यादा उम्र का मुर्ग़ उतरी हुई उम्र का बुढ़ा मुर्ग़।
पाला (पु0):– मुर्ग़ और बेढ़ लड़ाने की जगह तफसील के लिए देखो वर्ज़िश खेल (ज़मीमा फसल दोम) (जीतना, हारना, लड़ना,मारना)।

पाली (स्त्री0):– पाले का इस्मेमुसग़र पालतू परिंदो के लड़ने का अखाड़ा। (करना, भरना) (करना, होना, बुदना, लड़ाना)।
पानी करना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इसतलाह मुराद वक़्त मुर्कररह पर मुर्ग़ो को सतान और दम लेने के लिए लड़ने से अलहैदा कर लेना दौरान लड़ाई में अगर हार जीत न हो तो दस मरतबा लड़ने से अलहैदा किसे जाते है। इस तरह अलहैदा करने को इस्तलाहन एक दो तीन चार तादस पानी करना कहते है। जैसे एक पानी होना दो पानी होना वगैरह लड़ने वाले मुर्ग़ो के सताने या दम लेने की मोहलत।
पतील गर्दन (पु0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद ऐसा मुर्ग़ जिसकी गर्दन लम्बी और पतली हो।
पट्ठा (पु0):– छः माह से एक साल तक की उम्र का नौजवान मुर्ग़।
पर भींच (स्त्री0):– एक बिमारी का नाम जिसमें बाजू के पर बैठ जाता है।
पुर कार नलियॉ (पु0):– मुर्ग़ बाज़ो और बेटर बाज़ो की मुशतरका इसतलाहन मुराद चौड़े बाड़ मजबूत और लम्बी टॉगो का पट्ठा या नर जो लड़ाने के काबिल हो।
परकुट (पु0):– मुर्ग़ बाज़ो और बेटर बाज़ो की मुशतरक इसतलाह मुराद नरम बदन और हल्के पैरा का मुर्ग़ या बेटर आमतौर से कम उम्र को कहा जाता है। जो पुख़्ताकार न हो।
पर गॉठना (क्रिया):– मुर्ग़ के परो को जो लड़ाई में ज़र्ब खाकर ज़ख्मी हो गये हो। सहारा देने को दूसरे परो में बॉधना।
परेल (पु0):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद घने परो और दुबले जिस्म का बटेर जो लड़ने से जी चुराये। तीतर और बटेरों की ज्यादतियों से दुबला और कमजोर हो जाता है।
पंचाल (स्त्री0):– मुर्ग़ या बटेर के माद्दे की ख़राब रतूबत या गन्दा माद्दा जो सहल से ख़ारिज हो। इस रतूबत के पैदा होने से जानवर लड़ने में मस्ती करते है।
पिंगा (पु0):– कजपा पंजे लोटा मुर्ग़ यानि जिसके पंजो की उॅगलियॉ फिरी हुई हो और चलने में अटकता हो। ऐसे मुर्ग़ की अन्नी की मार कमज़ोर होती है। फिर पंजे फिरी मुर्ग़ी पंगी कहलाती है।
पंगी (स्त्री0):– पंगा का इसमे मुअन्नस देखो पंगा।

फड़काना (क्रिया):– बाज़ी के मुर्ग़ का दिल बढ़ाने को कमज़ोर मुर्ग़ से बिठाना या दो दो चोंचे डालना। बाज़ी के लिए तैयार करना।
फड़ी देना (क्रिया):– देखो फड़काना।
फुलसिरा/फूलसिरा (पु0):– ताज के आगे और पीछे सफेद परो की चोटी रखने वाली नस्ल का मुर्ग़।
कुई करना (क्रिया):– पानी की फुहार से मुर्ग़ के परो को साफ करना या मुर्ग़ और तीतर बटेर वग़ैरह को नहलाना।
ताज (पु0):– देखो कलग़ी।
ताज ढ़ला मुर्ग़ (पु0):– कजकलग़ा मुर्ग़ वो मुर्ग़ जिसका ताज सीधा खड़ा रहने के बजाय एक तरफ को ढला हुआ यानि कज रहे। बाज़ मुर्ग़बाज़ अपने मुर्ग़ को कछ कलग़ा कहते है।
दाल मारना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के मुक़ाबले में आते वक़्त या मुस्ती के मौके पर मुर्ग़ का बाजू झड़पाना। बाजुओं को पर फुलाकर पर लटकाना।
तलिया (पु0):– देखो तमोलिया।
तहरीर (स्त्री0):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद बटेर के सर पर क़लग़ी का छोटा बारीक नियान जैसा के मुर्ग़ी के बच्चे के सए पर रहता है।
तड़ी (स्त्री0):– भ्ररा बढ़ावा हिम्मत अफ़ज़ायी शाबाश (देना) हरीफ़ से मुकाबले के लिए उभारना, उसकाना भर्रा देना भड़काना बढ़ावे चढ़ावे देना हिम्मत बढ़ाना।
तलवासना (पु0):– तलयाना (तलियाना) कफ़पायी मुर्ग़ के तलवे यानि पंजे के नीचे की गद्दी में गट्टा पेदा हो जाना यानि ख़ाल में स़ख़्त गॉठ पैदा हो जाना। चलने में तकलीफ देने लगे।
तलयाना/तलियाना (पु0):– देखो तलवासना।
तमोलिया (पु0):– तनलिया मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह में रंगत के लिहाजा से मुर्ग़ का नाम। ऐसा मुर्ग़ जिसकी गर्दन और पुश्त के पर सुनहरे और बाकी जिस्म के पर स्वाही माईल सुर्ख़ रंग के होते है।
तन पकड़ना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद दुबले मुर्ग़ का अच्छी गिज़ा खाने से मोटा होना। जिस्म पर गोश्त चढना।
तोबड़ी (स्त्री0):– रद्दा मुर्ग़ की चोंच पर चढ़ाने का डोरी या किसी ओर चीज़ का बनाया हुआ हल्क़ा (बनाना, चढ़ाना) मुर्ग़ की चोंच पर डोरी वग़ैरह का हल्का

चढ़ाकर बन्द रखना ताकि वो किसी चीज़ पर चोंच न मार सकें। और न कुछ खा सकें।
तर (स्त्री0):– मुर्ग़ बाज़ और बटेर बाज़ो की मुशतरक इस्तलाह मुराद भुरे रंग की बू दार रत्तबत जो मुर्ग़ या बटेर के खाली मद्दे से निकलने लगे।
उदाहरण– जब तक आने लगे तो फौरन चक्कभी (दाना) देना चाहिए वरना जानवर के बीमार हो जाने का अंदेशा होता है।
तेज़परा (पु0):– लड़ने में हरीफ़ के अन्नी मारने के बजाए पर माने का आदि मुर्ग़ जो उचक उचक कर बाज़ु झड़ पाए ओर मोर।
तीस ढ़ंका (पु0):– तीस मरतवॉ पाली जाता हुआ मुर्ग़ देखो ढ़ंका।
थुड़ कड़क (स्त्री0):– वो मुर्ग़ी जो ज्यादा दिन कुड़क न रहती और अण्डो पर न बैठती हो यानि बाक़ायदा अण्डे सेने के लिए काबिल न हो।
थल जोड़ा (पु0):– पुख़्ता उम्र के असील मुर्ग़ा मुर्ग़ी का जोड़ा जो खूब भरा हुआ हो जिनके अण्डो से बच्चे मज़बूत और अच्छे काड़ के निकलते हो।
थले (पु0):– असील मुर्ग़ा मुर्गी के पुख़्ता उम्र के जोड़े उम्दा ताव के जोड़े।
टापा (पु0):– खॉचा मुर्ग़ के बन्द करने का तिनको का बना हुआ दाबा देखो जिल्द सोम–4
टिण्डा (पु0):– मामूल से ज्यादा लम्बी नलियों का असली मुर्ग़।
टोटन (स्त्री0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद खोपरी और गर्दन की हड्डी का जोड़ या खोपड़ी की चूल जो लड़ाई में बेकल हो जाती है (टलना और जाना) खोपड़ी का जोड़ भड़क जाना यानि जोड़ में बल आ जाना (बिठाना जोड़ को सही करना)।
टेक (स्त्री0):– 1– मुर्ग़ का ऐसा ताज या कलग़ी जो घुघराई हुई हो।
2– कलग़ी के ऐतराफ सर का हिस्सा (मारना, पकड़ना और काटना) लड़ाई में मुर्ग़ का कलटी पर चोंच मारना।
टेकी (स्त्री0):– खप्पचियों का ढ़ाचा या अड़दार जिसके सहारे पाली में लड़ते हुए मर जाने वाले मुर्ग़ को थोड़ी देर के लिए खड़ा रखा जाता है। मुर्ग़ बाज़ मुर्ग़ के एहतराम के लिए अमल करते है ताकि हरीफ़ उसको जिन्दा समझ कर मरऊब रहे और उसको रगेदे नही।
टेकरईयॉ (पु0):– वो मुर्ग़ जिसकी कलग़ी घुमराई हुई हो यानि बलखाई घुड़ी नुमा हो।

टेनी (स्त्री0):– मुर्ग़ी का मामूल आम देशी नसल।
ठुकराना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ का मस्ती या हमले के मौक़े पर टॉग पर बाज़ू झड़पाना।
ठेक (स्त्री0):– लड़ाई की तकान दूर करने के लिए मुर्ग़ के जिस्म को सेक पहुंचाने का एक ख़ास किस्म का बनाया हुआ पट्टा।
जाफरी (स्त्री0):–ठाटर देखो भाड़।
जावा (पु0):– मुर्ग़ बाज़ो में मुर्ग़ो की एक नस्ल जावा मारुफ़ है। जो मशरिक़ी जज़ायर के किसी मुक़ाम या जावा से हिन्दुस्तान में आयी और इसी नाम से मशहूर हो गयी। इस नस्ल के मुर्ग़ा मुर्ग़ी खुबसूरत बड़े हाड़ और मुख़तलिफ़ रंगो के होते है। बाज़ उम्दा रंगतो की वजह से उनके हसबे ज़ेल नाम मशहूर हो गये है। फुलसरा, तलिया, तमोलिया, जलालाखॉ, चित्तला, चुनिया, चमेलियॉ, सब्ज़ा ताउसी, दुधिया, उन्नाबियॉ, खजूरिया, लखोरिया, मेहदिया, नूरी वग़ैरह।
जबड़ी बॉधना (पु0):– मुर्ग़ के टुटे हुए जबड़े की बंदिश करना या मरहम पट्टी करना।
जी छोड़ो (पु0):– कचियॉ, हिम्मत हारू वो मुर्ग़ जो हरीफ़ के मुकाबिल आने से कचियाए और मुॅह फेरे।
झालरा (पु0):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद ऐसा बटेर जिसके जबड़ो के नीचे परो के गुच्छे हो जो लड़ने वाला और उम्दा नसल होने की अलामत समझी जाती है।
झड़प (स्त्री0):– मुर्ग़ो की उचटती हुई लड़ाई जो आरपार हारजीत या मारमर की न हो। चलते फिरते की दो दो चोंचे (होना, करना)।
छड़ पाना, छड़पना (क्रिया):– मुर्ग़ो को दो दो चोंच लड़ना। ऊपरी लड़ाई कराना।
झल (स्त्री0):– झोन्झ और झोन्झर मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ का गुस्सा तेज़ मिज़ाजी (करना)।
चाबक पैरा (पु0):– हरीफ़ पर काटा मारने में फुर्तिला और जल्दबाज़ मुर्ग़ लड़ाने में चालाक और तेज़ मुर्ग़।
चित्ता/चतिया (पु0):– चितला किसी रंगत का ऐसा मुर्ग़ जिसके परो पर मुख़तलिफ़ रंग की चित्तियॉ हों। (देखो जावा)
चित्तला (पु0):– देखो चित्ता।

चढ़ी कुश्ती (स्त्री0):– पहल की लड़ाई जिसमें मुर्ग़ आगे बढ़कर हरीफ़ पर हमले में पहल करे और इसको पाछे हटाता चला जाए। (लड़ना)
चढ़ी कफ़ेल (स्त्री0):– हरीफ़ मुर्ग़ के सर पर अन्नी की मार मारना।
चक्कस (पु0):– बुलबुल बाज़ो की इस्तलाह मुराद बुलबुल के बिठाने का अड्डा जो अंग्रेजी हर्फ़ T (टी) की शक्ल का बना होता है।
चक्की (स्त्री0):– मुर्ग़ बाज़ो और बटेर बाज़ो की मुशतरक इस्तलाह मुराद मुर्ग़ या बटेर का माद्दा साफ होने के बाद देने की तक़्वी और हल्की गिज़ा देना।
चिंगपोटिया (पु0):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह में ऐसे बटेर को कहते है जिसकी तहरीर झालर और कंठ सब स्याह रंग हो इस सफात का बटेर अच्छी नस्ल का और खूब लड़ाकू शुमार होता है।
चिनौटियॉ (पु0):– ऐसा मुर्ग़ जिसकी लोलकियॉ सफेद हों। सफेद लोलकियों का झाबी नस्ल का मुर्ग़ा।
चुनियॉ (पु0):– देखो चित्ता इसको चीनी भी कहते है।
चौपड़बाज़ी (स्त्री0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह जो मुर्ग़ लड़ाने की एक शर्त होती है जिसमें हार पर चार मुर्ग़ देने कुबूल किये जाए।
चौपलका करना (क्रिया):– देखो दो पल का करना।
चूज़ा (पु0):– मुर्ग़ का तीन माह से पाँच माह की उम्र तक का बच्चा।
चुगड़ी (स्त्री0):– बुलबुल बाज़ो की इस्तलाह मुराद बुलबुल पकड़ने का एक किस्म का अड्डा जिसपर चिपकने वाला माद्दा लगा दिया जाता है जिससे बुलबुल के पंजे चिपक जाते है और वो इसपर बैठा रह जाता है।
चौकियॉ (पु0):– हरीफ़ के चारो तरफ फिरते हुए लड़ने वाला मुर्ग़।
चहका मारना (क्रिया):– लड़ाई हरीफ़ मुर्ग़ के मुँह पर झपटकर काटने की तेज़ जरब लगाना।
छुट्टी उड़ाना (क्रिया):– नौजवान मुर्ग़ को किसी बड़े मुर्ग़ से थोड़ी देर को भिड़ाकर लड़ने की मशक कराना हस्बे जरुरत दो दो चोचें करा लेना।
छुट्टी मारना :– लड़ाई में मुर्ग़ का अलग होकर या हट हट कर हरीफ़ के जिस्म पर हस्बे मौका जगह जगह जरब मारना।
छड़ (स्त्री0):– पूरी उम्र के मुर्ग़ का काटॉ या ख़ार जो पुरअंगल चका और पुख़्ता हो गया हो।
ख़ार (पु0):– देखो काटॉ।

खॉकी अण्डा (पु0):– पर से जोड़ा जगे बग़ैर दिया हुआ अण्डा जो कभी कभी बग़ैर नर की बहार पर आ कर देती है। ऐसे अण्डे से बच्चा पैदा नही होता है।
ख़शख़शे (पु0):– बटेर के मुॅह की बीमारी जो छालो की तरह हाती है।
ख़रशैद लड़ना (पु0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ का दो टुक और बेलॉग हरीफ़ को अन्नी मारना। खुली लड़ाई लड़ना जिसमें मार साफ मालूम हो।
दाल (स्त्री0):– मुखी अन्नी (काटॉ) निकलने की अलामत जो चने की दाल की शक्ल उभरा हुआ मालूम होता है। अन्नी का उभार।
दबोचना (क्रिया):– हरीफ़ मुर्ग़ को तले धर लेना ज़ोर कर लेना। हरीफ़ के ऊपर आकर उसको पर और पंजो में गॉठ लेना।
दड़बा (पु0):– फ़ारसी लत्ज़ दरबा का उर्दू तल्लफुज़ मुर्ग़ियों को बन्द करने की महदूद और महफ़ूज़ लगह।
दड़बे करना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद पाली में लड़ाने से क़ब्ल सालिस (मुर्ग़ की जोड़ी मुर्करर करने वाला) का जोड़ी को अपनी हिफ़ाज़त और निगरानी में रखना।
दड़बे दड़बे करना (क्रिया):– मुर्ग़ को दड़बे की तरह हॉकना या दड़बे में पहुॅचना।
दलबा (पु0):– हरीफ़ के मुक़ाबिल से मुॅह मोड़कर पाली से भागा हुआ मुर्ग़। वो मुर्ग़ जो लड़ते लड़ते भाग निकले (होना)।
दलबाना (क्रिया):– मुर्ग़ का दिल बढ़ाने को भागे हुए मुर्ग़ से भिड़ाना (मुक़ाबला करना)।
दम देना (क्रिया):– मुर्ग़ को गर्माने के लिए उसके फेफड़ो में फूॅक से हवा पहुॅचाना। धड़कन रोकना।
दो बाज़ (पु0):– चपरंग का मुर्ग़ यानि जिसके दोनो बाजुओं के पर सफेद और बाकी जिस्म स्याह सुर्ख़ या ज़र्द हो। इस रंगत की मुर्ग़ी दो बाज़न कहलाती है।
दो पलका करना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग के फफोटे को ऊपर उठाकर रेशम के तार से टॉका देकर बॉध देना ताकि ऑख न ढेप सके। लड़ने से जख़्मी होकर जब मुर्ग़ की ऑख बन्द होने लगती है। तो उस वक्त ये अमल किया जाता है और उसको दो पलका और चो पलका करना कहते है।
दहपनियॉ (पु0):– वो मुर्ग़ जो पाले में दस मरतवॉ उठाया गया हो ऐसा होना मुर्ग़ की बहादुरी की दलील समझी जाती है। देखो पानी करना।

दो दो चोंचे होना (क्रिया):– मुर्ग़ों को मामूली और थोड़ी देर के लिए झड़प होना। (करना)
धक (स्त्री0):– हॉफ या सॉस फूलने में जो मुर्ग़ को लड़ते लड़ते शुरु हो जाये (आना) मुर्ग़ का लड़ते लड़ते हाफने लगना। (छुड़ाना) मुर्ग़ के हाफने को रोकने की कोशिश करना।
डंका (पु0):– मुर्ग़ा लड़ाने की बाज़ी बदलने का ऐलान जिसके साथ मियाद का भी इज़हार होता है। यानि ऐलान के कितने दिन बाद पाली बॉधेगी या मुर्ग़ लडाये जयिगे (डालना) मुर्ग़ को मुक़ाबिले के लिए तलब करने को पाली में रुमाल डालना या निशानी रखना (मारना) मुर्ग़ की लड़ाई की बाज़ी बुधने का ऐलान करना।
दोल करना (क्रिया):– मुर्ग़ को पॉच पाली तक लड़ाना देखो पाली करना।
डेवड़ाना (क्रिया):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद बटेर को मुठियाना यानि मुट्ठी में पकड़कर हिलाते रहना जो मामूल से जरा तेज़ हो। ये अमल नई बटेर की वहशत खोने और उसको आराम करने के लिए किया जाता है। (देना) दम बढ़ाना हिम्मत बढ़ाना।
रिज/रुज (स्त्री0):– मुर्ग़ की जुएँ जो उनके परो में पड़ जाती है।
रद्दा (पु0):– देखो तोबड़ी (चढ़ाना)
रसभरा (पु0):– वो मुर्ग़ जिसको गठियॉ हो गयी हो और उसके बाजू के जोड़ मोटे और सख़्त पड़ गये हो।
रगेदना (क्रिया):– देखो पेशा पहलवानी लड़ाई में मुर्ग़ का हरीफ़ की कलग़ी चोंच में पकड़कर झिझोड़ना।
रूमाली डालना (क्रिया):– देखो डंका डालना।
ज़र्द लखेरियॉ (पु0):– स्याही माईल, सुर्ख़, ज़र्द झलकदार होती है। देखो जावा।
ज़री (पु0):– स्याही माईल ज़र्द रंगत का ग्लोदार मुर्ग़ जिसकी छाती के पर स्याह हों।
ज़ेर बन्दा (पु0):– वो मुर्ग़ जो लड़ने में सर की चोट बचाने को हरीफ़ के नीचे सर छुपाने की कोशिश करे या उसके कोटे के नीचे घुसे।
ज़ेर दुम्मा (पु0):– वो मुर्ग़ जिसकी दुम के पर मामूल से ज्यादा नीचे लटके रहे।
साल पलट (पु0):– वो मुर्ग़ जो एक साल का हो चुका हो और दूसरे साल में लगा हो या उम्र का साल पूरा हो जाने वाला मुर्ग़।

सब्ज़ा (पु0):– सब्ज़ी माईल ज़र्द रंग का मुर्ग़ जिसका सीना और पोटा स्याही माईल हों। देखो जादा।
सतरोजा डंका (पु0):– मुर्ग़ लड़ाने को पाली में लाने के लिए सात रोज़ की मियाद देखो डंका।
सख़्त परा (पु0):– वो मुर्ग़ जिसके पर मौटे और मामूल से ज़्यादा स़ख़्त हो।
सख़्त ख़ारा (पु0):– वो मुर्ग़ जिसके कॉटे अन्नियॉ मामूल से ज़्यादा सख़्त ओर तेज़ हों।
सुर्ख़ा (पु0):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद ऐसा बटेर जिसके पोटे के परों में सुर्ख़ रंगत की झलक हो ऐसा बटेर लड़ाकू समझा जाता है।
सूर्ख़ बाज़री (पु0):– देखो बाजरी।
सोतना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ की टॉगो और जिस्म की मलाई करना। तकान उतारने को मुर्ग़ के जिस्म को बार बार हाथ फेरना।
सिन्ताल और सेनाताल (पु0):– मुर्ग़ो की एक नस्ल का नाम जिसको बाज़ मुर्ग़ बाज़ सोनातोल कहते है।
स्याह (पु0):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद स्याह धारीदार बटेर जो कटीला समझा जाता है।
सीप (स्त्री0):– मुर्ग़ और आम पंरिदों के सीने की हड्डी जो सीप की शक्ल के मशाबा होता है और यही उसकी वजअ तसमियॉ है।
सीपी नोकिया (पु0):– वो मुर्ग़ जिसके सीने की हड्डी का जोड़ मामूल से बड़ा हो और बाहर को निकला हुआ दिखायी दे। या जिसके सीने की हड्डी जो इस्तलाह सीप कहलाती है। मामूल ये ज्यादा बड़ी और बाहर को निकली हुई हो।
शुरज़ा (पु0):– देखो केसरी।
साफ़ा (पु0):– जुल्लाब को मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह में साफ़ा यानि पेट साफ़ करने वाली दवा कहा जाता है और लड़ाने से पहले मुर्ग़ बटेर और बुलबुल वग़ैरह को दिया जाता है।
ताऊसी (पुव):– लम्बी गर्दन उठी हुई चौड़ी दुम और सुर्ख़ व सुनहरे परों का मुर्ग़।
उन्नबिया (पु0):– स्याही माईल सुर्ख़ रंगत का मुर्ग़।
फर्श दुम्मा (पु0):– फैली और नीचे को झुकी हुई दुम का मुर्ग़।
क़ायम करना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद लड़ाई में परेशान हाल हुए मुर्ग़ को दम लेने के लिए पानी से अलहैदा करना। सूस बनाना।

कुरैन करना (क्रिया):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद बटेर को राम करने के लिए मुठियाने या बटेर को हिलाने और उसकी वहशत होने की मुठ्ठी में पकड़कर हिलाते रहना।
कशक़ा (पु0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ के माथे पर कलग़ी के उभार की अलामत।
कुफ़ल (पु0):– मुर्ग़ की चोंच का निचला हिस्सा जो ऊपर के नुकीले हिस्से में बैठ जाता है।
कुफ़लबाज़ (पु0):– वो मुर्ग़ जो हरीफ़ के चोंच के नीचे कॉटे का आदि हो और लड़ाई में हमेशा उसी जगह को पकड़ता हो।
कॉटा (पु0):– 1– देखवानी देखो अन्नी (चढ़ाना) मुर्ग़ की अन्नी पर हिफ़ाज़त को लोहे का खोल चढ़ाना।
2– एक मर्ज़ का नाम जो दुम की जगह रीढ़ की हड्डी की नोक पर बशक्ल सुर्ख़ दाने का होता है और जानवर को हलाक कर देता है (निकलना)।
कारीबाज़ (पु0):– लड़ाई में हरीफ़ की ऑख पर अन्नी मारने का आदि मुर्ग़ हमेशा हरीफ़ की ऑख पर चोट मारता है।
कान्धा मोड़ा (पु0):– वो मुर्ग़ जो एक बाज़ झका कर चलता हो या चलने फिरने ओर लड़ने में एक बाजू झुकाये रखता हो।
कथेल (पु0):– कथ्थई (सुर्ख़, माईल भुरा) रंगत का मुर्ग़ किसी और रंग के हों।
खुड़ दुम्मा (पु0):– वो मुर्ग़ जिसकी दुम की परों की नोकें सीधी ऊपर को उठी हुई हो।
खेदा (पु0):– बुलबुल और बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद लड़ाकू लपेटू बुलबुल या बटेर जो हरीफ़ के पीछे पड़ा रहे और उसको भागने भी न दे। (लेना) किसी के दरपी होना। पीदे पड़ना या झगड़ना।
खेरा (पु0):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद गहरे फ़ाकतेई रंग का बटेर जो अच्छी नस्ल में शुमार होता है।
खीचबन्द (स्त्री0):– 1– किसी फ़ितरी ऐब को छुड़ाने के लिए लड़ाई के मुर्ग़ को कुछ दिनों तक बन्द रखने का अमल।
मुर्ग़ के पैरों के जोड़ो के पट्टे खीच जाने की बिमारी एक किसम की गठिया (होना) पाली में हरीफ़ के सामने मुर्ग़ का दिवान वार भागते फिरना (दैहशत पर आना)।

गलाबाज़/गुलबाज़ (पु0):– वो मुर्ग़ जो हरीफ़ के गले पर अन्नी मारने का आदि हो। हरीफ़ के गले पर अन्नी मारने वाला मुर्ग़।
गलवा (पु0):– बग़बग़ी यानि चोंच के नीचे गर्दन या गले से कानो तक बारीक परों के गच्छेदार मुर्ग़।
गौन्दा (पु0):– बुलबुल के खिलाने की नर्म ग़िज़ा जो आमतौर से भुने हुए चने की आटे की होती है और पानी या घी मिलाकर धुँध ली जाती है और यही उसकी वजअ तसमिया है।
घागस (पु0):– ऊँचे हाड़ और जसीम नस्ल का मुर्ग़ नर्म घने और खुशरंग होते है। मादा अण्डे ज्यादा देती है।
घड़ फड़काना (क्रिया):– मुर्ग़ के पट्ठे को अपनी जगह पर लड़ने का मशक करना कमजोर मुर्ग़ के साथ मुठभेड़ करना।
घोगा (पु0):– संगदना या पोटा देखो ओडा।
लाल होना (क्रिया):– देखो कोफ़ती और कोफ़ती होना। कोफ़ती मुर्ग़ के ज़ख़्म फरेरे होना।
लाम उड़ाना (क्रिया):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ को सात पाली कराके पाली से उठा लेना।
लखोरिया (पु0):– लाखा, लखिया, लाखी रंगत का मुर्ग़ देखो जावां।
लगोट दुम्मा (पु0):– 1– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद वो बटेर जिसकी दुम बहुत छोटी और दोनो कोने के बीच में दबी हुई हो।
2– मुर्ग़ बाज़ ऐसे मुर्ग़ को कहते है जिसकी दुम के दोनो तरफ़ छोटे और घने पर हो जो बड़े परो को घेरे हुए मालूम हो।
लोट घर (पु0):– मुर्ग़ो को रेत में लेटने को बनाई हुई जगह जहाँ पो अच्छी तरह लेट कर रेत से परो को साफ़ कर सकें।
बल्की (स्त्री0):– मुर्ग़ के कान की जगह लटकी हुई नर्म खाल मान्निद इंसान के कान की लोके।
लहर जाना (क्रिया):– लड़ाई में मुर्ग़ का हरीफ़ की मार खाकर चकरा जाना। थर्रा होना।
कटैत (पु0):– झिल्ले मिजाज़ का चोच मारने और कॉटने का आदि मुर्ग़ जो लड़ाई में हरीफ़ को चोंचे मारता और कॉटता हो।
कजपा (पु0):– देखो पंगा।

कजकटिया (पु0):– वो मुर्ग़ सिकी अन्नियॉ मामूल से ज्यादा ख़मदार यानि हलाली शक्ल की हो।
कजकलग़ा (पु0):– देखो ताज ढ़ला वो मुर्ग़ जिसकी कलग़ी एक तरफ को लटकी हुई हो।
कचियाना (क्रिया):– देखो जी छोड़ना थड़ दिला होना, हिम्मत हारना, दिल बोदा होना, मुक़ाबला करने से हिचकिचाना, पीछे हटना।
कुरेज़ (स्त्री0):– बुलबुल और बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद बुलबुल या बटैर की पर आने पर झाड़ने की हालत गोशागिरी की हालत (करना)।
कुड़क (स्त्री0):– अण्डे का झोल देकर फ़रिग होने वाली मुर्ग़ी या अण्डे सीने वाली मुर्ग़ी (होना)।
कुड़क नाथ/कुड़क नाक (पु0):– यक रंग स्याही रंगत की नसल का मुर्ग़। यूरोपीय हिन्द के इलाके की एक नस्ल जो रंगत में बिलकूल स्याह होती हो और इस वजह से कुड़क नाथ (कड़क नाग) कहलाने लगी।
कफ़ पायी (स्त्री0):– देखो तिलवन्ना।
क़लग़ी (स्त्री0):– मुर्ग़ के सर का खुदरती ताज़ जो कन्गूरे नुमा उभरी हुई सुर्ख़ रंग खल का होता है और इस्तलाहन ताज और कलग़ी कहलाता है।
कलका कान्टियॉ (पु0):– असली मुर्ग़ की एक नस्ल जिसकी इलमियॉ (कॉटे) काने होते है और मुर्ग़ियों के भी कॉटे निकलते है।
कलगर्दनी (पु0):– काली गर्दन और सर वाली नस्ल का मुर्ग़।
कूलंग (पु0):– देखो असील मुर्ग़।
कंठ (पु0):– बटेरबाज़ो की इसतलाह मुराद ऐसा बटेर जिसकी गर्दन में स्याही माईल परो का हल्का होना।
कवल दुम्मा (पु0):– कवल के फूल के मान्निद घने और घेरदार फैले हुए परों की दुम का मुर्ग़।
कनेल (स्त्री0):– कनपअी की चोट (मारना) लड़ाई में मुर्ग़ का हरीफ़ की कनपटी पर अन्नी मारना जिसको मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह में चढ़ी कनेल मारना कहा जाता है।
कोफ़ती (पु0):– मुग़्र बाज़ो की इसतलाह मुराद वो मुर्ग़ जो लड़ाई में बहुत ज्यादा ज़ख़्मी हो गया हो या जिसके मुॅह पर ओर ऑखों पर कारी ज़ख़्म आये हो।

कोख (स्त्री0):– बटेर बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुँह की भाप जो चोट खाई हुई बटेर के सर और गर्दन वग़ैरह पर दी जाए। (देना)
कोल्हू (पु0):– मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद वो मुर्ग़ जिनका पिछला धड़ मामूल से ज्यादा मोटा हो गया हो और इन्नी मारते वक़्त गिर पड़े या उल्ट जाए।
केसरी (पु0):– ज़फरानी रंगत की मुर्ग़ देखो जावा।
खॉचा (पु0):– देखो टापा।
खजूरिया (पु0):– वो मूर्ग़ जिसके बाजू सफेद सर ज़र्दी माईल सुर्ख़ और बाक़ी जिसम के पर स्याह या।
मतीन (पु0):– बटेर बाज़ो की इसतलाह मुराद यक रंगा और कंठ का बटेर।
मुठभेड़ (स्त्री0):– मुर्ग़ के पट्ठे को कमजोर मुर्ग़ के साथ मुक़ाबला कराने का अमल करना कराना होना।
मुहाल/मोहाल (पु0):– तीख़ा गुससेवर और कटते मुर्ग़ (स्त्री0) मुर्ग़ बाज़ो की इस्तलाह मुराद मुर्ग़ की सुस्ती की हालत या सुस्ती (पर आना)।
मुर्ग़ बाज़ (पु0):– खेल तफ़री और लड़ने को मुर्ग़ पालने वाला।
मुर्ग़ बाज़ी (स्त्री0):– मुर्ग़ लड़ाने का खेल।
मुर्ग़ लगाना (क्रिया):–मुर्ग़ को लड़ाने के लिए जोड़ा मिलाना। मुर्ग़ को दूसरे मुर्ग़ से लड़ने के लिए छोड़ना।
मसील (पु0):– ठोस और गठे हुए बदन का मोटा और पूरी उम्र का बटेर या मुग्र जो जिसम का भारी जेकिन लड़ने में पुख़्ताकार होता है। आमतौर से बड़ी उम्र के मुर्ग़ या बटेर को कहते है जो पूरे कद और जिस्म का होता है।
मुश्त माल करना (क्रिया):– देखो सोतना।
मक्खी (स्त्री0):– मुर्ग़ की अन्नी का उभार देखो दाल।
मकवा मुखा (पु0):– मको के दाने की मान्निद सुर्ख़ ऑखों वाला मुर्ग़ और यही उसकी वजअ तसमियॉ है।
मक्खान (पु0):– नौजवान मुर्ग़ जिसके ख़ार (अन्नी) न निकले हो या काट दिये गये हो।
मोठ देना (क्रिया):– बटेर की बैहशत खोने ओर उसको राम करने के लिए मुट्ठी में पकड़ कर थोड़ी देर हिलाते रहना। (लगाना)
मेंहदिया (पु0):– गुलअनार की नौ बगत के परो का मुर्ग़।

नकपोटिया/नकपोटा (पु0):– वो मुर्ग़ जिसके चोच के ऊपर नाक के सुराख़ और मामूल से बड़े हों। इस पर हरीफ़ की चोच लगने से मुर्ग़ मुँह फेर लेता है या कचिया जाता है।
नूरी (पु0):– नकत्ररी, रुपेला, यकरंग सफेद मुर्ग़।
नोक बॉधना (क्रिया):– मुर्ग़ की ज़ख़्मी चोंच का मरहम पट्टी करना बंदिश करना।
हाथ खाना (क्रिया):– लड़ने मु मुर्ग़ का हरीफ़ के बाजू के पर की चोट ऑख पर खाना जिससे ऑख फूट जाए।
हाथ मारना (क्रिया):– लड़ाई में मुर्ग़ का अपने हरीफ़ की ऑख पर बाजू का पर मारना और ऑख फोड़ देना।
हाड़ (पु0):– बदन का ढ़ाचॉ जिस्म का उठान।
उदाहरण– असील मुर्ग़ आमतौर से ऊँचे हाड़ के होते है।
पेशा कबूतर बाज़ी
आन्टा (पु0):– फड़ी कबूतर बाज़ो की इस्तलाह मुराद कबूतर के घर ऊपर घुमेरी उड़ान जो साधने को की जाए। (देना) कबूतरो को उड़ाकर बुलाना और लौटाना। चक्कर देना।
उड़ान कबूतर/उड़न कबूतर (पु0):– 1– वो कबूतर जो बाड़ी के लिए उड़ने को सधाये जाए।
2– वो कबूतर जिसकी पखाज़ बहुत बुलन्द और देरपा हो।
असील कबूतर (पु0):– यक रंग के कबूतर जिसमें दूसरे रंग के पर न हों। ऐसे काबूतर का असल रंग नीला होता है और आमतौर से काबूली कहलाते है।
अलबग़ा (पु0):– कबूतर के दिल की बीमारी जिसके दौरे से वो मर जाता है या बेहोश होकर गिर पड़ता है और रोज़ बरोज़ सूखता जाता है।
बब्रा/बब्रे (पु0):– रट्टा नस्ल के कबूतर की एक नायाब किस्म जो आमतौर से चित्तीदार सब्ज़रंग होता है। देखो रट्टा।
बदी (स्त्री0):– कबूतर के तालू या हलक़ की एक बीमारी का नाम जिससे तालू में ज़ख़्म पड़ता और खाना पीना छूट जाता है। (होना)
बग़बग़ा/बग़बगे़ (पु0):– फूले हुए परो की गर्दन वाला कबूतर या वो कबूतर जिसकी गर्दन पर परो का गुच्छा हो।
बमना/बमने (पु0):– शिराज़ी कबूतर के मेल से पैदा हुई वुई दोगली नस्ल का कबूतर देखो शिवाज़ी फिकरा – 2

पालतू कबूतर (पु0):– वो कबूतर जो घरेलू जानवरों की तरह इन्सानों में रहने सहने लगें।
पामूज़ (पु0):– फुलपेरा वो कबूतर जिसके पंजो और पेरो पर पर हो यानि पर निकलते है।
पतवांसा (पु0):– जाल कुलक़ल) में कबूतरो का बैठने का अड्डा (बॉधना)।
पटीत (पु0):– 1– सफेद और किसी दूसरे रंग के कबूतर के मेल से पैदा हुआ कबूतर जो आमतौर से दो रंगा होते है।
2– दूरंगा बनाया हुआ कबूतर इस तरह के पट्ठे के असल परो को बार बार उखेड़ा जाता है। दो चार मर्तवा के इस अमल से सफेद पर निकल आते है (करना, बनाना)।
पर कैच (पु0):– बाजूओं के पर कतरा कबूतर। ये अमल आमतौर से नए और बग़ेर संदेह कबूतर के साथ किया जाता है।
पलकी (पु0):– देखो शिराज़ी।
पल्ला (पु0):– वो कबूतराबाज़ो की इस्तलाह मुराद कबूतर की एक लम्बी उड़ान करना।
पनझिनी/पैख़बनी (स्त्री0):– कबूतर के पैरो में डालने का साजन देखो झॉजन जिल्द – 4
पिया (स्त्री0):– कबूतर की रीढ़ की हड्डी की बीमारी जिससे वो कुबरा हो जाता है और किसी बाज़ी के काम का नही रहता।
फड़कावॉ (पु0):– मुकाबले के कबूतरो के साथ उड़ान में मुठभेड़ (देना, खाना)।
फडी/फडियॉ (स्त्री0):– झपका नए कबूतरो को बाडी के लिए उड़ना सिखाने को इब्तिदा में भड़काकर उड़ाने का अमल जो मुॅडेर और छत तक रहे। (देना, खाना)
फुलपेरा (पु0):– देखो पामेज़।
फुलसरा (पु0):– वो कबूतर जिसके सर पर परो की चोटी या कलग़ी हो।
तालमेल (स्त्री0):– बाज़ी के कबूतरो का उड़ान में सैदी कबूतरो में मिल जुल जाना (मिलना) बाज़ी के कबूतरों के उड़ाकर सैदी कबूतरों की तरह पढ़ाना और मिलाना।
तावा (पु0):– बाज़ी के कबूतरों की एक लम्बी पचााज जिसमें एक चक्कर लगाकर लौट आए। (देना, काटना, खाना) उड़ान में चक्कर काटनॉ घर के ऐतराफ़ उड़ना या उड़ान।

तुकमा (पु0):– कबूतर की एक बीमारी का नाम जिससे उसके जिस्म पर गॉठे पैदा हो जाती है ये बीमारी बाजरा खाने वाले को गेहू खिलाने से होता है।
तोग़ा (पु0):– शिराज़ी कबूतरो की एक किसम का नाम देखो शिराज़ी।
तयआशना (पु0):– घर या अपने मुकत्राम को पहचानने वाला कबूतर जो कही छोड़ा जाए तो सीधा अपने घर आता है।
तयपलट (पु0):– 1– वो कबूतर जिसको अदल बदलकर कई जगह रखा गया हो। ऐसा कबूतर भागकर दूसरी जगह नही जाता या अपना मुक़ाम भूल जाता है। 2– मादा के साथ नर की दाना बदली।
तैरना (क्रिया):– कबूतर का मस्ती में कबूतरी के आगे पीदे घुमना।
तेज़ पर (पु0):– बहुत ऊॅचा और तेज़ उड़ने वाला कबूतर।
टैनी (पु0):– गोला बाज़ी के कबूतर जो हमरंग उड़ने में अच्छे और ताबा हुक्म रहते है। इस्तलाहन टहनी और गोले कहलाते है।
जाल (पु0):– देखो जाफरी कुलकल (खड़ा करना)।
जंगली कबूतर (पु0):– वीराना पसन्द कबूतर जो कभी घरेलू नही बनता, अगर पकड़ कर रखा जाए तो चन्द दिन में मर जाता है। ये अमूमन नीले रंग का होता है और हर जगह पाया जाता है।
झपका (पु0):– देखो फड़ी।
छल (स्त्री0):– कबूतर बाज़ो की इस्तलाह मुराद कबूतर की भूख बेकरारी तिलमिलाहट (करना, होना)।
चप (स्त्री0):– दो रंगा कबूतर जिसके बाजू के सफेद ओर बाक़ी जिस्म के पर सुर्ख़ या किसी और रंग के हों। आमतौर से सुर्ख़ और सफेद होता है। सब्ज़, लाल और ज़र्द रंग का चप भी होता है।
चक्खी (स्त्री0):– म़क्क़वी रिज़ा जो बाज़ी कबूतरों को बाज़ी से पहले खाली पेट में दी जाए। (देना)
छपका (पु0):– सैदी कबूतर को पकड़ने का मुसलसनुमा चौकटे का जाल (मारना)। छतरी (स्त्री0):– (स्त्री0):– पालतू कबूतरो का अड्डा जो खपच्चियों की एक चौकोर जालीदार टरटी को एक लम्बे बॉस के सिरे पर बॉधकर खड़ा कर दिया जाए।
छूट (स्त्री0):– बाज़ी के कबूतरों को उड़ाने की इब्तेदायी मशक (छूट है) देखो झपका और फड़ी।

छेपी (स्त्री0):– कबूतर उड़ाने की झण्डी की शक्ल बनायी हुई छड़ जिसको हिलाकर कबूतर बाज़ कबूतरों को इशारे देता है (हिलाना)।
ख़ाल (पु0):– चप कबूतर के ख़िलाफ़ बाजू के सुर्ख़ और बाक़ी जिस्म के सफेद परो का कबूतर देखो चप।
ख़मीरी (पु0):– असील नस्ल के कबूतरो की एक किस्म जो हिन्दुस्तान में नायाब बल्कि नापैत हो गया है।
खुर्दनुका (पु0):– काबूली कबूतरों की एक किस्म जो छोटी चोच के और उड़ने में कच्चे होते है देखो असली।
दा दाना (पु0):– बाज़ी के कबूतरों की किसी हालत के सुधारने के लिए जाल में बन्द रखकर दाना खिलाने के तरीके कस इस्तलाही नाम (छूटा है)।
दो पलका (पु0):– दो रंग (चप) कबूतर रट्टा कबूतरों की एक किस्म का नाम देखो रट्टा।
दो तावा (पु0):– देखो तावा सैदी कबूतर के साथ दो चक्कर कॉटने वाला कबूतर।
रट्टा (पु0):– कबूतर बाज़ो की इस्तलाह मुराद नामावर कबूतर जो दराज़ कद और लम्बी चोच के होते और नामाबरी के लिए सधाये जाते है। रंगतो के लिहाज़ से उनके नाम नफ़्ते बबरे और दो पलके (दो बाज़) मशहूर है (लत्ज़ रट्टा की वजअ तसमिया और उसका अता पता कबूतर बाज़ो से मामूल न हो सका।
रख (स्त्री0):– कबूतर के मद्दे की एक बिमारी का नाम जिससे उसका दाना खाना छूट जाता है। इस बिमारी का दूसरा नाम रंज पोटा है जो बदहज़मी से पेदा होता है।
रंजपोटा (पु0):– देखो रख।
सब्ज़ा (पु0):– जुमरुदी रंगत के परो का कबूतर।
शिराज़ी (पु0):– दोग़ला, दो मैली नस्ल का कबूतर जिसका रंग अमूमन अन्नाबी या ताखी होता है इस दोग़लो मु मुख़तलिफ़ रंग के कबूतर होते है जो इस्तलाहन तोग़ा, पलकी और बमने के नामों से कबूतर बाज़ो में मशहूर है।
सिबलाही (पु0):– नये कबूतरों की बाज़ी के लिए तैयार करने के लिए बाहमी ताल्वुन करने वाले दो कबूतर बाज़ जो ये मुहायदा कर लेते है इस ज़माने में एक दूसरे का पकड़ा हुआ कबूतर वापस दे दिया करेंगे।

सैद (स्त्री0):– कबूतर बाज़ो की इस्तलाह मुराद कबूतरो की बाज़ी यानि उड़ने में एक कबूतर बाज़ के उड़ने की दूसरे कबूतरबाज़ के कबूतरों के साथ ताल मेल और फिर बुलाने पर अपने अपने मुकाम को वापसी।
उदाहरण– आज बादशाही कबूतरो की लाहौरियों के कबूतरो से सैदा है। इस तालमेल को इस्तलाहन कबूतर लड़ना कहा जाता है देखो तालमेल इस तालमेल को इस्तलाहन कबूतर लड़ाना कहा जाता है देखो तालमेल (करना, बुदना)।
सैदी (पु0):– 1– कबूतरबाज़ो की इस्तलाह मुराद मुख़ालिफ़ कबूतर बाज़, कबूतर लड़ाने वाला।
2– दूसरी जगह का कबूतर जो ग़ैर कबूतरो के साथ उड़ान में तालमेल करें।
कुलकुल (स्त्री0):– कुलकुल जाल जाफ़री देखो जाफ़री।
कुमरी (स्त्री0):– कबूतरों की किस्म का एक परिन्दा जो फ़ाख़्ता के बराबर और आमतौर से सफेद रंग होता है। इसकी खुश अलहाफ़ी मशहूर है।
काबरा (स्त्री0):– काबुली का ग़लत तल्लफुज़ देखो असील।
काबक (स्त्री0):– कबूतरबाज़ो की ख़ास इस्तलाह मुराद कबूतरो को बन्द करने का लकड़ी का बना हुआ घर जो ख़ास कबूतरो के लिए कहलाता है।
काबली (पु0):– असील कबूतर की एक किस्म देखो असील।
कबूतर (पु0):– 1– हर जगह पाया जाता है। एक ख़ास किस्म का कूबतर नामबरी के लिए पाला और सधाया जाता था। मुग़लो के अहद में हिन्दुस्तान में कबूतरो को बाज़ी के लिए उड़ाना सिखाया जाने लगा। किस्मो और रंगो के लिहाज़ से कबूतर बाज़ो में उसके हस्बे जैल नाम मशहूर है। अव्वल जंगली जो कभी अहली नही बनते।
2– पालतू इनमें एक तेज़ पखाज़ दूसरे घरेलू होते है। तेज़ बाज़ कबूतरो में एक किस्म ख़ेरे और दूसरे नसावरे कहलाती है। बाज़ी के कबूतर गोले और टैनी के नाम से मशहूर है। घरेलू कबूतरो में लक़ा, लोटन, मूड़ी और याहू किस्में बहुत पसंद दीदा है। (उठना) कबूतर बाज़ो की इस्तलाह में बाजी के लिए कबूतरो का अपने मुक़ाम से उड़कर सैदी की तरफ जाना।
कबूतर बाज़ी (स्त्री0):– कबूतरो का खेल मुराद कबूतरो को उड़ाकर मुख़ालिफ़ के कबूतरो से तालमेल करना। और ग़ैर कबूतरो को घेर लाना सिखाना।
कुश्ती (स्त्री0):– कबूतर बाज़ो की इस्तलाह में सैद को कुश्ती भी कहते है देखो सैद।

कुलकुल (स्त्री0):– कुलकुल का दूसरा और आम तल्लफुज़ देखो कुलकुल।
कुन्द/कुन्दे (पु0) कबूतरबाज़ो की इस्तलाह मुराद कबूतर का बाजू (जोड़ना) कबूतर का ऊँची पख़ाज़ से नीचे आने के लिए बाजू सिकोड़ लेता या बन्द कर लेता ताकि जल्द नीचे आ जाए कभी दुश्मन के हमले के वक़्त ऐसा करता है।
कूकू (स्त्री0):– कबूतर बाज़ की आवाज जो वो कबूतरो को उड़ने के वक़्त ख़ास इशोर के लिए निकलता है। (करना)
ख़र्रा/खुर्रा (पु0):– कबूतर की खॉसी की बिमारी (करना)।
खड़ी/फड़ी (स्त्री0):– कबूतरो को सर के ऊपर (घर के ऊपर) तावा देने का तरीका देखो तावा और फड़ी। बाज़ कबूतर बाज़ खड़ा तावा कहते है।
ख़ेरा/ख़ेरे (पु0):– बुलन्द पख़ाज़ कबूतर जो अपनी खुशी अकेला उठाता हैं (उड़ता है) और घर की सैद में ऊपर उड़ता चला जाता है। मादा को देखकर कंधे जोड़ लेता है और एक दम नीचे आ जाता है।
गरदान (पु0):– घर को खुब पहचानने और हर जगह फिरकर घर पर वापस आने वाला कबूतर। घर न भूलने वाला।
गोला (पु0):– तहनी बाज़ी के कबूतर जो हर रंग खूब उड़ने वाले और हुक़्म मानने वाले होते है।
गॅूजना (क्रिया):– कबूतर का दम भरना हुॅकारना।
गोदा (पु0):– बुलबुल बाज़ो की इस्तलाह मुराद बुलबुल को खिलाने की चने के आटे की नर्म ग़िज़ा।
घाघरा (पु0):– हल्की नीली रंगत और सुख़ ऑख वाला कबूतर जो क़ाबल कबूतर की किस्म में होता है। देखो असील
घरेलू कबूतर (पु0):– देखो कबूतर।
लक़ा (पु0):– घरेलू कबूतरो में की एक किस्म का नाम जो हर वक़्त सीना ताने गर्दन उठाये और दुम को चुनूर बनाये रहती है। इस तरह की छूटा है.....
लल्ल अखियॉ (पु0):– सुर्ख़ और बड़ी ऑखो का कबूतर।
लोटन (पु0):– घरेलू कबूतरो की एक किस्म का नाम जिसको पकड़कर उलट कर छोड़ दे तो तड़पने और जमीन पर लोटने लगता है अगर उठाकर फैरन सर को न फॅूका जाए तो मर जाए। यही कैफ़ीयत इसकी वजअ तसमिया है।

माखाड़ी (पु0):– घरेलू कबूतरो की एक किस्म जो दराज़ कद और लम्बी चोंच वाले और आमतौर से फुल पैरे होते है। माखाड़ की होने की वजह से माखाड़ी कहलाने लगे इसकी दुम में बहुत पर होते है बाज़ के 80 (अस्सी) तक होते है।
मोड़ही (पु0):– बड़ी ऑखो और मोटी पलको का मखाड़ी किस्म का कबूतर।
नसावरा/नसावरे (पु0):– ख़ेरे की किस्म की ऊँची पखाज़ कबूतर उड़ने में कालाबाज़ियॉ खाता है हर रंग का होता है।
नफ़्ता/नफ़्ते (पु0):– देखो रट्टा नामाबर कबूतर।
हन्काना (पु0):– कबूतर बाज़ो की इस्तलाह मुराद कबूतर उठाना (उड़ाना, तावे देना)।
याहू (पु0):– घरेलू कबूतरो की किस्मो में से एक किस्म जो बहुत दम भरने वाला होता है। उसके दम भरने (मूँजने) में याहू आवाज निकलती है और यही उसकी वजअ तसमियॉ है।
3 पेशा पतंगबाज़ी
इच्चम (स्त्री0):– 1– पतंग बाज़ी की इस्तलाह मुराद उड़ती हुई पतंग..... छूटा है अपनी तरफ कर लें।
2– सैदी की पतंग में पेंच डालकर अपनी तरफ खिचने का अमल (करना)।
उचका (पु0):– हुचका पतंग की डोर लपेटने की बुर्ज़ी नुमा बनी हुई चर्खी जिसपर से डोर उचककर निकलती है और यही उसकी वजअ तसमिया है।
अध्धा (पु0):– पतंग बाज़ी की इस्तलाह मुराद अध्धे तावे की बनी हुई पतंग जिसका आमतौर से बड़ी पतंगों में शुमार होता है। 32×18 इंच का ताव होता है।
अधेल (स्त्री0):– 1/8 हिस्से की बनी हुई सबसे छोटी पतंग का इसतलाही नाम।
अर्रटा (पु0):– पतंग बाज़ो की इस्तलाह मुराद पतंग की तेज़ हवा में मुख़ालिफ़ सिम्ट इच्चम करने की आवज़ जो हवा की टक्कर से निकले (भरना, करना, होना)।
इकतावा (पु0):– पूरे ताव की बनी हुई सबसे बड़ी पतंग देखो अध्धा।
उखड़ना (क्रिया):– उड़ती पतंग की डोर का किसी जगह से टुटकर पतंग का हाथ से निकल जाना। जब पतंग की डोर हाथ के पास से टुटे तो उसको हथ्थो से उखाड़ना कहा जाता है।

अलफन (स्त्री0):– वो पतंग जिसके बीच में किसी दूसरे रंग के काग़ज की कोई तीन इंच चौड़ी पट्टी का अमूदी जोड़ अमूमन गहरे सुर्ख़ या सब्ज़ रंग के काग़ज़ का होता है ताकि ढ़ीले के पेंच पतंग का रुख़ नुमाया हों।
अन्टी (स्त्री0):– फेटी और लच्छी डोर की तह ब तह लपेट जो घुन्टियों या जल्दी और आसानी के लिए दो उँगलियो पर की जाए। (करना, बनाना)।
बगला (पु0):– पतंगबाज़ो की इस्तलाह मुराद ऐ रंग सफेद काग़ज़ की पतंग।
पत्ता (पु0):– पतंग की दुम यानि निचले सिरे पर चीर की दुम की शक्ल बनाई हुई दुम, जो मुसलसनुमा काग़ज से तिलियों की कन्नियॉ लगाकर बनाई जाती है। (लगाना)
पतंग (स्त्री0):– कनिकयॉ गुड्डी आमतौर से मशहूर, मुख़्वाज़ ओर मुकामी तौर पर चन्द नामो से मारुफ़ है (अटकाना) लिपटाना कटी हुई पतंग को जो हवा में बह रही हो अपनी पतंग से उलझा लेना। (उड़ाना) डोर के साथ पतंग को हवा में बुलनद करने यानि डोर का सिरा हाथ में रखकर पतंग को हवा में तैराना (बॉधना) देखो (अटकाना) (बढ़ाना) पिलाना डोर में बॉधकर पतंग को हवा में बुलनद करना।
इस तरह के पतंग की डोर 1:– 1– पतंग (कन्कियॉ गुइडी) 2– ठड्डा 3– पत्ता 4–कन्नी 5– तुक्का
2– (बी) गुड्डा (कन्कुआ) (अ) पट्टिया (बे) पन्छलला (फुन्दना)
के साथ वो बुलन्द होती रहती है। (पिलाना) देखो उड़ाना और बढ़ाना (चक्कराना) कानप की ख़राबी से पतंग का हवा में सुध न रहना। अद्म तवाज़ुन की वजअ बलखाना घुमाना (बन्द डोलना) हवा के बन्द होने से पतंग का ढ़लमिल होना बेरुख़ जाना (छोड़ना) देखो दरियाई देना (लिपटाना) देखो अटकाना (लड़ाना) मुख़ालिफ़ या गैर की पतंग का डोर में पेंच डालना (उखाड़ना) पतंग की डोर टुट जाना और पतंग का हाथ से जाता रहना। (लोटना) कटी या उखड़ी हुई पतंग को पकड़ लेना।
पतंग बाज़ (पु0):– पतंग के खेल यानि उड़ाने या लड़ाने का शौक़ीन।
पतंगबाज़ी (स्त्री0):– पतंग उड़ाने और लड़ाने का खेल।
बन्नडोलना/बन्दडोलना (क्रिया):– देखो पतंग (पतंग बन्डदोलना)।
पतंगसाज़ी (स्त्री0):– पतंग बनाने का पेशा।

परी (स्त्री0):– पतंग का नाम जिसकी दोनो बगत्रलियॉ सुर्ख़ या सब्जत्र रंग के कागत्रज़ की कली दार (मुसलसनुमा) जोड़ की हो। और देखने में पर मालूम हों यही उसकी वजअ तसमिया है।
पिलाना (क्रिया):– देखो पतंग, पतंग बढ़ाना, उड़ाना।
पन्छल्ला (पु0):– दुमछल्ला गड्डी का फुंदना जो पत्ते की जगह होता है और जिसकी वजअ से गुड्डी को गुड्डा कहा जाता है। गुड्डे की दुम देखो पतंग।
पोनियॉ (पु0):– 3/4 तॉव की बनी हुई किस्म की पतंग देखो अध्धा।
पीओ (पु0):– 1– उड़ती हुई पतंग की डोर का झोल जो डोर को तानने से क़ौसनुमा बना जाता है। ये नुख़्स कानब की खराबी की वज़ह से होता है। ऐसी तंग का पेंच अच्छा नही लड़ता (देना, छोड़ना) उड़ती पतंग की डोर में झोल आना। (काटना, खिचना, कसना, लेना) पतंग के पट्टियो पर पेच डालकर खींच लेना जिससे वो कट जए।
2– पतंग के कानब के अन्दर का हिस्सा देखो पतंग बाज़ पतंगसाजत्र पेट या पीठ तल्लफुज़ कहते है।
पैसील (स्त्री0):– चौथाई ताव की औसत दर्ज़े की पतंग उसकी किमत एक पैसा होने की वजह से पैसील कहलाने लगी देखो अद्धा।
पेच (पु0):– पतंग बाज़ी की इस्तलाह मुराद एक उड़ती हुई पतंग की डोर से दूसरी उड़ती हुई पतंग की डोर काटने का दॉव। जो अपनी नौइय्यत में मुख़तल्लिफ़ होते है और मुख़तल्लिफ़ नामो से मौसूम किये जाते है (बुदना) पतंगबाज़ी या लड़ाने की शर्त करना वादा करना (डालना) दूसरे की पतंग को काटने को डोर से डोर मिलाना दॉव करना (लड़ाना) पतंग बाज़ी करना पत्रग काटने को दॉव करना।
फेटी (स्त्री0):– देखो अन्टी डोर का लच्छा जो एक मुर्कररा नाप का हो।
तुक्का (पु0):– तुकल का ठड्डा यानि शक्ल के बीच में लगी हुई अमूदी तिली देखो तुक्कल।
तुक्कल (स्त्री0):– पतंग की किसम की मगर उससे मुख़तलिफ़ शक्ल की। पतं बी तरह की बाज़ी की शय। ये सूरत में पतंग से मुख़तलिफ़ होती है बाकी पतंग बाज़ी और तुक्कल बाज़ी एक ही खेल है।
ठाड़ी (सत्री0):– पतंग बाजत्री की इस्तलाह मुराद पतंग की डोर लपेटने की बड़ी और मजबूत किस्म की चरख़ी और यही उसकी वजअ तसमिया है देखो चरख़ी।

ठड्डा (पु0):— पतंग के बीच में लगी हुई अमूदी तिली जो कानव के बीच में इस तरह रहता है जैसे कमान में तीर देखो पतंग।
ठुमकी (स्त्री0):— डोर के सहार पतंग पर उँगली का टहोका जिसका मकसद पतंग की डोरी को हल्का सा तानकर छोड़ना होता है। जिससे पतंग हवा का दबाव खाकर ऊँचा होता और आगे बढ़ता है। उँगली की यही हरकत (टहोका) पतंग का रुख़ बदलने के लिए भी होता है। (देना, लगाना)
झोल (पु0):— देखो पट्टियॉ।
चप (स्त्री0):— दो पलक दो रंगी पतंग यानि पतंग का निस्फ़ हिस्सा एक रंग के काग़ज़ का और दूसरा दूसरे रंग के काग़ज़ का बना हुआ हो।
चरख़ी (स्त्री0):— ठारी,डोर (तागा) लपेटने की बेलन की वजअ की फिरकी (भरना, फिराना)।
चक्कराना (क्रिया):— पतंग बाजत्री की इसतलाह मुराद पतंग का सुध न रहना, बलखाना, घुमना जो कानप के ख़राबी का सबब होता है।
दरियाई (स्त्री0):— पतंग बाज़ो की इस्तलाह मुराद पतंग उड़ान या हवा में बड़ाने के लिए ख़ास हालत में किसी कद्र फ़ासले से ऊपर को उठाने का अमल। (देना)
दमड़चीर (स्त्री0):— दमड़ी वाला छोटा पतंग।
दोबल बख़ (स्त्री0):— दोहरे बल की डोर जो ज्यादा मजबूत और साफ होती है।
दो पलका पतंग (स्त्री0):— देखो चप दो रंग पतंग बाज़ कारीगर दो पन्ना कहते है।
दो पन्ना (पु0):— देखो दो पलका पतंग।
दोहरा बॉधना (क्रिया):— पतंग बाज़ी का दॉव जिसमें पतंग के झोल को झोल से मिलाकर पतंग को खीच कर सीधा ऊपर दठाते है जिससे ऊपर का झोल तलवार की तरह काट करता है।
दोहरा करना (पु0):— देखो करना।
धुरी (स्त्री0):— तुक्कल की निचली लगी हुई तिली जिसमें तक्का चसपा होता है। और जिससे वह हवा में सुद रहती है और जिससे तुक्कल की निचली कानप सहारा पाती है। या बधी रहती है देखो तुक्कल।
धेलचेल (स्त्री0):— धले वाली छोटी किस्म की पतंग।

डोर (स्त्री0):– नख़पतंग बाज़ी की ख़ास इस्तलाह मुराद पतंग उड़ाना और लड़ाने का मान्झा चढ़ा हुआ तागा (सोतना) पतंग उड़ाने के मागे पर कॉच (शीशे) के सफ़ूफ़ का बनाया हुआ मसाला चढ़ाना।
ढीलम (स्त्री0):– अढ़ेल का इस्मे मुसग़र। पतंग बाज़ी की इस्तलाह मुराद ढ़ील का पेच इच्चम की ज़द इसमें मुख़ालिफ़ की पतंग में पेंच डाल कर डोर बढ़ाते या छोड़ते रहते है। यहाँ तक की किसी एक पतंग की डोर घिस्सो से कट जाए जिसको पतंग कटना कहा जाता है।
ढ़ील (स्त्री0):– उड़ती हुई पतंग को हस्बे जरुरत ऊपर बढ़ाने के लिए डोर लम्बी करते रहने का अमल (छोड़ना, देना)।
रुख़ लगाना (क्रिया):– पतंग लड़ाने के एक दॉव का नाम जिसमें पतंग के सर को दायें या बायें रुख़ फेर कर जोर से ख़ीचा जाता है ताकि हरीफ़ की पतंग की डोर घिस्सा लग कर कट जाए।
सुध (स्त्री0):– पतंग की हवा में सीधे खड़े रहने की हालत (रहना, करना, होना)।
सहारना (क्रिया):– डोर रोक कर हवा में पतंग को क़ायम करना या रखना। डोर तान कर पतंग को बुलनदी लटकाना।
ग़ोता देना (क्रिया):– पतंग का सर जमीन की तरफ फेर कर डोर ज़ोर से खीचना ताकि वो जमीन की तरफ नीचे को आ जाये कभी हरीफ़ की पतंग की डोर काटने के लिए भी ये अमल किया जाता है। (लगाना, खाना)
क़ट लगाना/क़द लगाना (क्रिया):– पतंग लड़ाने का दॉव जिसमें ऊपर की पतंग के पट्टिये को तलवार की तरह खीच से नीचे की पतंग के पट्टिये को काटा जाता है। (लगाना)
कानप (स्त्री0):– पतंग के ठड्डे के ऊपर क़ौस की शक्ल लगी हुई तिली। पतंग की कमान देखो पतंग (लगाना, चढ़ाना)।
कान्डा/कान्डी (पु0):– पतंग बाज़ी की इस्तलाह मुराद ऐसा पतंग जिसके एक रुख़ में किसी दूसरे और गहरे रंग का गोल जोड़ लगा हो जिससे लम्बी पखाज में पतंग के रुख़ की पहचान हो सकें। ऑख की शक्ल के जोड की पतंग और यही वजअ तसमिया है।
कलचढ़ा/कलचढ़ी (पु0):– वो पतंग जिसका सिरा (1/4 हिस्सा) काल काग़ज़ का हो। बाज़ पतंग बाज़ कल सरा कहते है।

कलदुमा/कलदुमी (पु0):– वो पतंग जिसका पेंदा यानि नीचे का सिरा (1/4 हिस्सा) काले काग़ज़ का हो।
कलेजा जली (स्त्री0):– वो पतंग जिसके बीच में ठड्डे के ऊपर काले काग़ज़ का गोल जोड़ होता है।
कन्नाकउॅआ (पु0):– गुड्डा फुदनेदार पतंग कन्नकइयॉ का इस्मे मुसग़र देखो कन्नकइयॉ और पतंग।
कन्नकइयॉ (स्त्री0):– लखनऊ की इस्तलाह देहली में गुड्उी और आगरा वग़ैरह में पतंग कहते है। पतंग के नाम से ज्यादा मारुफ़ है।
कुन्दा (पु0):– पतंग का बगली हिस्सा यानि कनाप के सिरो के करीब का हिस्सा (निकलना) पतंग का कुन्दे के पास से फट जाना। देखो पतंग
कन्ना/कन्ने (पु0):– पतंग का कमर बन्द जिसका एक सिरा कनाप के वस्त में ठड्डे को मिलाकर और दूसरे नीचे पत्ते की नोक के पास ठड्डे में बॉधा जाता और उसके बीच में डोर बॉधी जाती है। (बॉधना, टूटना, कटना)
कन्नी (स्त्री0):– 1– पतंग की चौतरफ़ाकोर जिसमें मजबूती के लिए बारीक डोर की तह दी जाती है यानि कोर पर डोरा चिपका दिया जाता है। (लगाना) (छूटा है) पतंग के दोनो कुन्दो में से अगर कोई कुनदा हल्का हो तो उसमें बक़द जरुरत वज़न बॉधना ताकि दोनो बराबर हो जाए। (दबाना) कानप के सिरे को हस्बे जरुरत दबाकर (मोड़कर) चढ़ा या उतार देना।
2– पेंच के लिए मुख़ालिफ़ पतंग को घेरना। एक तरफ को बचने पर मजबुर करना (खाना) पतंग का कनियाना यानि किसी एक तरफ को झुके रहना, सुध न रहना या खीचने में एक तरफ झुक जाना। रुख़ फेर लेना।
कनियाना (क्रिया):– देखो कन्नी खना।
खुटकी (स्त्री0):– डोर के बटे हुए तारो में तड़ख़ जो किसी सख़्त चीनू की जरब से आ जाए ओर मनहमला कुल बटे हुए तारो में से कुछ कट जाए या छन जाए जिसकी वजह से उस जगह से डोर कमजोर हो जाए और तानने से टुट जाए (लगना, लगाना)।
किहचम (स्त्री0):– देखो इच्चम (करना)।
गद्दा (पु0):– पतंग लड़ाने के एक दॉव का नाम जिसमें पतंग का सिर नीचा करके जोर से खीचने और हरीफ़ पतंग की डोर के झोल पर डोर मिलाकर एक दम ढ़ील देते है। (मारना)

गुड्डा (पु0):– दुम छल्लेदार पतंग देखो कन्नकउॅआ।
गुड्डी (स्त्री0):– देखो पतंग और कन्नकइयॉ।
खसीटपेंच (पु0):– देखो इच्चम और खिच्चम।
लच्छा (पु0):– 1– देखो अन्टी और ुटी (देना, छोड़ना) पतंग बाज़ी की इस्तलाह मुराद पतंग की उड़ान में एक दम बहुत सी डोर छोड़ देना।
2– पतंग पड़ाने के वक़्त जब ऐसा किया जाता है तो ये अमल पतंग लड़ाने का एक दॉव कहलाता है।
लग्गा/लग्गी (पु0):– लखनऊ की इस्तलाह मुराद पतंग लूटने की छड़े के सिरे पर कॉटे बॉध लते है।
लल्लदुम्मी (स्त्री0):– सुर्ख़ रंग काग़ज़ के पत्ते की पतंग।
मॉझा (पु0):– पतंग लड़ाने की डोर सूजने का मसाला के कॉच का सफ़ूफ़ उबले हुए चावलो में मिलाकर बनाया जाता है। और डासेरे को उससे सूता जाता है देखो डोरा सूतना।
मॉग पाई (स्त्री0):– पतंग का नाम देखो अलफ़नं मन्झोला (पु0):– औसत दर्ज़े की पतंग जो अध्धे से किसी कद्र दोटी होती है। देखो अध्धा।
नख़ (स्त्री0):– पॉच अच्छी तारों की बारीक बटी हुई डोर।
हत्ते से उखड़ना (क्रिया):– पतंग बाज़ी की इस्तलाह मुराद उड़ती हुई पतंग की डोर का पतंगबाज़ के हाथ के पास से टुट जाना।
हत्ते मारना (क्रिया):– उड़ती हुई पतंग की डोर जल्दी जल्दी खीचना। खिच्चम करना।
हुचका (पु0):– देखो उच्चका।

<u>ज़मीमा फ़सल सोम</u>
<u>तमाशागिरी बशाब्दे बाज़ी मय तफरीह खेल व मशागि़ल</u>
अट्ठाचम्मा (पु0):– चौसर की किसम का खेल जिसकी बिशात सतरंज की सी होती है। और खेल चौसर का सा। चार कौड़ियों का हाथ और चार नर्दो की एक बाज़ होती है।
अख़्तू बख़्तू (स्त्री0):– कठपुतली वाले तमाशागिरों की गुड़ियों के इस्तलाही नाम वो जिसको तमाशा करने में तार के जरिए उॅगली के इशाारों पर नाचते है।

अरदब/अड़दब (पु0):– ईराब लफ्ज़ अरदब ग़ालिबन अड़ और दब का इस्तलाही तल्लफुज़ है। शतरंज़ के खेल की इस्तलाही मुराद किसी मोहरे की ज़द पड़ने और ज़द डालने वाले मोहरे के दरमियान कैद रोक जिसके हटाने से ज़द पड़ने वाला मोहरा पिट जाए। (करना, होना)

ईराब (पु0):– अरदब का दूसरा तल्लफुज़ देखो अरदब।

अफ़ताब (पु0):– 1– मन्नजफ़े की छठी बाज़ी का मीर। दिन के वक़्त का खेल इस मीर के साथ खेला जाता हैं और रात के वक़्त का महताब के साथ। देखो गन्जफ़ा

2– ताश की एक बाज़ी के इक्के का नाम।

इक्का (पु0):– ताश की किसी बाज़ी का पत्ता जिस पर उस बाज़ी के रंग का एक निशान होता है। ओर बाज़ी का सबसे बड़ा मीर शुमार किया जाता है। जिसके मुक़ाबले में बाज़ी के सब पत्ते मात खाते है। (लगाना, मारना) खेल में इक्के का पत्ता डालना।

अन्टा (पु0):– चोसर और उसी किस्म के दूसरे खेलो और कमारबाज़ी की मुशतरफ इस्तलाही मुराद कोड़ियों का दॉव (पॉसा) फेकने में वो कौड़ी जो चित्त पड़े न पट बल्कि आड़ी खड़ी रहे। ऐसी कोड़ी को चित्त पट्ट के शुमार से ख़ारिज़ समझा जाता है। जो जुआरियों में कहावत मशहूर है। चित्त भी मेरी और पट्ट भी मेरी अन्टा मेरे बॉप का।

ईट (स्त्री0):– ताश की एक बाज़ी का नाम जिसके पत्तो पर ईट जैसा सुर्ख़ रंग का छपा होता है ओर यही उसकी वजअ तसमिया है देखो ताश फिकरा – 2

बादशाह (पु0):– 1– ताश की बाज़ी के एक मीर का नाम जो हर बाज़ी में होता है। खेल इसकी कद्र इक्के के बाद होती है देखो ता
ताश।

2– शतरंज का मीर।

बाज़ी (स्त्री0):– 1– खेल (हारना, जीतना, ले जाना) खेल जीत जाना (लगाना) खेल की शर्त बुदना खेल का मामला करना (खेलना) किसी तफरीह खेल में मशगूल होना।

2– ताश या गंजफे के पत्तो का हर रंग और उसके कुल पत्ते इस्तलाहन बाज़ी कहलाती है ताश के चार रंग (चार बाज़िया) ओर गंजफ़े में आठ होती है।

बानभी/बानभीह (स्त्री0):– 1– सपेरो की इस्तलाह मुराद सॉप का बिल या ज़मीन में दिमक का घर जिसमें सॉप बैठ जाता है।
उदाहरण– घर आए नाग न पूजिए बॉनभी पूजन जाए।
कहावत– बिच्छू का मंत्र न जाने सॉप की बानबी में हाथ दें।
बरात (स्त्री0):– गन्जफ़े की एक बाज़ी का नाम जिसके पत्तो का रंग सुर्ख़ ओर अलामत उफ़ की ख़त होता है। देखो गंजफ़ा
ब्रिज (स्त्री0):– ताश के खेल की अंग्रेजी इस्तलाह जो तालीमयाफ़्ता ताशबाज़ो में बोली जाती है। अम लोग त्रुप का खेल कहते है।
बुर्द (स्त्री0):– शतरंज के खेल की इस्तलाह मुराद खेलने वालो में से किसी एक फ़रीक के सब मोहरे पिअ जाए और बादशाह अकेला रह जाए। इस सूरत में खेल वग़ैरह हार जीत के ख़त्म हो जाता है। अकेले बादशाह को शय नही दी जाती, इसलिए खिलाड़ी एहतियात करते है कि हरीफ़ की बाज़ी का कोई एक मोहरा कायम रहे जो बदरजा मजबूरी पीटा जाता है। (उठाना)
बिसात (स्त्री0):– 1– शतरंज के खेल का काग़ज़ या कपड़े पर बना हुआ नक्शा (बिछाना)
2– शतरंज चौसर और इसी किस्म के खेलो के मोहरो के घरो का कपड़ा (उलटना) खेल खत्म हो जाना या बन्द कर देना।
बल मारना (क्रिया):– सपेरो की इस्तलाह मुराद सॉप का लहराना। जिस्म को पेंच ताब देना।
बमनी (स्त्री0):– सपेरो की इस्तलाह सॉप की वजअ का धारीदार लखोरी रंगत का एक छोटा कीड़ा जो सॉप की तरह चलता है लेकिन उसके पीछली के से पैर होते है।
बोजा/बोझा (पु0):– तमाशागरों की इस्तलाह मुराद शाब्दा या जादूका खेल।
बहरुप (पु0):– नक्काल और भाण्डो की इस्तलाह मुराद खेल को दिया किसी ख़ास गर्ज़ से हस्बे जरुरत सूरत और हूलिए की तब्दीली (भरना)।
बहरुपिया (पु0):– बहरुप धरने वाला।
बेचा (स्त्री0):– 1– तमाशागारो की इस्तलाह मुराद डरावनी हय्यत या ऐसी हसती जिससे डर मालूम हो।
2– बच्चो के डराने को मसनूई तौर पर कोई डरावनी इय्यत बना ली गई हो। (बनना, बनाना)

बीस धरा (पु0):– सत्त धरे की की क़िस्म का खेल देखो सत्त धरा।
भॉण्ड (पु0):– बहरुप भरने नकले करने और सॉग बनाने वाले तमाशागर।
भानमति (पु0):– 1– ढट बनद तमाशागरों का एक गिरोह जो ताज्जुबख़ेज़ और ख़िलाफ़े अक्ल करतब दिखाकर तमाशबिनों को हैरत में डालते और जादू टोने का ढ़ोग बताते है।
आमतौर से ये गुमान किया जाता है कि वो नजरबन्दी का कोई अमल करते है जिसको अपनी इस्तलाह में ढ़िट बन्दी कहते है।
भानी/भानियॉ (स्त्री0):– 1– मदारियों और बाजत्रीगरों के गीत जो एक किस्म का मुक़ाफ़्फ़ी कलाम या तुक बनदी होती है। जिसमें कुछ मतलब की कुद काम की बाते होती है (करना)।
2– खुशकुन कलाम हिनदुओ में दशहरे के त्योहार के मौके पर लड़के खेल के तौर पर टेसू के नाम से एक बुत बनाते और उसके साथ लोगों को इस किस्म का तुकबन्द कलाम सुनाते है।
पान (पु0):– ताश की एक बाज़ी का नाम जिसके पत्तो पर पान जैसा सुख़ रंग का छपा होता है और यही उसकी वजअ तसमिया है। देखो ताश फिकर – 2
पत्ता (पु0):– ताश गन्जफ़े और इसी किस्म के खेलो के मुशतरक इस्तलाह मुराद उन खेलो की बाज़ियों का एक वर्क़ देखो ताश फिकरा – 2 (डालना) बाज़ी खेलने को पत्ता रखना या हरीफ़ के पत्ते के मुक़ाबले में पत्ता देना। (कॉटना) कम कद्र पत्ते को बड़ी कद्र के पत्ते से जीत लेना पत्ता ख़ारिज करना निकाल देना।
पुतली (स्त्री0):– मदारियो की कठपुतली लकड़ी की गुड़िया जिसको तार के जरिए नचाकर तमाशा दिखाते है। (नचाना)
पच्चीसी (स्त्री0):– 1– चौपड़, चौसर, कदीम, देसी, घरेलू खेल जिसकी बिसात चली पे या चौपड़ की सूरत होती है और यही उस खेल की वजअ तसमिया है। चौपड़ के हर हिस्से में मुरब्बा शक्ल के चौबीस खाने बने होते है और इसका दरमियानी हिस्सा (चौराहा) मिलाकर पच्चीस हो जाते है इस लिए इस खेल को पच्चीसी कहा जाता है।
2– चौपड़ के हर हिस्से के बीच के खाने और सिरे के खाने में चलीपे की शक्ल बनी होती है जिसपर गोट पेटी नही जाती। इस खाने की इस्तलाह चीरा कहा जाता है।

3– चौसर के खेल के लिए छालिया की डली की चार रंग के सोलह मोहरे होते है जो नर्द या गोरट कहलाते है।
4– खेल शुरु करने के लिए सात कोड़ियों का हाथ फेका जाता है जो इस्तलाहन दॉव कहलाता है यानि सात कोड़ियॉ हाथ में लेकर और उछाल कर डाल देना। एक दॉव या एक हाथ हुआ।
5– दॉव के अद्द जिसमें गोट चौसर पर खेलने को रखी जाए पो कहलाते है। यानि सात कोड़ियों के चित्त या पअ गिरने की मुर्करर तादात पर पो होती और गोठ बिठायी जाती है।
पद्मनाग (पु0):– सपेरो की इस्तलाह मुराद एक ख़ास किस्म का निहायत जहरीला सॉप जो एक हाथ लम्बा पतला और बहुत तेज़ रफ्तार होता है।
पू (स्त्री0):– पच्चीसी के खेल की इस्तलाह देखो पच्चीसी फिकरा –2 (आना, बैठना, बनना)
पोबारा/पोबाहरा (पु0):– पच्चीसी खेल की इस्तलाह मुराद जीत का हाथ यानि पो का एक हाथ में घर में चला जाना।
पोंगना (क्रिया):– पच्चीसी के खेल की इस्तलाह मुराद एक ही हाथ (दॉव) फेकने कौड़ियॉ डालने में पो आ जाना यानि गोट बिसात पर बैठ जाना।
पौंगी (स्त्री0):– सॉप को बुलाने ओर हिलाने की सपेरो की बॉसुरी जिसकी आवाज सुनने का सॉप शौकीन होता है। और आवाज पर आ जाता है।
प्यादा/पेदल (पु0):– शतरंज का सबसे कम कद्र मोहरा जो सिर्फ एक घर सीधा और सामने चलता है। और आड़ा मारता है।
फुटकल (स्त्री0):– पच्चीसी के खेल की इस्तलाह मुराद वो गोंट जो बिसात पर अकेला रह जाए और अपनी जगह से न उठ सकें।
फुनकार (स्त्री0):– सपेरो की इस्तलाह मुराद सॉप का तेज और लम्बा सॉस जो वो हालत जोश में ले (मारना, लगाना)
ताज (पु0):– गन्जफ़े की एक बड़ी बाज़ी का नाम जिसके पत्ते का रंग सब्ज और उसमें नुख़्ते की शक्ल सफेद रंग का छापा होता है देखो गंज़फा।
ताश (पु0):– 1– बदेसी घरेलू खेल जो फिरंगी ताजिरो के साथ हिनदुस्तान में आया और रिवाज पाया। इफितदा में अदले तबके के मजदूर अपनी फुर्सत के वक़्त खेला करते थे। रफ़्ता रफ़्ता पढ़े लिखे और ऊॅचे दर्जे के लोगो की कल्बो में ब्रिज के नाम से शौक़िया कुमारबाज़ी (जुए) के तौर पर खेला जाने लगा।

(संस्कृत) में लत्ज़ ताश बमायनी नीचे गिराना और उर्दू में ताश घरेलू तफरीह खेल का नाम हो गया है।
2– ताश में चार रंग के बावन पत्ते होते है हर रंग की एक बाज़ी कहलाती है और हर बाज़ी तेरह पत्तो की होती है जिसमें तीन मीर (बादशाह, मलका, रानी और गुलाम) और इक्के से दहले तक दस पत्ते होते हैजो बाज़ी के छापे की तादात के शुमार से इक्का दुक्की तिग्गी चौवा.....वग़ैरह नहला और दहलाकहलाते है और बाजित्रयो के नाम ईट, पान, चिड़ी, तन और हुकुम है। हुकुम का इक्का आफताब कहलाता है।
ताशबाज़ी (स्त्री0):– 1– ताश का खेल ये मुख़तलिफ़ तरीको से खेला जाता हैआमतौर से दो से चार खिलाड़ी खेलते है।
2– सादा तरीके पर दो खिलाड़ियों के दरमियान खेल कूद व पत्ती कहते हैऔर तीन खिलाड़ियों के खेल को तय पत्ती कहा जाता है इसमें ऐ पत्ता (ईट की दुग्गी) ख़ारिज़ कर दिया जाता है और इक्यावन पत्तो से खेला जाता है। जिस खिलाड़ी के पास बड़ी कद्र के सब रंगो के पत्ते होते है वो जीत में रहता है खेल आफताब से शुरु होता हैयानि जिसके पास अफताब होता है वो उसमें खेल शुरु करता है।
3– सारे तरीक के अलावा एक तुरुप खेल कहा जाता है। ये एक तरह की शर्त बाज़ी या जुआ बाज़ी होती है। इसमें कोई एक खिलाड़ी जिसको खेल के कायदे से बोज का हक मिलता है पहले पॉच पत्ते लेकर अपनी समझ से किसी एक रंग की बाज़ी बोलता या लगाता है जिसका एक अदना पत्ता दूसरे रंग के बड़े से बड़े मीर को काट सकता है इसको इसतलाहन तुर्प कहते है। जिस खिलाड़ी के पास तुर्प के पत्ते ज्यादा हो आगे वही जीत में रहेगा।
तुर्प (पु0):–देखो ताशबाज़ी फिकरा –3 तर्प ग़ालिपन अंग्रेजी लत्ज़ ट्रिप का इस्तलाही तल्लफुज़ है। (लगाना, मारना)
तिग्गी (स्त्री0):– देखो ताश फिकरा – 2
तय पत्ती (स्त्री0):– देखो ताशबाज़ी फिकरा – 2
तमाशा (पु0):– मॉ खुद अज़मशी बमायनी पैदल चलना बाहम सैर करना रक़बत और शौक से चीजो का देखना उर्दू में तमाशे से मुराद तफ़रीह मशाग़िल है। (करना, दिखाना)

तमाशागिरी (स्त्री0):– मुख़तलिफ़ किस्म के तफ़रीह मशाग़िल के करतबी खेल जो तमाशागर फिरते फिराते दिखाते फिरते है।
तोड़ी (स्त्री0):– पच्चीसी की खेल का इस्तलाह मुराद हरीफ़ की गोट पिटना या मारना (करना) बग़ैर तोड़ी किये गोट घर में नही जा सकती।
टेसू (पु0):– देखो भानी फिकरा – 2
जुग (पु0,स्त्री0):– पच्चीसी के खेल की इस्तलाह मुराद गोटो का मेल यानि एक ही खिलाड़ी की दो गोटों का किसी एक खाने में जमा हो जाना।
जीत (स्त्री0):– बाज़ीगारो की इस्तलाह मुराद खेल की कामयाबी (होना)।
चरा जोग/चार चोग (स्त्री0):– शतरंज बाज़ी की इस्तलाह देखो कायम बाज़ी।
चाल (स्त्री0):– ताश, शतरंज, मज़फ़ा वग़ैरह की मुशतरक इस्तलाही मुराद खेल का हस्बे कायदा अमल (चलना, बदलना) खेल की मोहरो या पत्तो को खेल में इस्तेमाल करना।
चिड़ी तन (स्त्री0):– ताश की एक बाज़ी का जिसके पत्तो पर तय पत्ती फूल जैसा स्याह रंग का छापा होता है। उसकी सूरत चूड़े से मिलती जुलती है और यही उसकी वजअ तसमिया है देखो ताश फिकरा – 2
चकई (स्त्री0):– लट्टू की तरह फिराने का एक खेल जिसकी शक्ल चकई के बाटो की सी होती है जिसके बीच में चार पॉच फूट लम्बी डोरी बॉधी होती है। डोरी का सिरा पकड़ कर उसको इस तरीके से फेकते है कि वो घुमकर डोरी पर लपेटी हुई फेकने वाले के हाथ में वापस आ जाती है। (फिरना)
चुमना (पु0):– गुड़ियों की खेल की चुम्मा इस्तलाह मुराद गुड़िया का प्यारा बच्चा चूमने के काबिल बच्चा।
चमेलिया (स्त्री0):– एक किस्म का बहुत जहरीला सॉप जिसके जिस्म पर चमेली के फूल के मान्निद कल होते है।
चंग (पु0):– गन्जफ़े की एक छोटी बाज़ी का नाम जिसके पत्ते का रंग सुर्ख़ और उसमें लकीर की शक्ल सफेद रंग का छपा होता है। देखो गन्जफ़ा
चौपड़ (स्त्री0):– पच्चीसी की बिसात का दूसरा नाम देखो पच्चीसी।
चौपाई (स्त्री0):– होली का सॉग देना देखो सॉग।
चोट खेलना (क्रिया):– सपेरो की इस्तलाह मुराद हरीफ़ से सॉप का या करतबी मुक़ाबला करना हरीफ़ पर मंत्र मारना, टोना करना जिससे उसकी पूँगी बन्द हो जाए या उसको कोई दुख पहुँचे।

चौसर (स्त्री0):– देखो पच्चीसी, पच्चीसी का दूसरा नाम।
चौसर बाज़ी (स्त्री0):– पच्चीसी का खेल जो मुख़तलिफ़ तरीके से खेला जाता है। जिसमें एक किस्म को कचनी कहते है जो चौसर का एक परत उलटकर खेलते है।
चीरा (पु0):– देखो पच्चीसी फिकरा – 2
चैन्द (स्त्री0):– रौमटी खिलाड़ियों की इस्तलाह मुराद खेल में हटधर्मी या ख़िलाफ़ कायदा या मुहायद अमल (करना)।
चौन्दबाज़ी (स्त्री0):– खेल में खिलाफ़ क़ायदा या नजायज़ अड़ करना या गलत अमल को सही मनवाने की तदबीर करना।
छाला (पु0):– सपेरो की इस्तलाह मुराद सॉप के मुँह के अन्दर की ज़हर की थैली (तोड़ना, निकालना)।
हुकुम (पु0):– ताश की एक बाज़ी का नाम जिसके पत्तो पर पान की शक्ल का स्याह रंग छापा होता है उसका इक्का आफ़ताब कहलाता है देखो ताश फिकरा – 2
ख़ेलाल (स्त्री0):– गन्जफ़ा बाज़ी की इस्तलाह मुराद मात, हाथ (होना, आना, पड़ना)।
दॉव (पु0):– पच्चीसी बाज़ी में कोड़ियो के फेकने के चित्त पर से पो आने और चलने के आदाद का शुमार किया जाता है। इजत्रवाहर दॉव कहा जाता है। (आना, चलना, निकलना)।
दुग्गी/दुब्बी (स्त्री0):– देखो ताश फिकरा – 2
दो पत्ती (स्त्री0):– देखो ताश बाज़ी फिकरा – 2
दो मुई (स्त्री0):– सपेरो की इस्तलाह मुराद का एक किस्म का सॉप जिसके सर और दुम दोनो तरफ मुँह होता है।
दीवानी गोट (स्त्री0):– पच्चीसी की इस्तलाह मुराद वो गोट जो दाव सही न आने की वजअ से घर में न जा सकें और चक्कर लगाती रहे।
धावन (स्त्री0):– एक ख़ास किस्म का सॉप जो बहुत ताकतवर निहायत तेज रौव होता है इसकी खूराक दूध होती है जिसको वो गाय भैस वग़ैरह को कन्दे में लाकर हासिल करता है। इस तरह के अनेक पेरो को अपने जिस्म में बॉधकर थन से दूध चूस लेता है।
ढ़िट बन्द (स्त्री0):– देखो भानमति।

रानी (स्त्री0):– मलका ताश की हर बाज़ी के एक मीर का नाम जो औरत की शक्ल पत्ते पर बना होता है और बादशाह के मुकाबले में मलका यानि रानी कहलाता है।
रुख़ (पु0):– शतरंज के एक मुहरे का नाम जो हर बाज़ी में दो होते है और बादशाह की सफ़ में बिसात के दोनो कोनो पर एक एक बिठा दिया जाता है। इसकी शक्ल चककई सी होती है। हर तरफ सीधी पट्टी चलता और हर घर सीधा मरता है।
रस्सी (स्त्री0):– सपेरे और जोहला रात के वक्त सॉप का नाम लेने को बदशगुनी समझकर इसतलाहन रस्सी कहते है।
रंग (पु0):– 1– ताश और गन्जफ़े के खेलो के मुशतरक इस्तलाह मुराद एक रंग की कोई बाज़ी (ऐ रंग के पत्ते डालना) खेल में हर रंग पत्ता देना। (कॉटना, निकालना) किसी रंग के बाजत्री के पत्ते जो ग़ैर जरुरी हों खेल में निकाल देना (ये तरीका आमतौर से तुप्र के खेल में होता है) (मिलाना) हर रंग के बाजत्री के पत्ते अलहैदा–अलहैदा करना। एक रंग के पत्तो का जोड़ लगाना। (लेजाना) चौसर बाज़ी की इस्तलाह मुराद हम रंग गोअ बिठाने को न रहना।
2– ताश बाज़ी में किसी खिलाड़ी के पास किसी एक रंग बाज़ी के पत्ते पहुॅच जाना।
रौमटी (स्त्री0):– झूठी और दगा की बात या दग़ा करने का तरक़ीब देखो चैन्द (करना)।
रौमटी बाज़ (पु0):– रौमटी करने वाला।
उदाहरण– मुझे रौमटी बाज़ी पसन्द नही।
ज़िच/ज़ीख़ (पु0):– अरबी जल्ज़ ज़ीक़ बमायनी घुटना रुकना का उर्दू तल्लफुज़। शतरंज बाज़ो की इस्तलाह मुराद बादशाह या किसी मोहरे का बिसात के किसी घर में बन्द हो जाना। निकलने को कोई दूसरा ख़ाना न रहनां एवाह हरीफ़ मोहरे की ज़द पकड़ने से एवाह उनके या अपने मोहरे से गिर जाने में (होना)।
ज़ीख़/ज़ीक़ (पु0):– अरबी लत्ज़ ज़ीक़ का गलत तल्लफुज़ देखो ज़िच।
हिर उंतारना (क्रया):– सपेरो की इस्तलाह मुराद सॉप के काटने के ज़हर के असर को दवा या मंत्र से ज़ायल करना।
ज़हर उगलना (क्रिया):– सपेरो की इस्तलाह मुराद सॉप का अपने मुॅह की थैली के ज़हर को ज़ख़्म में पुंचाना।

सॉग (पु0):– इंसान के किसी फ़र्द या आफ़रात के ख़ास करतूतो की अमली नकल या कोई आम नकल (भरना)।
सॉगिये (पु0):– सॉग भरने वाले देखो सॉग और बहरुपिये।
सपेरा (पु0):– सॉप खिलाने या सॉप का तमाशा दिखाने वाला मदारी तमाशागरों में बाज़ तमाशागर सॉप, बन्दर रीच बग़ैरह जानोल हिताकर उनके तमाशे दिखाते फिरत है। और अवाम में रीच वाले बन्दर वाले और सपेरो के नाम से मशहूर है।
सत्ताधारी (पु0):– देसी मामूली घरेलू खेल को ज़मीन में या किसी लकड़ी में सात या सात गुच्छियों का दो कतारे बनाकर गोलियों की तरह खेला जाता है। बाज़ मुकामात पर इस खेल का सत्ता खुण्डी कहते है। जो गुच्छी बना कर खेलने की वजअ तसमिया है इस तरह का खेल बीस धरा कहलाता है। खुझिडयों की तादात की वजह से बीस धरा नाम रख दिया गया है।
सुर्ख़ (पु0):– गन्जफ़े की छोटी बाज़ियों में एक बाज़ी का नाम जिसके पत्तो का रंग सुर्ख़ और नुख़्ते की शक्ल सफेद रंग का छापा होता है। देखो गन्जफ़ा
सफेद (पु0):– गन्जफ़े की बड़ी बाज़ियों में एक बाज़ी का नाम जिसके पत्तो का रंग काला और उस पर नुख़्ते की शक्ल सफेद रंग का छापा होता है। देखो गन्जफ़ा
शातिर (पु0):– शतरंज का खिलाड़ी शतरंज बाज़।
शाह (पु0):– 1– देखो बादशाह ताश और शतरंज का मीर। ताश के पत्ते पर उसकी शक्ल आदमी की होती है।
2– शतरंज का मीर।
शतरंज (स्त्री0):– कदीम देसी गरेलू खेल जो चौसठ मुरब्बा ख़ानों की बिसात पर दो रंग के बत्तीस मोहरो से खेला जाता है। हर रंग में आठ प्यादे (पैदल) दो रु,ा दो फ़ुल (हाथी) दो असब (घोड़े) एक वजीर (फर्ज़ी) और एक बादशाह होता है। हर मोहरे के नाम के साथ उसकी कद्र और चाल की मुख़तरस कैफ़ियत लिख दी जाती है।
शाबतबाज़ (पु0):– बाज़ीगर तफ़री तमाशे दिखाने वाले।
शतरंज बाज़ी (स्त्री0):– शतरंज का खेल, खेल चन्द मुख़तलिफ़ तरीके से खेला जाता है। लेकिन इस्लाहात सब खेलो की यकसा है।
शशदर/सशदरा (पु0):– पच्चीसी के खेल की इस्तलाह मुराद चौसर के वो छः खाने जिसमें गोट फॅस जाए तो फिर नही निकल सकती।

शमशीर (स्त्री0):– गन्जफ़े की बड़ी बाज़ियों में एक बाज़ी का नाम उसके पत्ते की रंग सब्ज और अलामत तलवार की होती है उसका मीर शम्स कहलाता है। देखो गन्जफ़ा

शह (स्त्री0):– शतरंज बाज़ी की इस्तलाह मुराद बादशाह को किसी मोहरे की ज़द पकड़ने का इशारा जो लत्जत्र शय (बादशाह को बचाओ) कहकर दिया जाता है। (पकड़ना, आना, लगाना)

गुलाम (पु0):– 1– गन्जफ़े की चौथी बाज़ी का नाम जिस के पत्तो का रंग सफेद और उसपर मूरत का छापा होता है।

2– ताश का एक मीर शतरंज के बादशाह का वज़ीर इसलिए उसको वज़ीर भी कहते है। ये शतरंज का सबसे बड़ा मीर होता है। उसकी चाल बिसात के हर घर और हर रुख़ होती है। और ऐसी ही उसकी ज़द और तार है।

फ़रज़ी/फ़रज़ैन (पु0):– फ़ारसी लफ्ज़ फ़रज़ैन का उर्दू तल्लफुज़। शतरंज के बादशाह का बज़ीर इसलिए उसको वज़ीर भी कहते है। ये शतरंज का सबसे बड़ा मीर होता है। इसकी चाल बिसात के हर घर और हर रुख़ होती है। और ऐसी ही इसकी ज़द और मार है।

फ़ील (पु0):– शतरंज का एक मोहर जिसको हाथी भी कहते है। और बिसात पर बादशाह की सफ़ में बादशाह और वज़ीर के बराबर बिठेये जाते है और बिसात जाते है और बिसात के हर घर और हर रुख़ उसकी चाल और ज़द कज होता है।

क़ायम (स्त्री0):– चार चाक शतरंज बाज़ी की इस्तलाह मुराद फ़रिक़ैन के बादशाह और एक मोहरे के साथ खेल क़ायम हो जाये ओर हार जीत किसी को ना हो। (रहना, होना) पनाहगाह शातिर चन्द मोहरे ख़ास खानो पर क़ायम करके बना लेते है। जिसकी वजअ से बादशाह को शय नही पड़ती। (बनाना, जमाना, टूटना)

क़िला (पु0):– शतरंज के बादशाह की पनाहगाह शातिर चन्द मोहरे ख़ास खानो पर क़ायम करके बना लेते है। जिस की वजह से बादशाह को शय नही पड़ती (बनाना, जमाना, टूटना)।

क़िमाश (स्त्री0):– गन्जफ़े की एक बाज़ी का नाम जिसके पत्तो का रंग पीला (ज़र्द) और उनपर रथमय सवारी का छापा होता है।

कालगन्डैत (पु0):– सपेरो की इस्तलाह मुराद वो स्याह सॉप जिसपर किसी दूसरे रंग के गन्डे हों।

काना/काने (पु0):– पच्चीसी के खेल की इस्तलाह मुराद कोड़ियॉ फेकन (दॉव डालने) में पो के अदद न आना और हाथ के दो तीन चार वग़ैरह अदद खाली जाना इस्तलाहन काना। (काने) कहलाते है। जबतक खिलाड़ी की कोई पो न आए हाथ के अदद बेकार जाते है (आना, पड़ना)।
कटपुतलिये (पु0):– काठ की पुतलियॉ नचाने।
कच्चे बारह (पु0):– पच्चीसी की इस्तलाह मुराद बेकार दॉव (आना)।
किस्त (स्त्री0):– शतरंज बाज़ी की इस्तलाह मुराद हरीफ़ के मोहरे की ऐसी ज़द जिसमें बादशाह बचाया न जा सके और मात हो जाए। (पड़ना, आना, देना) लत्ज़ कुश्त का इस्तलाही तल्लफुज़।
कनचैनी (स्त्री0):– 1– पच्चीसी के खेल की इस्तलाह मुराद इस तरह का खेल जिसमे चौसर की एक फ़र्द ख़ारिज़ कर दी जाए।
2– चौपड़ का दरमियानि हीस्सा।
कोड़ीयाला (पु0):– सपेरो की इस्तलाह मुराद ऐसा सॉप जिसके रंग पर कोड़ियो के से निशान हों। काल गन्डेत की एक किस्म देखो गन्डेत।
कैनचली (स्त्री0):– सॉप के खल की ऊपर की बारीक झिल्ली जो पुरानी होकर एक साल में एक मरतवा उतर जाती है। (उतारना, बदलना, झाड़ना)
गुड्डा (पु0):– मदारियों की इस्तलाह गुड़ियॉ का मर्द यानि शौहर।
गुड़ियॉ (स्त्री0):– कठपुतली या कपड़े वग़ैरह की बनायी हुई पुतली जो लकड़ियों के खेलने को बना दी जाती है। (खेलना) छोटी लकड़ियो के अमूर खानादारी सीखाने को गुड़ियो का खेल इजात किया गया है।
गन्जफ़ा (पु0):– कदीम देसी घरेलू खेल जो ताश की तरह खेला जाता है। उसका पत्ता ताश के बरख़िलाफ़ गोल गत्ते की शक्ल और औसत दर्जे में अंग्रेजी रुपी के बराबर होता है। गन्जफ़े की आठ बाज़ियॉ (रंग) और छियानबे पत्ते होते है। और तीन खिलाड़ियों में खेला जाता है। गनजमला आ0 बाज़ियो के चार बड़ी और चार छोटी बाज़ियू कहलाती है। बड़ी बाज़ी के नाम ताज सफेद शमशीर और गुलाम है। छोटी बाज़ियों के नाम सुर्ख़ क़ेमाश ओर बारत है। ताज की मीर महताब और सुर्ख़ का मीर आफ़ताब कहलाता है। हर बाज़ी में एक मीर और एक वज़ीर होता है जिसको ताज और घोड़ा भी कहते है। बड़ी बाज़ियो के पत्तो का शुमार दहले शुरु होता है। और इक्के पर खत्म ओर छोटी बाज़ियों का उसके बरअक्स होता है। पत्ते पर वज़ीर की अलामत आमतौर से घोडे की मूरत होती है। दिन में

आफ़ताब वाली बाज़ी से और रात में माहताब वाली बाज़ी से खेल शुरु किया जाता है।
गन्जफ़ा बाज़ी (स्त्री0):– गन्जफ़े का खेल।
गुन्दली (स्त्री0):– सपेरो की इस्तलाह मुराद साूप की बैठ (मारना)।
गोट (स्त्री0):– नर्द संस्कृत गोटी का बामायनी एक छोटी गोली पच्चीसी के खेल में नर्द यानि खेल के मोहरे को कहते है। (चलाना, बैठना, पटना, उठना)
ज्ञान चौसर (स्त्री0):– पच्चीसी की किस्म का एक खेल जो दो गुटो और चार कोड़ियो से खेला जाता है। इसकी बिसात पर सॉप की शक्ले बनी होती है और जीत का घर जन्नत कहलाता है। गोंई सॉप के मुँह से दम की तरफ चलायी जाती है।
उदाहरण– ज्ञान चोसर का खेल ही आला सोर खेलो में खेल ही भाला।
घरेलू खेल (पु0):– घर के अन्दर किसी एक जगह बैठकर खेलने का खेल।
घोड़ा (पु0):– शतरंज के एक मोहरे का नाम जो हर बाज़ी में दो होती है और बादशाह की सफ़ में फ़ील के बराबर बिठाये जाते है। इसको इसब भी कहा जाता है। चाल और नद्र बिसात के ढ़ाई घर हर तरफ से होती है इसकी शय में कोई मोहरा इराब नही आ सकता इसलिए इस मोहरे की खेल में ख़ास एहमियत होती है। देखो शतरंज
लूडो (पु0):– पच्चीसी की किस्म का खेल बिसात पच्चीसी की बिसात की सी होती है। चौपड़ के दरमियान बिठाने का चौवना होता है। इसमें सोलह नर्दे होती है और चौपड़ के हर फ़र्द में अठारह अठारह ख़ाने इस खेल में कौड़ियो के बजाय पासा होता है। जिसके हर रुख़ पर अद्दी निशानात बने होते है जो एक से शुरु होकर छः पर खत्म होते है। दॉव में सिर्फ छः पर पो आती यानि गोट बैठती है।
लहर/लहरा (स्त्री0):– सपेरो की इस्तलाह मुराद पोगी की एक ख़ास ली (सुरली आवज) जिसपर साूप आशिक होता है। (लहराना) सॉप का लहर सुनकर झुमना बैठे हुए धड़ उठाकर हरकत करता है। (बजाना, चढ़ना)
मात (स्त्री0):– खेल की हारख़िलाल (होना)।
माहताब (पु0):– गन्जफ़े के बाज़ी ताज़ का मीर (इक्का) जिससे रात के वक्त का खेल शुरु किया जाता है। देखो गनजफ़ा
मदारी (पु0):– तफ़री खेल व तमाशा दिखाने वाला तमाशागर।
मिर्रा/मिर्री (पु0):– 1– मीर का इस्मे मुसग़र देखो मीर।

2– खेल का सर गिरोह सबसे अच्छा खिलाड़ी।
मलका (स्त्री0):– देखो रानी।
मन (पु0):– नाग का जौहर जिसके मुतालिक रिवायत है कि वो एक किस्म का नगीन होता है। जिससे अन्धेरे में उजाला हो जाता है। सुनसान जंगल में अँधेरी रात को पुराना नाग या नागिन इसको उगलता है और इसकी रोशनी में खेलता है। जड़ाऊ बालियाँ या कुव्वत की यूँ ज़ेरे गेसू है। शबे तारीख में जिस तरह नागिन मनी उगलती।
मुन्द्रा/मुन्द्रे (पु0):– सपेरो और जोगियों के कान में पड़े हुए कुन्डल (डालना)।
मीर (पु0):– ताश गन्जफ़े ओर इसी किस्म के खेलो में बड़ी कद्र का पत्ता सरदार।
नाग (पु0):– निहायत जत्रहरीली और हमला करने वाली सॉप की किस्म फन वाला सॉप।
नट (पु0):– वर्ज़िशी खेल दिखाने वाला तमाशागर।
नर्द/नर्दे (स्त्री0):– देखो गोट। अगर खिलाड़ी की आठ नर्दे बिसात पर बैठ जाए तो एक पो जाईद मिलती है और एक घर ज़ाईद।
नक़्काल (पु0):– देखो बहरुपिये और सॉगिए।
नहला (पु0):– देखो ताश फिकरा – 2
नौधरा/नौकंकरा (पु0):– एक किस्म का घरेलू खेल जिसकी बिसात चलिपे या चीरे की शक्ल होती है इसमें नौ घर होते है जिनपर मोहरे बिठाये ओर खाली घर को रोकर पीटे जाते है।
हाथ डालना (क्रिया):– पच्चीसी ओर किसी किस्म के खेलो की इस्तलाह मुराद पासे या कौड़ियो से दॉव चलना या निकालना (लेना) दॉव के अदद पर मोहरो को बिसात पर बिठाना या बढ़ाया।
हार (स्त्री0):– देखो मार और खिलाल (होना, मानना)।
हव्वा (पु0):– मदारियों की इस्तलाह दौड़वनी चीज़ या कोई डरावनी हइय्यत (बनाना)।

<u>चौथी फसल जराइम पेशा</u>
<u>चोरी, ठगी, डकैती मय क़िमार बाज़ी</u>
आले भाई (पु0):– दक्किनी ठगों की बोली। अरे भाई का मुक़ामी तल्लफुज़।

ऑसू तोड़ (पु0):– ठगो का शगुनी कलमा मुराद वे मौसम बारिस जिसके वो बदशगुनी की अलामत समझते है।
आूकड़ा (पु0):– ठगो की इस्तलाह एक हजार रकम या अदद।
आनड़ (स्त्री0):–ठगो की बोली बराए इशारा बईद। साथियो के रमजिया कलाम (इशारा) मुराद मुसाफ़िर को रास्ते से दूर ले जाकर कत्ल करना।
उतार चढ़ाव (पु0):– चोरो की इस्तलाह मुराद चोरी से कब्ल सब तरह की होशियारी और देखभाल (देखना, जानना, समझना, सोचना)।
उतरती फुल्की (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद ढ़लता हुआ या गुरुब होता सूरज। शाम को झुटपुटे का वक्त। ठगो की इसतलाह में सूरज को फुलकी कहा जाता है।
अतिर जाना (क्रिया):– मुसाफ़िर का ठग से होशियार हो जाना।
उदाहरण– मुसाफ़िर बातो बातो में अतिर गया।
उठायी गिरा (पु0):– चोरो की इस्तलाह मुराद वो चोर जो ऑख बचाकर या ग़फलत पाकर किसी चीज़ को उठाकर चल दे या गायब हो जाए। ओर हमेशा इसी ताक में रहे और इस काम को अपना पेशा बना ले।
उठना (क्रिया):– राहजनों (बट्ट मार) की इस्तलाह मुराद वक़्त मोईयना राह चलतो की चोरी करना या भूले भटके पर हाथ मारने के लिए घात से निकलना।
उदाहरण– हमारी टोली रात को तोप की आवाज पर पाले से उठती और अपना अपना दॉव करके फिर वही आती थी।
उच्चका (पु0):– वो चोर जो किसी के पास से किसी चीजत्र को उच्चक कर ले भागे। झप्पटा मार कर ले जाए। (चोरो की इस्तलाह)
अदूर/अहोर (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद मार जाने वाले मुसाफ़िरो में से बचकर निकल जाने वाला मुसाफ़िर लत्ज़ अधर का इस्तलाही तल्लफुज़।
अडेल (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद बुरा शगुन।
अरदल/अरदाल (पु0):– देखो अधोर (अधोर) ठगो के हाथो से बचकर निकल जाने वाला ऐसा मुसाफ़िर जिसके सब साथी मारे गये हों।
असेली/असेंधी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह लत्ज़ सील बमायनी रस्सी डोरी या ज़जीर का इस्तलाही तल्लफुज़ मुराद बेड़ी (होना)।

एक उड़िया (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद गीदड़ की आवाज जो एक ही निकल कर बन्द हो जाए निहायत बद शगुनी समणी जाती है। इसकी नहसत मिटाने को तरह तरह के अमल करते है।
अक्कासी (स्त्री0):– 1– सुनारी चील की आवाज (आसमान की तरफ से जो आवाज आए) जिसमें ठग अपने काम के लिए शगुन लेते है।
2– पगड़ी कूच के वक़्त गिर पड़े तो बदशगुनी और जल जाए तो बहुत बुरा शगुन मानते और उसके ढफ़ा के लिए गुड़ ख़ैरात करते है।
अक्कसी बड़ार (स्त्री0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद बादल की गरज। ठगी को जाते वक़्त निहायत बदशगुन जानते है और तीन रोज़ तक अपने ठिकाने से बाहर नही निकलते। ऐसे मौक़ो पर ठग सफ़र तर्क कर देते है और घर लौट आते है।
अग्रे (पु0):– देखो ठग।
अगवान (पु0):– चोरो की इसतलाह मुराद आगे बढ़कर टो लेने वाला और मौकाए वरदात के हालात की जॉच करके पीदे आने वालो को मुत्तला करने वाला साथी।
अन्जना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद तन्हा हालत में रात को किसी पोशीदा जगह बसर करना पड़ रहना।
इन्दर मन (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद रन्डी, बिसवा, आवारा पहाड़ी औरत पातर।
अंगझाप (पु0):– तिल्गानी ठगो की इस्तलाह मुराद लाश छुपाने या गाड़ने का मामूली गढ़ढ़ा। लहद (झाप हिनदी बमायनी आड़, ओट, सायबान)।
ओठा डालना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद फॉसी पर लटकना (ओठा) इस्तलाहन फॉसी की रस्सी जिसमें मुजरिम जमीन से अधर लटक जाए।
ओड़त पतोरी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद उड़ते हुए उल्लू की आवाज जिसमें शगुन लिया जाए।
औरत का नूरी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद चलते में रेयाह (पाद) निकलने की आवाज। चलते हुए गोज़ छोड़ना इस हरकत को निहायत मनहूस समझा जाता है।
ओड़ वाला (स्त्री0):– तिलंग गानी ठगो की इस्तलाह मुराद पत्थर या पत्थर फोड़ा। बाज़ ठग समसया कहते है।

ओकीड़ा (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद अमीर आदमी का पेशे ख़िदमत चाकर पहेलिया।
ओखर (पु0):– हथियार आलाते हस्ब।
ओगाल/ओगार (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद पुराना और नाकारा कपड़ा या लिबाज़।
ओगर जाना (क्रिया):– कैद से निकल भागना क़ैदख़ाने से निकल जाना।
उगरना/ओकलना (क्रिया):– तिलगानी ठगो की इस्तलाह मुराद किसी से बच कर ाागग जाना कैद से भाग जाना।
ओघड़ (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद बुरा शगुन। बेतूका मामला।
औंदना (क्रिया):– रोटी या कोई ग़िज़ा जल्दी जल्दी खाना।
उहारना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद फॉसी देकर मार डालना फॉसी पर लटका देना।
ईटब/ईटक (स्त्री0):– दक्किनी और बरारी ठगो में बिरादरी के लोगो या ढोरो में मरने जीने और चनने के मौक़े पर कबीले के कुल आदमियो का एक मोअइयन मुद्दत तक घर घुसने बने रहने की रस्म मुसलमान ठगो में ख़तनो के मौक़े पर भी किसी रस्म की पाबन्दी होती है। इनके मेहमान भी इनके साथ ख़ाना नशीन रहते है।
एक उड़िया (स्त्री0):– गीदड़ की बोली के शगुन का नाम।
एक बरधा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद तीली (बर्द बमायनी बैल)।
एक नॉव (पु0):– हम बिरादरी एक जात या कबीले के ठगो की जमात (होना) एक कबीले के ठगो का गिरोह बन्दी करना जमात बना लेना जथ्थ बना लेना।
एलो (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद एक नफ़र वाहिद शय (एलो उर्दू मुहावरा)।
अनेठा/एठा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद रुपया।
एड़ा (स्त्री0):– 1– ठगो की इस्तलाह मुराद बाज़ औरत।
2– निगरी, कस्बी, निकम्मा, बेकार।
बाजनी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद बन्दूक।
बाजैद (पु0):– ठगो का रमज़िया कलमा मुराद तिफंगची जो किसी मुसाफ़िर के कत्ल पर मुर्करर हो। साथी को होशियार करने या मुसाफ़िर के आने की खबर देने के लिए बाजैद खॉ देवमन बग़ैरह नाम बतौर इशारा बोले जाते है।
बारामुनि/बारामति (स्त्री0):– छिपकली की आवाज का शगुन।

बाडू (पु0):– ख़ानदानी ओर तर्जुबेकार ठग।
बाडोनी (स्त्री0):7 बुढ़ी तर्जुबेकार और ख़ानदानी ठगनी।
बॉक (स्त्री0):7 ठगो की इस्तलाह मुराद वादा कौल (देना)।
बागड़ियॉ (पु0):– देखो ठग।
बालमीक/बालमीका (पु0):– ठगो के मोर से आला का नाम जो जात का ब्राह्मन ओर कन्नौज का रहने वाला बताया जाता है।
बाणी (स्त्री0):– देखो भालू का।
बानी (स्त्री0):– बहु बेटे की औरत में बेर बानी मिलाकर बोलते है। (देखो जिल्द हफ्तम पेशा मिशत)।
बट्टमार (पु0):– देखो राह ज़न राह चलते मुसाफ़िर की चोरी करने वाला।
बट्टी (स्त्री0):– बाट का इस्मे मुसग़र एक आदमी के चलने का खेत कग़ैरह में रास्ता जो आदमी के चलने से पड़ गया हों। जहाँ लोगो के गिरफ्तारी के मतलाशी हो। बुरी ख़बर (होना) ठगो का रास्ता मालूम करना। बुरी ,ाबर सुनाना।
बिठला (पु0):7 ठगो की इस्तलाह मुराद मुहाफिज़ कुव्ता जो हिफ़ाज़त को बैठा हो।
बदमाश (पु0):– नजायज़ पेशे से जिन्दगी बसर करने या रोज़ी पैदा करने वाला।
बिरावना (क्रिया):– जासूस कू शुभे से बचने के लिए इक दुक्की होकर ठगी को निकालना और दूर परे किसी मुर्कररा जगह पर पहुॅच कर जमा होना।
बुर्चा/पुर्चा (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह लत्ज़ बार्चा बमायनी कपड़े का गलत तल्लफुज़।
बरसौत (पु0):– ठगों की एक कबीलें का नाम देखो ठग।
बर्क और कुमिल (पु0):– ठगी का माल जो किसी के पास ऊपरी पाकर ताड़ लिया जाए और उसका भेद खुल जाए।
बुर्की (स्त्री0):– ठगों की इस्तलाह मुराद छुरी जिससे हमला किया जाय। अता पता मिल जाए।
बुर्कियाना (क्रिया):– ठगों की इस्तलाह मुराद छुरी से ज़ख़्मी करना ।
बुर्किया डालना।
बरगीला (पु0):– राज़दार वाकिफ़लार साथी।
बिरौती करना (क्रिया):– देखो बिरावना
बड़ाका (पु0):– भेड़िए के देखने के शगुन का नाम।
बड़का (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद सरदार पेशरा रहमत।

बडोई (स्त्री0):– गीदड़ के आवाज के शगुन का नाम।
बसल (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद दुःखदा की बात जिसमें नुकशान का अन्देशा हो। ख़दशा दग़दग़ा (पड़ना) खतरे की आवाज निकालना खौफ़ की हालत में गुल व शोर मचाना।
बस्ती (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद उठयी गिरा। जेब कतरा।
बिकौट (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद जल्लाद (फॉसी) देने वाला या गर्दन मारने वाला।
बगना/बग जाना (क्रिया):– भाग जाने का ग़लत तल्लफुज़ (मुसाफ़िर का ठगो के हाथो से निकल जाना)।
बलगिरी (स्त्री0):– सड़क के दूरविरान जगह जहॉ मुसाफ़िर का काम तमाम किया जा सकें।
बल्लूची (पु0):– देखो ठग।
बलिया (स्त्री0):– ठगो की इसतलाह मुराद मकतूल को गसड़ने की जगह (मद्दफ़न माजना) मख़तूल को गाड़ने के लिए जगह तजवीस करना।
बल्हा (पु0):– ठगो का साथी जिसको मक़तूल मुसाफ़िर के गाड़ने का काम सुपुर्द हो या मक़तूल को गाड़ने के लिए जगह तजवीस करने वाला ठग की जगह तजवीस करना बतलाना।
बल्हाए (क्रिया):– मक़तूल के गाड़ने की जगह तजवीस करना बतलाना।
बनार (पु0):– ऐसा रास्ता या सड़क जहाँ ठगो की गिरफ्तारी का ख़ौफ़ हो। या जहाँ पर उनका भेद खुल जाए और गिरफ्तार हो जाए।
बनासना (क्रिया):– 1– राह भटक जाना।
2– किसी चीज़ को भूल जाना।
बन्ज (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद मुसाफ़िर राह रुह।
बंजारी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद बल्ली जब ठगी को जाने के लिए जमा होने की जगह पर आए तो मुबारक शगुन होता है।
बिन्दरी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद तलवार।
बंगड़ (पु0):– आवार गर्द ठगो जो किसी टोली में न हो।
बन्गू (पु0):– जमालदी और लोधा ठगो की इस्तलाह मुराद समुद्री और दरियाई इग कज़्ज़ाक़ जो मुसाफ़िर।
बनयाना (क्रिया):– मकतूल का लहू किसी चीज़ पर लग जाना।

बूट होना (क्रिया):– मुसाफ़िर का ठगो के फ़रेब में आ जाना।
बोर (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद शोर ग़ोगा या बात करने की आवाज जो दूर से सुनायी दे।
बोर या हट (स्त्री0):– शोर ग़ोगा करना चिल्ला कर बोलना जो ठग के मकसद में हारिज हो।
बोड़ा (पु0):– जमालदी और लोधा ठगो की इस्तलाह मुराद ठग।
बोड़की/भेड़की (स्त्री0):– वस्त हिन्द के ठगो की इस्तलाह मुराद चकारे (हिरन की किस्म का जानवर) के देखने का शगुन।
बोसन (स्त्री0):– पच्चीसी से जाईद ठगो की एक टोली (जमात) जो ठगी के लिए निकले।
बोगा (पु0):– लत्जत्र बोगबन्द का ग़लत तल्लफुज़ फारसीदान बोग़दान बमायनी सामने सफ़र बॉधने का कपड़ा या थैला कहते है। ठगो की इस्तलाह में हर किस्म के कपड़ो की गठरी।
बैहताइल (पु0):– मुसाुरि की बड़ी तादद का काफ़िला जो ठगो की टोली से ज्यादा हो।
बैहतरी/भतरी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद दो का अदद।
बहतिया/बहता (पु0):– एक सो का अदद या सौ गिनती।
बहरा (पु0):– मुराद चार का अदद।
बैटा/बहतिया (पु0):– एक सौ का अदद।
बेतू (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद ठगो का ग़ैर यानि हर वो शख़्स जो ठग न हो।
बैइट बरदार (पु0):– सब्बल (गदाला) या कुदाल रखने वाला ठग जिसके सुपुर्द मख़तूल मुसाफ़िर के गाड़ने का काम होता है और जो टोली से अलहैदा मज़दूरों की शक्ल बनाये फिरता है।
बैठक लेना (क्रिया):– चोरो की इस्तलाह मुरा चोरी की गर्ज़ से किसी जगह की ले लेने को नज़रो से ओझल छुपकर बैठ जाना।
बैधा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद नाक़िस अल ख़ल क़त या अजू बरेदा आदमी जिसके मारने को बुरा जानते ओर सामने आने को बदशगुनी मानते है। कापोन के उसकी मौजूदगी से भेद खुलता और शिनाख़्त होती है।
बेस (स्त्री0):– चिड़िया के शगुन का नाम।

बेकरया (पु0):– नाको पर मुतअइयन ठगो का जासूस और ख़बर रिंसा।
बेकरी करना (क्रिया):– जमालदी इगो की इस्तलाह मुराद ठगो के पास ख़बर रसानी का काम करना। ठगो का मुख़बिर।
बीघा (पु0):– जमालदी ठगो की इस्तलाह मुराद लूट के माल का हिस्सा या हक़।
बेल (स्त्री0):– 1– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद हर किस्म का आनाज और ख़ास कर राई (सरसो)
2– वीरान सुनसान मुक़ाम जहाँ ठग अपने मक़तूल मुसाफ़िरो को गाड़ दे जैसे बन, पहाड़, नदी, नाला वग़ैरह (सम्भालना) मुल्तानी ठगो की इस्तलाह मुराद लाश या मुसाफ़िरो का लूआ हुआ माल छुपाना। (फ़न बकैती में बेल बॉक छुरियों के दॉव को कहते है) (ढूढ़ना) लाश गाड़ने या सामान छुपाने को किसी वीरान मुक़ाम को तलाश करना।
बेलहा (पु0):– 1– ठगो की इस्तलाह मुराद बदख़ू हाकिम।
2– कौड़ी ज़मानी या अजू बरीदा शख़्स।
ब्योवारा (पु0):– 1– चोरो की इस्तलाह मुराद एतबार दिल की बात।
2– भेद खोज टो राज़ की ख़बर लेना लगाना।
भारा (पु0):– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद लाश।
भालूका/भालिका (पु0):– बॉडी गिदड़ की आवाज का शगुन।
भॉस लेना/फॉस लेना (क्रिया):– लूट के माल को दबा बैठना उसपर कब्जा जमा लेना।
भटोत (पु0):– फॉसी देने वाला या कत्ल करने वाला ठगो का ओहदे दार।
भटौती (स्त्री0):– फॉसी देने या कत्ल करने का अमल।
भूसरना (क्रिया):– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद भाग जाना। रुहपोश हो जाना।
भेलम (पु0):– ठगो के एक गिरोह या क़बीले का नाम जो देहली से निकल कर मुल्तान और सिन्ध के इलाको में जा बसे थे।
बम झोधा (पु0):– चिड़िया का शगुन।
भौती (स्त्री0):– चील की आवाज का शगुन।
भोया (पु0):– रुपया।
भेदी (पु0):– खॉगी चोरो की इस्तलाह मुराद खोज निकालने वाला पते की ख़बर लाने वाला।

कहावत– घर का भेदी लंका ढ़ाये।
भेनस (पु0):– ठगो के सबसे पहले क़बीले का नाम देखो ठग।
पातर (स्त्री0):– इन्द्रमन ठगो की इस्तलाह मुराद शुमाली पहाड़ी इलाका की आवारा औरत कसबी, रन्डी, देखो देखो इन्द्रमन।
पाड़ना खना/बाड़ना (क्रिया):– फॉसी लगाना।
पासा (पु0):– जुआरियों की इस्तलाह मुराद हार जीत का दॉव डालने की चीज़ जिसकी अददी मिक़दार पर बाज़ी की हार जीत रखी जाती है। (डालना, फेकना)
पालोई/पालवी (स्त्री0):– दक्किनी इगे की इस्तलाह मुराद छल्ला मुरकी या नथ।
पाण्डज़ी फली (स्त्री0):– दक्किनी इगे की इस्तलाह मुराद मोती।
पुतरा (पु0):– घोड़ा।
पुतरिसत (पु0):– असप सवार।
पुतरिसत बटोत (पु0):– घुड़ सवार को फॉसी देने वाला ठग।
पुत्रयन्ती (स्त्री0):– घुड़सवार की भटौती देखो भटौती।
पतकी (स्त्री0):– रोकड़, नक़दी, रुपया।
पुतली हो जाना (क्रिया):– ठगो की जमात का भटोत फटक हो जाना यानि क़ातिल का भटक जाना।
यतनी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद छीक़।
पतोरी (स्त्री0):– चिड़िया खरेरी छोटे उल्लू की आवाज का शगुन।
पतियार (स्त्री0):– कोली ठगो की इस्तलाह मुराद तीतर की आवाज जिससे ठग शगुन लेते है। उनके ख़्याल में घर से निकलते वक़्त रात को तीतर का और दिन को गिदड़ का बहूत मनहूस होता है।
कहावत– ''राते बोलेतीतर दिन को बोले सियार तुम चलियो वो देस उन्हे पड़े अचानक धार''।
टपड़ा गो (स्त्री0):– देखो गो और कमन्द।
फुटवाल (पु0):– 1– पठ्ठो और पठ्ठा वग़ैरह अलफाज़ का इसतलाही तल्लफुज़। चोरो की इस्तलाह मुराद निगेहबान जो चोरी करते वक़्त बाहर की देखीाल करता रहे और खतरे से अगाह कर सकें।
2– नक़ब जन का साथी जो मक़ब पर निगरानी करें।
पचभैय्या (पु0):– ठगो के एक कबीले का नाम देखो ठग।

परता/पड़ना (क्रिया):– ठगो के इस्तलाह मुराद ठगी के वाक़ेयात की हकीक़ात के वक़्त माल की बरामद और पहचान होना।
परेथाल (स्त्री0):– देखो पतियार (तीतर की आवाज का शगुन) बाजत्र मुक़ाम पर पड़ियाल कहते है।
पड़ियाल (स्त्री0):– देखो परिथाल।
पसर (स्त्री0):– ठगी के लिए जाने की सिम्त।
पुकार (पु0):– लोधा ठगो की इस्तलाह मुराद अहीर ज़ात।
पखेला (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद काग़ज़ जो सरकारी हैसियत रखता हो या मामूली काग़ज़ का बड़ा तॉव।
पल्लू/फलू (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद कन्धे पर डालने का कपड़ा जो रुमाल का काम दे (देना) गुरु का चेले को क़त्ल करने की महारत हासिल होने की ान्द के तौर पर देना। या सर पर बॉधना।
पनमई (स्त्री0):– 1– अगूँठी 2– पुस्तान की बटनी।
पलहामऊ (पु0):– जानवर की सूरत या आवाज के शगुन की इसतलाह जो घर से निकलते वक़्त बाऐं तरफ से हो। अगर दाऐं तरफ से हो ठिआऊ कहलाता है। पहले को घर से निकलते वक़्त ओर दूसरे को मौक़े पर पहुँचने के बाद अच्छा मानते है। और उसके बरख़िलाफ़ बुरा जानते है।
पंचायती कोट (स्त्री0):– 1– मिलकर देव या देवी की पूजा करने का ठगो का तरीका देखो कोट।
2– देव या देवी की भेट चढ़ाने का तरीका जिसके लिए मंगल या बुद्ध का दिन मुक़र्रर करते है।
पिण्डारा (पु0):– देखो ठगं
पनसियारा/पनियारा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद मोती।
पोतनी (स्त्री0):– कपड़े की धुलाई की उजरत (कोअ के लिए ठगो की इस्तलाह)।
पउला/पोला (पु0):– तिराहे या चौराहे पे मुक़ाम पर रास्ता बतलाने की अलामत (निशाने राह) जो पीछे आने वाले ठगो की रहबरी के लिए जमीन पर लकीरे खीच कर बना दी जाए और जल्द आने के लिए ख़िते के सिरे पर मुट्टी का ढ़ेर बना देता है। इस इशारे को पत्थर या पत्ते रखकर भी ज़ाहिर करते है। (करना) चौराहे पर रास्ता बनाने की अलामत बनाना।
प्यादा बिठलाना (क्रिया):– देखो कोला करना।

फॉक (पु0):– भॉग और भीख का गत्रलत तल्लफुजत्र मुराद नादार या मुफ़लिज़ मुसाफ़िर (देना)।
फॉकड़ा (पु0):– ख़रगोश की आवाज का शगुन जब कोई मुसाफ़िर हालते पूच में हमराह हो और ख़रगोश बोले तो उस मुसाफ़िर को कतल नही करते क्योंकि ऐसा करने में आफ़त में मुफ़तिला होने का अनदेशा होता है।
फान्गवॉ (पु0):– पनसियार (पनियारा) ठगो की इस्तलाह मुराद मोती।
फॉन गोली (पु0):– अशरफ़ी या पोटली दक्किनी ठग मुर्गी को कहते है।
पटाकी (स्त्री0):– बन्दूक।
फुटकल/फुटदल (पु0):–चोरो की इस्तलाह मुराद तर्जुबेकार और होशियार चोर जो साथियों से अलैहदा रहकर चारो तरफ की देखभाल रखे और ख़तरे के वक़्त अगाह कर सकें। (चोरी करने के वक़्त का चौकीदार)।
फुटकी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद सपिर।
फुरकना (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद घोड़ा जो तेज़ रफ्तार हो।
फड़ (पु0):– 1– ठगी के लिए ठगो के जमा होने का मुकाम।
2– ठगी का माल तक़सीम करने या मुसाफ़िर को कत्ल करने की जगह (झाड़ना, झड़वाना) मौक़ा वारदात की अलामत को मिटा देना। 2– मक़तूल का निशाना बे निशान कर देना।
फड़ झड़वा (पु0):– वो ठग जो मौक़ए वारदात की अलामात को मिटाने पर मुर्करर हो।
फड़ का दहनी (पु0):– फड़ के काम में होशियार ठग देखो फड़ और फड़ झड़वा।
फड़क देना (क्रिया):– ठग को अपने साथी का किसी काम से मना करना या ख़तरे की जानिब जाने को रोकने का इशारा करना जो रुमाल वग़ैरह गिरा कर करता है।
फुगना/फुगनी (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद नादार मुसाफ़िर या कोई बेक़द्र चीज।
फुलकी (स्त्री0):– 1– ठगो की इस्तलाह मुराद सूरज या पूरा दिन।
2– चढ़ती फुलकी मुराद चढ़ता दिन। उतरती फुलकी मुराद उतरता दिन। चढ़ते दिन का शगुन बुरा और उतरते दिन का कम बुरा ख़्याल किया जाता है।
फूल (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद कोइ पोशीदा ओर सुनसान जगह जो चोरी के मशवरे के जमा होने को मुन्तख़िब करके वहाँ कोई अलामत बतौर

निशानी बना दी हो। आमतौर से कोई फूल बना दिया जाता है ओर यही अलामत वजअ तसमिया है।
फूला (पु0):– माली बाग़बॉ।
ताजना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद किसी चीज़ को खाना।
तास (पु0):– नीलकंठ के देखने के शगुन का नामजो बाऐं जानिब से अच्छा समझा जाता है।
तान्डी (स्त्री0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद अशरफ़ी।
ताऊ (स्त्री0):– भीड़ लोगो का मजमा (चकाना) गिरोह या जमात की की तादात का इज़हार करना।
तावड़ी (स्त्री0):– रुई टॉप।
ताइल (पु0):– काफ़िले से बिछड़ा हुआ मुसाफ़िर जिसके साथी ठगो के हाथ से मारे गये हो और वे बच कर निकल गया हो।
तिपाना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद देबी (देवी) की पूजा करना। लोध करना।
तपोनी (स्त्री0):– देवी की पूजा।
तख़्ता होना (क्रिया):– चोरो की इस्तलाह मुराद छत की कड़ी से सिमटकर तख़्ते के मान्निद बना लेना ताकि घर वालो की नजर से बच जाए।
तरतू नगर (पु0):– गॉव वालो ओर ठगो के दरमियान नइत्तेफ़ाकी या झगड़ा।
तुर्मी (पु0):– ठगो की इस्तलाह में चोर उठाईगिरी या जेब कतरो को कहा जाता है। दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद सुनहरा।
तक़रार (स्त्री0):– गॉव वालो की ठगो के बारे में तशतीत, तहकीक हालात लेह।
तिकहड़ (पु0):– ठगो के साथ धोखा ओर शरारत करने वाला शख़्त।
टुकड़ी (स्त्री0):– बरारी इग पगड़ी को कहते है।
तिकनी/तुकनी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद ऑख या नजर (उर्दू तकना क्रिया) (करना) किसी शख़्त का जासूसी और सूराग़ रसानी के लिए ठगो को नज़र भरकर देखना।
तनदल (पु0):– ठगो के एक क़बीले का नाम देखो ठग।
तंगा/तन्गा (पु0):– अलंगा या अंगरखा।
तूतारी (स्त्री0):– सिंधी ठगो की इस्तलाह मुराद मकर व फ़रेब।
तोन्कल (स्त्री0):– देखो बहताइल।

त्वगड़ (स्त्री0):– ठगो की बोली।
थाप (स्त्री0):– बस्ती के बाहर ठगो के क़ायम करने या जमा होने की जगह।
थापा (पु0):– 1– देखो थाप।
2– दरिया नदी या नाके के किनारों पर ठगो के जमा होने की पोशीदा जगह।
थापी (स्त्री0):– फड़ रास्ते के किनारे की जगह सरे राह।
थारा (पु0):– ठगो के एक क़बीले का नाम देखो ठग।
थपटिया/थपिया (पु0):– ठग कुम्हार या कुहार (दक्किनी ठगो की इस्तलाह)।
थॉग (पु0):– 1– चोरो की इस्तलाह मुराद गाथ की जगह चोरो के मशावरे करने का कोई पोशीदा मुक़ाम।
2– भेद, राज, खोज।
थॉगदारी (स्त्री0):– चोरो का माल छुपाकर पोशीदा मुक़ाम पर रखने की ज़िम्मेदारी चोरो का माल छुपाकर रखने की ख़िदमत।
थॉगी (पु0):– भेदी, पोशीदा चीज़ो की वेह निकालने वाला सुराग रसॉ।
थक्की करना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद मुसाफ़िर को कत्ल न करने का इशारा। इस तरह के ठगो का जमादार मुसाफ़िर के कत्ल के लिए खनकारता है जिसको उनकी इस्तलाह में खुख्खी करना कहते है। इस इशारे पर कातिल मुसाफ़िर के करीब आ जाता है। इस वक़्त अगर जमादार जमीन पर थूक दे तो क़त्ल से मान्अत का इशारा समझा जाता है।
थोरे (पु0):– सौ सिया ठगो के क़बीले का नाम।
थमोनी/थौनी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद किसी मुख़ालफ़त की मुट्ठी में कुछ नग़दी बतौर रिश्वत पकड़ा देना। चुपके से दस्त बदस्त रिश्वत देना।
टॉप (स्त्री0):– देखो तादड़ी।
टॉकी देना (क्रिया):– कुछ रात रहे मुसाफ़िर को कूच के वास्ते तरग़ीब देना।
टबार/टपार (स्त्री0):– गुजराती तबारना बमायनी राज़ जोई सुराख़ गिरी, पूँछ, तहक़ीक़ हाल।
टबाई डालना (क्रिया):– फॉसी देना।
टबाई नाखना (क्रिया):– फॉसी लटका देना।
टिपाना (क्रिया):– टपना (टेपना) ठग का मुसाफ़िर को गुमराह करना यानि ग़लत रास्ता बताकर असल रास्ते से भटकाना।

टप्पल/टपोल (स्त्री0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद बटिया आम सड़क से अलहैदा कच्चा पैदल रास्ता जिसपर ठग धोखे से मुसाफ़िर को ले जाए।
टबड़िया (स्त्री0):– बुग़चा।
टिकटकी (स्त्री0):– ताज़ यानि की सज़ा के लिए मुजरिम को बॉधने को फर्मा।
टुलकना (क्रिया):– 1– ठगो की इस्तलाह मुराद सो जाना, नीद आ जाना।
2– मर जाना।
टिलवॉ/टिनवॉ (पु0):– टिन्ना कमसिन बच्चा यानि पॉच साल की उम्र से कम का बच्चा।
टिलहा (पु0):– कॉगर ठगो का जासूस टहलियॉ जो हालातमालूम करने के लिए इधर उधर फिरता रहे (सन्दूसी मुराद मुख़बरी या ख़बर रसानी)।
टिन्ना (पु0):– देखो टलवॉ।
टो (स्त्री0):– जासूसी किसी चीज़ की जुस्तजू, तलाश (लेना, पाना, लगाना)।
टोली (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद जत्था, जरगा, चन्द, अफ़रात की जमात।
टोम (पु0):– कीमती समान अज़ क़िस्म जरुरीयात ख़ाना दारी ज़ेवर।
टोना (पु0):– ठगो का मकर व फ़रेब मुसाफ़िरो के साथ दोग़ली बातें दो माइनी क़लमा।
टीप (स्त्री0):– ऐसी रोशनी जो ठग मुसाफ़िरो की तलाश या कत्ल के वक़्त करें।
टीकला (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद ठगी के माल में से वो चीज जो अपनी जगह पर शिपाख़्त हो गयी हो यानि जहाँ की हो वहाँ पहचानी जाए।
(टपरना) चोरी की सामान की मौकाए वारदात पर शिनाख़्त हो जाना।
(टपरता/टपरना)
टील (पु0):– ठगो की जासूस जो अजनबी शख़्स को निगाह में रखे और उसका पता लगाता रहे।
ठारी (पु0):– दिलेर और जबरज़त डाकू।
ठाकुर (पु0):– बड़े उल्लू की आवाज घू घू के शगुन का नाम।
ठबाना/ठबना (क्रिया):– 1– मुसाफ़िर को मुक़तल पर बिठाना।
2– किसी दूसरी जगह कायम करना।
ठग (पु0):– मसल मशहूर है कि ''जिसने देखा शेर वो देखे बिलाई जिसने देखा ठग वो देखा कसाई'' इस कहावत से उस फ़िरक़े की सख़्त दिली का अन्दाजा कराना मक़सूद है। हिन्दुस्तान के अहद बदनजमी में ये गिरोह पेदा हुआ और सारे

राह धोखे बाज़ी और अय्यारी से मुसाफ़िरों के क़ालिो और इक्के दुक्के राहगीरों को लूटने का पेशा अख़्तियार कर लिया। उनके कबीले जो हिनदुसतान में जगह जगह फैल गए थे। मुन्दरजा जैल मुख़तलिफ़ नामो से मशहूर थे।

1– सोसिया राजपूताने के इलाके में।

2– मठिया और नीगो बिहार ओर बंगाल में।

3– लोधा (पठान) छपरा, मुज्ज़फरनगर, दरबन्गा, तिरहत में।

4– बलूची और पन्डारे और नवाहे देहली में।

5– जमालदी (पठान) इलाका अवध में।

6– अग्ररिये–आगरा ओर इलाहाबाद में (तफ़सील के लिए देखो जिल्द अव्वल पेशा महामारी)।

7– कोली – 1– अलीगढ़ हापुड़ और बुलन्द शहर वग़ैरह में (तफ़सील के लिए देखो जिल्द दोम पेशा पार्चाबानी)।

2– इस मसकूरा बाला मशकूर कबीलो के अलावा जिला कानपुर के कोहरे, उज्जैन के ओजनिया, रामपुर के रामुसिया, बड़ाड़ के बड़डियॉ और ग्वालियर के बागड़ियॉ और सोपड़ मयाहूर थे।

3– वस्त हिन्द और खानदेशी के इलाक़े में मुन्दरजा ज़ैल सात जाते मशहूर थे।

1– भयन्स

2– बरसोत

3– काचनी

4– थारा

5– गानू

6– तन्दल

7– भेमल वग़ैरह जिसमें हॉडी दाल, सिरी पोती, चिड़िया लोती, धो लोती, एतबार ख़ानी, ककरा (गलरा) काठर, कलन्दर और पचभय्या अलैहदा, अलैहदा घराने थे।

थोला (पु0):– ठगो की इस्तलाह लत्ज़ थाने का ग़लत तल्लफुज़ पुलिस की चौकी।

ठियाऊ (पु0):– देखो पलहाऊ।

ठेंगा (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद कटार (तलवार)।

जाग हो जाना (क्रिया):– चोरो की इस्तलाह मुराद चोरी के वक़्त सोतो का जाग उठना जिसकी वजह से चोरो को भाग जाना पड़े।

जाकड़ॉ (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद ताकतवर मेहनती और हिम्मत वाला आमतौर से राजपूत को कहते है।
जिताई (स्त्री0):– ठगी के लिए सफ़र को ख़ानगी जिसमे जीत कर आने यानि कामयाबी का भरोसा हो (क़लमा मुबारक़)।
जिरगा (पु0):– ठगो की टोली या जमात देखो टोली।
जुल (पु0):– धोखा, झासॉ, फ़रेब (देना, करना)।
जल का गिरा (पु0):– पहाड़ी कौवा जिसका नदी के किनारे दरख़्त पर बैठे बोलना ठगो में बहुत मुबारक शगुन समझा जाता है।
जलहर (पु0):– सारस, जलका ग्रे की तरह उसकी आवाज का शगुन भी बहुत अच्छा समझा जाता है। अगर पलहाऊ और हठिआऊ के साथ हो।
जमालदी (पु0):– मुसलमान पठान का कबिला जिसका दूसरा गिरोह लोधा कहलाता है जो देहली और आगरे से निकलकर अवध में जा बसा था। ओर फिर वहाँ से दरभंगा और तुरहत की तरफ फैल गया। देखो ठग
जंगजोड़ा (पु0):– दो उल्लूओ के बिल मुक़बिल बोलने की आवाज के शगुन का नाम जो बहुत बरा माना जाता है।
जुआरी (पु0):– कमारबाज़ जुआ खेलने वाला।
जिवाला/जिआलू (पु0):–जी जाने वाला वो मुसाफ़िर जिसको ठग अपनी दानस्त में मार चुके हों। मगर उसमे दम हो और जी बचे।
जोड़ (पु0):– चोरो की इस्तलाह मुराद चोरो का साथी।
जेबकतरा (पु.0):– गठकटा पेशावर चोर जो राह चलते की जेब कतर ले या उसमे से चोरी कर लें।
झासॉ (पु0):– फ़रेब धोखा बनावटी बात (देना)।
उदाहरण– साहूकार ने झासू पट्टी देकर काग़ज़ लिखवा लिया।
झॉवर/झावरॉ (पु0):– बड़ाड़ी ठगो की इस्तलाह मुराद मुसलमान।
झिरनी/झोनी (स्त्री0):– मुसाफ़िर के कत्ल करने का कलमा जिसको सुनकर क़ातिल तामील करता है। (देना)
झिड़ावा (पु0):– ठगो में भाग जाने का कलमा या साथी को भगा देने का क़लमा।
भिड़ावन (स्त्री0):– मौकाए वारदात से ठगो की फ़रारी (जाना) मौकाए वारदात से भाग जाना।

झिलड़ा/झिल्लर (पु0):– पोटा, पेट, (शिकम) ढ़य्या, जानवरो का पोटा जो गर्दन के नीचे होता है। (शुमाली हिन्द के ठगो की इस्तलाह)
झमाना (क्रिया):– 1– पहचान लेना।
2– जान पहचान आदमी।
झूअड़ना (क्रिया):– चोरो के माल को छुपा देना (झूवड़, रमजिया, कलमा इशारा छुप जाने का)।
झोसा (पु0):– 1– कमजोर और दुबला मुसाफ़िर।
2– मुफ़लिस और नादान मुसाफ़िर।
3– छोटा मामूली दर्जे का गॉव।
झुनड़ा (पु0):– नाटक सिंधी ठगो का गिरोह जिसका नाम देवी की पूजा में लिया जाता है।
झोनी (स्त्री0):– देखो झरनी।
झीमा (पु0):– मुल्तानी ठगो की इस्तलाह मुराद पेट देखो झलरा।
चाप (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद चलने में पेर की आहट। चोर जाग का खटका पाकर चुपचाप चला गया।
चाम जाना/चूम जाना (क्रिया):– ठग का गिरफ्तार हो जाना। या ठग लेना।
चूम जाना (पु0):– ठग का गिरफ्तार हो जाना।
चाम लेना (क्रिया):– ठग को गिरफ्तार कर लेना।
चामियाइ (स्त्री0):7 ठगो के कत्ल के वक़्त मक्तूल के हाथ पकड़े रहने का फ़ेल।
जानड़ (स्त्री0):– देखो भटोत (भटोती) (बन्गू ठगो की इस्तलाह)।
जानडियाई (स्त्री0):– मुसाफ़िर को कत्ल करने का अमल देखो भटोती।
चटाई (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद रिश्वत या किसी को अपना बनाने को कुड देना। मुॅह भरना बमायनी मुख़ालिफ़ से रोकना।
चटाव (स्त्री0):– धराइ वो रकम या माल का हिस्सा जो ठगी के माल की चौकीदार को दी जाए चौकीदार का हक़।
चिड़चिड़ा (पु0):– देखो बारह मुनि तपोरी।
चिड़िया पोती (पु0):– ठगो के एक कबीले का नाम देखो ठग ुकिरा –3
चढ़ती फुल्की (स्त्री0):– देखो ुल्की फिकरा – 2
चक (पु0):– भड़क डगो से मुसाफ़िर का चौकस हो जाना शुबा करना।
चक बैल (स्त्री0):– मुसाफ़िर जमा हो या कोई बस्ती हो।

चकरा (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद तला दानी (सोने की पोटली)
चुक्कड़/चक्कगारा (पु0):– कुत्ता और उसके देखने के शगुन का नाम।
चलत (स्त्री0):– ठग की दो घड़ी दिन रहे ठगी के लिए खानगी।
चमाना (क्रिया):– भेड़िये के रोने की आवाज का शगुन।
चमोटा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद दूध पीता बच्चा जो मॉ से चिमटा रहे।
चॅगड़ी (पु0):– तिलंगानी ठगो की इसतलाह मुराद मुसलमान ठग (चंगेज खॉ के मनसूबे है) शुमाली हिन्द में नायक कहलाते और बाजारों की भेस में इगी करते थे। ये लोग अपनी लड़कियो को मार डालते थे।
चमोसी (पु0):– देखो चमोसियॉ।
चमोसियॉ (पु0):– समसिया मुसाफ़िर को कत्ल करते वक़्त उसके हाथ पकड़े रहने वाला ठग (तिलंगानी ठगो की इसतलाह)।
चंगना (स्त्री0):– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद लड़की।
जन्मूरिया (पु0):– ठगो के एक कबीले का नाम देखो ठग (बरसोथ)।
चवॉ (स्त्री0):– देखो पतार (तिलंगानी ठगो की इस्तलाह)।
चोर (पु0):– .....छुटा है।
चोर रास (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद सहज़र, उठायी गिरा या जेबकतरा।
चोर कना (पु0):– बतौर इत्तला ख़बर देना।
चौका देना/चौकारा देना (क्रिया):– हिन्दी चौकाना बमायनी भूल जाना। ग़लफ़त हो जाना। ठगो की इस्तलाह में मुसाफ़िर को कत्ल करने के इरादे से किसी जगह बिठाकर धोखा पट्टी और बहलावे की बाते करना जिससे उसका ध्यान भटके।
चौकाना/चौकन्ना (क्रिया):– हिन्दी बमायनी होशियार करना या ख़बर करना होशियार होना बख़बर होना। ठगो की इस्तलाह में ठगो के मुखबिर का मुसाफ़िरो को देख पाना या दूर परे से देखकर खबरदार हो जाना या बरख़िलाफ उसके मुसाफ़िरो को ठगो की ख़बर मिल जाना। जिसको ठगो की इस्तलाह में चोक लेना कहा जाता है।
चौधना (क्रिया):– ठगो की इसतलाह मुराद पगड़ी बॉधना।
चौधी (स्त्री0):– पगड़ी।

चीत (पु0):– हिन्दी चेतना बमायनी होशियार हो जाना, सम्भल जाना। ठगो की इस्तलाह में भड़के हुए मुसाफ़िर को कहते है जो ठगो की खबर पाने से चौकन्ना हो गया हो। (जाना)
चेसा (पु0):– मालदार मुसाफ़िरं
चेहा (पु0):– डपोक और बुज़दिला मुसाफ़िर।
छान्दा (पु0):– छपर या छानू या कपड़े का सायबान जो धूप वग़ैरह के बचाव को ठग आरजी तौर पर लगाये।
छान्दो (पु0):– होशियार तर्जुबेकार ओर पक्का ठग जो अपना भेद।
छत करना (क्रिया):– चोरो की लगाना यानि मोखा करना जिसके जरिए अन्दर दाखिल हो सकें।
छिछकारी (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद कलमा इशारा जो चोरी के वक़्त अपने साथी को मुख़ातिब करने के लिए मेहमल आसवाज में दबी ज़बान से बोला जाए।
छरागी (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद बैरागी।
छरेटा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद पंडित मर हटा या लड़का।
छुमन्ना (पु0):– ब्रहमन।
छन्गण (पु0):– चोर राहज़न।
छेप (स्त्री0):– अशरफ़ी या ठप्पा किया हुआ सिक्का।
छेलना (क्रिया):– हाकिमें हुक्म से कैद से रिहाई पाना।
छेनहर/छीहंठा (पु0):– जंगल वीराना हिन्दी छेड़ बमायनी मजमें का अलहैदा हो जाना। मनतशा हो जाना इस्तहार मुराद तलवार।
छींग (स्त्री0):– बड़ाड़ी ठगो की इस्तलाह मुराद तलवार।
छेपटा (पु0):– भड़का पम्मी मुराद रुपया।
दादा देहड़ (पु0):– ठगो के एक गिरोह का नाम जिसकी नेयाज़ दो पैसे की शराब है इस गिरोह की कब्र कसबा बिकौना जिला अलीगढ़ में है।
दाती (स्त्री0):– रात के वक़्त दो गिदड़ो के लड़ने की आवाज के शगुन का नाम देखो भालू।
पतवा (पु0):– ख़रगोश के आवाज के शगुन का नाम देखो धइय्या।
दुरका (स्त्री0):– शामा चिड़िया की आवाज या देखने के शगुन का नाम जो बहुत मौअतबर शगुन माना जाता है।

दिस्तर (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद दिन या दिन की रोशनी रोज़ रोशन।
दम देना (क्रिया):– शोहदो की इस्तलाह मुराद काम निकालने की बात बना देना। धोखा देना, दिलास देना।
उदाहरण– पुलिस ने दम दिलासा देकर।
दन तेरु (पु0):– गधे की आवाज के शगुन का नाम दक्किनी ठगो के इस्तलाह जो बहुत मओतबर समझा जाता है। अगर गधा सामने से मुँह खोलकर बोलता हुआ आए जो जो बदशगुनी है। इसको इसतलाहन माथा पोड़ा और बाज़ डण्डा कहते है। हिनदुस्तानी ठगो में कान्ता और खुरगा के नाम से ये शगुन मौसूम था।
दौड़ (स्त्री0):–चोरो की इस्तलाह मुराद मौकाए वारदात पर पुलिस की आमद (आना, लाना)।
दोना (पु0):– कटगर व लक्कड़ जिसमें कैदी या मुजरिम का पेर फसा कर बन्द कर दिया जाए।
दोहर (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद ज़न व शौहर, खाविन्द और जोरु मियॉ बीबी।
धागा (पु0):– दावे का ़लत तल्लफुज़ (होना, करना) के मुकाम का पता लगाना, सुराग लगाना।
धागल (पु0):– लिखा हुआ या सादा क़ाग़ज।
धामू (पु0):– दिन रोज़ रोशन।
धाड़र (पु0):– गॉव वालो का नरगा या मजमा जो ठगो को पकड़ने को हो। या सरकारी प्यादों की टोली।
धराई (स्त्री0):– देखो चटॉव।
धुरधर (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद फॉसी जो मुसाफ़िर के लिए बनायी जाए (करना)।
धुर डालना (क्रिया):– फॉसी दे देना।
दहमा (स्त्री0):– बकरी या भेड़।
धमाका (पु0):– छोटी नाल की बन्दूक (टॉमी गन)।
धमांसा (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद चिल्लम में पीने का तम्बाकू गूड़ाकू।
धूत (पु0):– मुसाफ़िर को फुसलाकर जाल में फॉसने वाला ठग।
धोकड़ा (पु0):– 1– ठगो की इस्तलाह मुराद कुत्ता खुजाऊ।

2– चुग़लख़ोर
3– ठगो को गिरफ्तार करने वाला।
धौस (स्त्री0):– 1– धोखा फ़रेब चकमा।
2– धमकी डराव (आना) मौकाए वारदात से धोखा या फ़रेब देकर निकल भागना (देना) धमकी देना डरावा बताना।
धीया (पु0):– खरगोश की आवाज का शगुन जो हर हाल में बुरा मानते है। (होना) दही भुरकाना (क्रिया):– एक वेट के नाम जिसमें तीन मरतबा दही मुँह में लेकर आसमान की तरफ कुल्ली करते है जिसका मक़सद किसी शगुन की नहसत को दूर करना होता है।
डॉपनी (स्त्री0):– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद कटार (शमशीर)।
डॉटन (स्त्री0):– देखो चकबैल।
डाका (पु0):– डकैती लुटेरों का मुसाफ़िरों पर सरे राह धावा और लूट (डालना, पड़ना)।
डाकू (पु0):– डकैती, दहाड़ी, राहज़न (रहज़न) सरे राह, मुसाफ़िरो को लुटने वाले चोर जो मरने और मारने से निडर होकर मुसाफ़िर को लुटने के लिए धावा करते है।
डिबई (स्त्री0):– राह, रास्ता, सड़क जो नशेब में हो मुराद खाटी लत्ज़ दो बना से मुशतकी।
डिध (पु0):– मुसाफ़िर राहे रुह।
डिड़ होती (पु0):– वो मुसाफ़िर जिनके साथ कोई शार्गिद पेशा या ख़िदमत हो। मुराद ढेवली कुव्वत वाला।
डकैत (पु0):– देखो डाकू मुसाफ़िर पर मुकाबले आकर हमला करके लौटने वाला।
डकैती (स्त्री0):– देखो डाका।
डग्गा (पु0):– 1–ठगो की इस्तलाह मुराद हुक्का।
2– बुढ़ा आदमी।
डण्डा (पु0):– देखो दन्तेरु।
डोलिया होना (क्रिया):– चोरो की इस्तलाह मुराद पकड़ा जाना। सरकारी प्यादों का पकड़ कर ले जाना गिरफ्तार हो जाना। (देखो डोली जिल्द–पंजम)
डोनइ याना :– डगो के बस में आकर मुसाफ़िर की वायवेला करना। फरियाद करना लुकारना।

ढॉप (स्त्री0):– ठगो की इसतलाह मुराद कुत्ते या बिल्ली का पख़ाना जिसका देखना शगुन होता है।
ढ़ाड़ी (पु0):– देखो डाकू।
ढ़मरे/ढ़ामीरे (पु0):– तॉबे, पीतलत्र वग़ैरह के वर्तन बाज़ ठग ढ़ानड़ कहते है।
ढ़ानड़/ढ़ॉड़ (पु0):– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद तॉबे पीतल के वर्तन।
ढ़डू (पु0):– तिलंगाई ठगो की इस्तलाह मुराद लोटा।
ढगसा (स्त्री0):– झाड़िया का मैदान या पहाड़ी (तिलंगाना) इस्तलाह मुराद कलाल शराब फ़रोश्त।
ढ़लहा (पु0):– पैसा या तॉबे का सिक्का।
ढ़िड़ी/ढ़ेड़ी (स्त्री0):– सराए या छोटी बस्ती ड्योढ़ी का ग़लत तल्लफुज़।
ढ़ेगी (स्त्री0):– पानी भरने या कुएँ से निकालने का वर्तन (लोटा)।
ढ़ोका (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह में चौकी को कहते है। और हिन्दुस्तानी ठग रॉकी बोलते है।
ढ़ोलन (स्त्री0):– बुढ़ी औरत (तिलंगाना)।
ढ़ेरना (पु0):– देखो झल्लड़ ढीमा (शिक्कम)।
राबा (पु0):– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद तागा, डोरी।
रामोसिया (पु0):– ठगो के एक गिरोह का नाम देहली से निकाले जाने पर रामू में जा बसे।
रावकार (पु0):– साहूकार महाजन।
रिच्छी (पु0):– वो ठगा जो साथियो से पीछे रहे।
रमुन (पु0):– शगुन लेना।
रुक तोती (स्त्री0):– शगनोती शगुन लेने का अमल।
रमासी (स्त्री0):– रम्ज़ का गत्रलत तल्लफुज़ मुराद रम्ज़ की बाते ठगो का इशारों और कनायों में अपने पेशे या किसी काम के मुत्तालिक़ आपस में भेद की बाते करना जिसको ग़ैर न समझ सकें।
रमख़िया (पु0):– रमज़िया का ग़लत तल्लफुज़ रम्ज़ की बाते या रमज के मतलब को समझ जाने वाला शख़्स।
रम्बूआ (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद तिलंगाने का इलाक़ा।
रमगीला (पु0):– रंगीन या रंगदार नग ठगो में ख़ासतौर से सॉगे को कहा जाता है।

रुवारॉ (पु0):– भालू गीदड़ की बोली के शगुन का नाम।
रुपारेल (पु0):– ममूले चिड़िया के देखने का शगुन।
रुपोनिया (पु0):– ख़रोगश की आवाज के शगुन का नाम इस शगुन को बाज़ ठग धीया कहते है और बाज़ फॉगड़ा।
रोके (स्त्री0):– चौकीदार या पुलिस के जवान के रहने की जगह जो सस्ते पर निगहबानी को बनी हुई हो।
रोकिया (पु0):– चौकीदार।
रोगायें (स्त्री0):– जोती या जूती और पैर के निशान ज़मीन पर जिससे खोज निकाला जाए।
रह जाना (क्रिया):– चोरो की इस्तलाह मुराद किसी साथी का पकड़ लिया जाना या गिरफ्तार हो जाना।
रहज़न (पु0):– बटमार राह चलते मुसाफ़िर वग़ैरह की चोरी करने वाला सरे राह लूट मार करने वाला चोर।
साता (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद शगुन करने का हफ़्ता सात रोज़ इन दिनों में सर मुड़वाना कपड़े धुलवान, नहाना, ख़ैरात करना बीबी के साथ रहना और ग़ैर औरत को घर में आने न देना और बजिज़ मछली के दूसरी किस्म का गोश्त खाना मना होता है। ये तमाम बाते ठगी के लिए जाने वाले ठगो की सलामती और कामयाबी से वापसी के लिए की जाती है। और ठगी में मुसाफ़िर के कत्ल की इब्तिदा होने की मिन्नत समझी जाती है इस मिन्नत के पूरा होने पर हरी तरकारियॉ और उम्दा खाने खाते है।
साटॉ (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद छोटी तलवार और हाथ के कड़े को कहते है।
साचॉ (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद ताबूत लसहद मदफ़न जो कबतूल के लिए बनाया जाए जो लाश के बराबर और गहरा हो।
सॉनहर (स्त्री0):– रोकड़ (नक़द रकम)।
सतक (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद सोना (तिला और ज़र)।
सित्तकाला (पु0):– सोने का सिक्का (हुन) वज़नी साढ़े तीन माश।
सुतली (स्त्री0):– एक कौड़ी या बीस अदद चीज़ो की मज़मूई तादाद।
सट्टा (पु0):– ऐसा जुआ जो क़यास पर खेला जाए (लगाना)।
सरधनी (स्त्री0):– धोती साड़ी।

सिरमा (पु0):– सर खोपरीं
सखा (पु.0):– जमालदी ठगो की इस्तलाह मुराद बनिया बक्कल।
सिया पोती (स्त्री0):– देखो चिड़िया पोती।
सिसकार (पु0):– जमालदी ठगो की इस्तलाह मुराद धोबी।
सुसल (स्त्री0):– मुसाफ़िर को राम करने का तरीका मिलनसारी (करना)।
सिक्का (पु0):– फॉसी का फंदा या फॉसी देने की रस्सी या रुमाल (दक्किनी ठग)।
समसिया (पु0):– मुसाफ़िर को कत्ल करने में मदद देने वाला हाथ पकड़ने वाला समसियाई करना।
सुन (पु0):– ना तर्जुबेकार और नया ठग जिसने किसी को कत्ल न किया हो।
सुनारी (स्त्री0):– देखो अक्कासी।
संठना (पु0):– बिहारी ठगो की इस्तलाह मुराद तलवार बन्द ठग (साठा हिन्दी बमायनी डण्डा)।
सुन्दरी (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद देवासिलाई।
सुन लेना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद आहट लेना पैरो की आवाज पर कान लगाना टो लेना।
सवाली (स्त्री0):– लोमड़ी (तिलंगानी ठग की इस्तलाह)।
सोन्क फरु (पु0):– देखो दन्नतेरु।
सोथा (पु0):– मुसाफ़िर को फुसला बहलाकर अपने कब्ज़े में लाने वाला ठग (सोथीआइ)।
सोधना (क्रिया):– मुसाफ़िर के माल का जायज़ा लेना। अन्दाज़ा लगाना या देखभाल कर मालूम करना।
सोसिया सोस (पु0):– साहूकारों के भेष में ठगी करने वालो ठगो का झरगा जो ज़ात के धाँग थे। जयपुर, उदयपुर, बुन्दी, रतलाम और टोंम के इलाक़ो में आबाद और नायक या तिकोरी के खिताब से मशहूर थे। मुसाफ़िर का खोज निकालने वाला जासूस।
सोन्टरका (पु0):– ठगी की मुहिम में पहले मुसाफ़िर का कत्ल बतौर मिन्नत किया जाए।
संठियाना/सठियाना (क्रिया):– देखो सठना तलवार से कत्ल करना।
सहटोत (पु0):– मुसाफ़िर को तलवार से कत्ल करने का अमल देखो भटोत।

सयब (पु0):– मकर व फ़रेब धोखा जाहिरी और बनावटी बात (ठगो की इस्तलाह)।
साइट (स्त्री0):– देखो फूल ये लत्ज़ अंग्रेजी मामूल होता है। चारो ओर ठगो में ज़बान ज़द हो गया हो।
सइटना (पु0):– फर्राटा या गला गुटने के वक़्त की आवाज।
सेट (स्त्री0):– सीटी का मुक़फ़िफ इस्तलाहन चिड़िया की आवाज़ के शगुन का नाम।
सैन्दरी (स्त्री0):– मूँगा (दक्किनी ठगो की इस्तलाह)।
सैन्ध/सैन्धी (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद दीवारो का मोखा जो कोमल करके बनाया जाए। कोमल नक़ब (सैन्धी, तिलंगी बमायनी तर्ज़)।
सैनी (स्त्री0):– देखो झिरनी (देना)।
सिंगारे (पु0):– सै गुनाह का तल्लफुज़ (तिमना)।
शक़ज़ती (स्त्री0):– देखो रुगन और रुगनुती।
शगुन (पु0):–फ़ारसी लत्ज़ शगुन का उर्दू जल्लफुज़ किसी अमल के शुरु करने से क़ब्ल उसके नतीजे का भलाई बुराई वहमी अफ़ीदा या नेक व बद के लिए मिसाल कायम करके उससे मुततबिक़त करने का तरीका (लेना देखना) ठग और चोर। शगुन लेने के बड़े अक़ीदत मन्द होते है। अगर उसके अकीदे के खिलाफ शगुन हो तो अपने अमल से बाज़ रहते है। शगुन की चन्द कहावते है। ख़रबाया, लीलादायॉ लम्बे बोले सियार सुख सन्पत आन्नद भईया थैले लादे चार खेट मीत घर दायें बायें बन्ज़ कराये बोले तितर दिन को बोले सियार तज चलिए। वो ढलसेरा नही पड़े अचानक धार बायॉ गेदी, सोना लेदी।
शोहदा (पु0):– गुण्डा बाज़ारी इस्तलाह मुराद आवारा गर्द लड़ने भिड़ने से निडरं/बद इतवात।
गट (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद गिरोह टोली।
गुण्डा (पु0):– देखो शहदा ओबाश, बदमाश, फसादी, लुक्का बम्बई की मुक़ामी इस्तलाह में मवाली कहला है। और बंगाल में गुण्डा।
क़ज़्ज़ाकू (पु0):–तुर्की बमायनी राहज़न, डाकू, लूटेरे।
कॉगड़ (पु0):– देखो टलहा।
काट (स्त्री0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद रिश्वत।
काठी (स्त्री0):– 1– राज़जोई, जासूसी। 2– बातचीत बाहमी मशवरा। 3– जिस्म का ढ़ाचा देखो हाड़।

काड़ (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद ठगो की सुराग लगाने की जुस्तजू गॉव वालो की तलाश और तहक़ीक़।
काडहू (पु0):– ठगो का पता लगाने उनकी शिनाख़्त करने वाला शख़्स।
कागरा (पु0):– पहाड़ी कौवा जिसकी आवाज से ठग शगुन लेते है।
काल (पु0):– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद गॉव।
कालगती (स्त्री0):– शराब हिन्दी का बमायनी शराब बनाने वाला।
कालन्दी (स्त्री0):– मिठाई।
काली (स्त्री0):– रात या अन्धेरा।
कॉप (स्त्री0):– रिश्वत।
कान्ता (पु0):– देखो दन्तेरु।
कानथेन (स्त्री0):– छुरी।
कॉनथना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद छुरी से मुसाफ़िर का पेट फाड़ डालना।
कानूरा (पु0):– बौखलाया हुआ मुसाफ़िर जो खैफ़ या चीख़ पुकार से परेशान हो।
कबिता (स्त्री0):– जमालदी ठगो की इस्तलाह मुराद मुसाफ़िर का कत्ल।
कबिताई (स्त्री0):– मुसाफ़िर को कत्ल करने का अमल।
बबूला (पु0):– कोदन और बेवकूफ़ ठग।
बथिया (पु0):– चुग़लख़ोर ठग।
बथियाई (स्त्री0):– चुग़लख़ोरी।
बपेटी (स्त्री0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद बटेरी।
तर्रा (पु0):– उल्लू की आवाज के शगुन का नाम बाज़ ठग उसको ठाकुर कहते है।
कर साल/कर सान (पु0):– जवान नर हरन के देखने के शगुन का नाम।
कुखा (पु0):– मुरब्बा शक्ल का घड़ा जो लाश या माल के छुपाने को बना लिया जाए।
क्रिया करी (स्त्री0):– देखो लघाई लाश या माल छुपाने को गढ़ड़ा खोदने का अमल। जमीन में गढ़हे की खुदाई।
किसवारा (पु0):– कुऑ जो जरात की ज़रुरत के लिए खेत में खेद लिया जाए।
कस्सी (स्त्री0):– कुदाल ठगो में कस्सी की कसम बहुत अहम समझी जाती है। माही भी कहते है।

कल्लू (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद चोर या वो शख़्स जो छुपकर या अन्धेरे में चोरी करें।
कलवई (स्त्री0):– चोरी करने का फ़ेल।
कुमिल (स्त्री0):– देखो बर्ग।
कमन्द (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद ऐसी रस्सी जिसके जरिए मकान की छत पर चढ़ा जाए। उसके लिए चोर एक जानवर को जिसे पटड़ा गो कहते है काम में लाते है। रस्सी उसकी कमर में बॉध देते है। और ऊपर चढ़ा देते है। और जब रस्सी खीचो तो वो ज़मीन पर पकड़ लेता है और उल्टा नही खिचता (डालना, लगाना)।
कंठी (स्त्री0):– कश्ती (नॉव) लोधा, ओर जमालदी ठगो की इस्तलाह।
कुनिजल (स्त्री0):– सास्स के बोलने और देखने के शगुन का नाम।
कुन्दा/कुन्दू (पु0):– माददा पेट का पूरा हिस्सा (ले, लो) पेट फाड़ दो।
कन्सुनिया (स्त्री0):– कान लगाकर बात करना किसी बात की खबर लगाना (लेना)।
कनेली (स्त्री0):– मुर्की अन्टी, कान का जेवर बाली या बुन्दा।
कोत (स्त्री0):– देवी की पूजा।
कोतारा (पु0):– ओघड़, घड़तल (घोड़ा) बुरे शगुन की इस्तालाहात।
कोतक (पु0):– करतूत, इफ़आल, इतवार।
उदाहरण– 1–आवारा मिजाज़ लोगो के कोतक बिगड़ जाते है।
2– कोदन और नअहल।
कोजाउ/कजाउ (पु0):– देखो धोकड़।
कूद (स्त्री0):– खुश्की की राह।
कोरी कमर (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद बाते मारने की सजा नही पाया हो बतौर इशारा बोलते है।
कोड़का (स्त्री0):– चॉदी रुपया।
कोड़ी (स्त्री0):– (मारना, डालना) ठगो की इस्तलाह मुराद मार की तक़सीम के लिए पासा डालना (कुरा अन्दाज़ी)।
कोकाई (स्त्री0):– देखो ठाकुर।
कोमल (स्त्री0):– नक़ब मोखा गट्टा जो मकान में घुसने के लिए चोर दिवार फोड़कर बना लें। देखो सेंध (लगाना)

कोहमा/खोगा (पु0):– खेड़ा छोटा से गॉव जो पहाड़ी की तलेटी में नज़र से ओझल हो।
कीटा (स्त्री0):– शराब की तलछट या अदना दर्जे की एक बारा शराब।
खाडू (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद ठगो की जमात या टोली (फूलना)।
खाल खोसिया (पु0):– हज्जाम बाल कतरने और मूड़ने वाला कमेरा।
ख़ानचू (पु0):– गअ कतरा (जेब कतरा)।
खब्बा (पु0):– खेड़ा कस्बा।
खताना (क्रिया):– ठगो का भेद आम लोगो पर ज़ाहिर कर देना।
खतवा (पु0):– ठगो के भेद और मामलात को आम लोगो पर ज़ाहिर कर देने वाला।
कुटाना (क्रिया):– थ सफ़र करने को ठग का मुसाफ़िर से दोस्ती गॉठना। मुसाफ़िर को मिलाकर अखिर शब्द सफ़र को साथ ले जाना।
खटब (पु0):– पिछली रात सफ़र को खानगी।
खुटब अकासी (स्त्री0):– पिछली रात को सील के बोलने की आवाज का शगुन या वो चील जो पिछली रात को बोले।
कछवा (पु0):– उठायी गीरा।
खुड़ा (पु0):– बुढ़ा मुसाफ़िर या बुढ़ा आदमी।
खर कनिया (पु0):– 1– देखो धेया।
2– खरागोश लॉघना खरगोश का रास्ता काटना।
खुरगा (पु0):– देखो दनतेरु।
खुरैरी (स्त्री0):– देखो पतोरी।
खरेंचा (पु0):– नाला।
खड़क/खड़न्क (स्त्री0):– 1– पथरीली या कंकरीली सख़्त ज़मीन।
2– कुदाल की आवाज जो पथरीली ज़मीन पर पड़ने से निकले।
उखक्की करना/खुक्की करना (क्रिया):– मुसाफ़िरो को ठग कर खुक (मुफ़लिस) बना देना (खुक हिन्दी बमायनी खाली)। खेकला जिसमें कुछ न रह हो।
खल्ली (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद मुफ़लिस और कोढ़ी कोढ़ से मोहताज शख़्स (हिन्दी खल और खल्लर बमायनी बजान लिए दम जिसमे सत न हो)।
उदाहरण– लकड़ी गल कर खुल गई।

खुलेता (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद ऐसा गॉव या खेड़ा जो खुत्रले मैदान या टीले पर वाक़े।
खुमकुम (पु0):– दरवाज़ा दहलीज़ खूम।
खूमना (क्रिया):– पिछड़े या पीछे रहे मुसाफ़िर का अपने साथियो से जा मिलना।
खोटीला/खोदीला (पु0):– सिक्का मज़रुह, ठप्पा लगा सिक्का अंग्रेजी।
खोज (पु0):– निशान अलामत वजूद (पाना, लगाना, निकालना, लगना, बिगड़ना) हिन्दी खुजड़ा बमायनी निशानी याद।
खोजी (पु0):– खेजी निकालने वाला देखो खेज (राहज़नो की इस्तलाह)।
खोर (पु0):– लश्कर, फौज।
खोरची/खुरची (पु0):– बाल तराश उस्तरा।
खोड़ा (पु0):– देखो कोतार।
खोसड़ा (पु0):– 1– ठगो की इस्तलाह मुराद चेहरा।
2– पता, निशान, शिनाख़्त लफ्ज़ खोज और खोजड़े का गवारी तल्लफुज़।
3– वो मुसाफ़िर जो ठगो के हाल से वाक़िफत्र होकर चौकन्ना हो गया हो।
खोमड़ा (पु0):– खुम का इस्मे मुसगिर देखो खुम ठगो की इस्तलाह मुराद हन।
खोंसना (क्रिया):– लूटना और झपटा लेना, बहला फुसलाकर दूसरे का माल ऐठ लेना।
खनेत (स्त्री0):– देखो बैल।
खेदड़ा (पु0):– सरकारी प्यादा (हिन्दी लफ़्ज़ खेदा लेना बमायनी पीछा करना, घेरना)।
खेरी होना (क्रिया):– मिट्टी के वर्तन के टुटने का शगुन का नाम।
गाभा (पु0):– गभ्भे का ग़लत तल्लफुज़, तोशक, कद्दा।
गाजना (क्रिया):– पेट भरना, रोटी खाना (हिन्दी लफ्ज़ गज्जा बमायनी जमा नग़दी भरपूर चीज़)।
गान करना (क्रिया):– देखो चौका देना।
गानू (पु0):– गान करने वाला देखो गान करना।
गाइल (स्त्री0):– नग़दी जो गल्ले में जमा हो। (तफ़सील के लिए देखो लफ़्ज़ गल्ला और गुल्लक जिल्द शशम।
गठ्ठा (पु0):– लाश की पोट।
गटहा (पु0):– लाश बरदार।

गटकटा (पु0):– देखो जेब कतरा।
गधिया (पु0):– तिलगानी ठगो की इस्तलाह गदा गर का इस्मे मुस्ग़र।
बरदावर (पु0):– वो ठग जो लूट मार के लिए इधर उधर मुख़तलिफ़ मुक़ामात पर फिर कर मौका तलाश करें (करना)।
गुरधा (पु0):– ठगो की इसतलाह मुराद गर्दन गला।
गुरधाएं देना (क्रिया):– भटूतन करना, फॉसी देना।
गुरगॉठ (स्त्री0):– फॉसी की रस्सी या फन्दा।
गृहकट (पु0):– देखो गटकटा जेबकतरा।
गुल्ली (स्त्री0):– मुंगे का दाना।
गोत (स्त्री0):– क़बीला।
गोरखी (स्त्री0):– छोटी छुरी या खंज़र।
गोना (पु0):– चोरो की इस्तलाह मुराद चोरो का माल जो चोर के पास हो या जिसको वो उठा कर ले जा रहा हो।
गौने से लिया जाना (क्रिया):– वो चोर जो चोरी का माल ले जाते हुए पकड़ जाए।
गौने से होना (क्रिया):– वो चोर जिसके पास चोरी का माल हो।
गौनी (स्त्री0):– चोरी की इस्तलाह मुराद जूती।
गोनियात (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद एक या दोनो हाथ टुआ हुआ आदमी।
गोह (पु0):– पटड़ा गो, नेवले की शक्ल का एक जानवर जिसके जरिए कमन्द लगायी जाती हो देखो कमन्द।
गीदा (पु0):– अटेप वाला ठग देखो अटेप।
गोदिया (पु0):– चौकीदार (तिलंगानी ठगो की इस्तलाह)।
गेल (स्त्री0):– हमराह, साथ, करीब–करीब, बराबर–बराबर।
उदाहरण– मेरे गेल चला आ।
गेलाओ (पु0):– साथि–साथ चलने वाला हमराही, साथी।
घाड़ना (क्रिया):– फॉसी देना।
घायल (पु0):– ज़ख़्मी जिसकी तलवार या खंज़र से बहुत बड़ा घाव पड़ गया हो। देखो घाव जिल्द न0 7 (सात)।
घुटोनी (स्त्री0):– फॉसी या फॉसी का फन्दा।

घमसना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद कत्ल व ग़ारत गिरी के लिए मुसाफ़िरो के क़ाफिले पर जा पड़नां लूटमार करना हल्ला करना, घमसान, हिन्दी बमायनी तेज़ शदीद या सख़्त कशमकश।
घुन्ना (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद दिल में बात रखने वाला मगरा दिल का भेद न बताने वाला।
घोंघी (स्त्री0):– (फेकना, डालना) देखो कौड़।
घेस (पु0):– ग़ाज़ का ग़लत तल्लफुजत्र गुससे का फुनकारा।
लापना (क्रिया):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद जानवर की कुरबानी करना (जाप, हिन्दी बमायनी धारदार हथियार की बाड़)।
लादना (क्रिया):– ठगो की इस्तलाह मुराद फॉसी देना।
लॉग लगाव (स्त्री0):– चोरो की इस्तलाह मुराद चोरी के लिए मकान में जाने का सहारा या ऐसा जरिया जिसपर से चोर ऊपर चढ़कर अन्दर जा सकें।
लागो (क्रिया):– चोर जो किसी के पीछे लगा रहे और जब मौका पाये अपना काम कर जाये।
लमकन/लमकान (स्त्री0/पु0):– खरगोश।
लॅगूरी (स्त्री0):– पनहाई तावान जो चोर को चोरी किये हुए मवेशी के लिए दिया जाए। धोड़ छुड़ाई।
लइय्या (पु0):– 1–चोरो की इस्तलाह भोला और सीधा आदमी जो ऐच पेंच की बात न समझता हो।
2– बैल।
लप रहना (क्रिया):– चोर की इस्तलाह मुराद चोरी के लिए किसी जगह छुप रहना।
लपवॉ (पु0):– उझायी गिरी जो चलते फिरते मौका पाकर कोई चीज चोरी की नियत से मुट्ठी में दुपा लें। (लप बमायनी मुट्ठी)
जपोट (पु0):– शोहदो की इस्तलाह मुराद बाते बनाने वाला बातो का चोर बात उड़ाने वाला।
लताड़ (स्त्री0):– कटार छोटी शमशरी (हिन्दी लताड़ बमायनी सरजंश डॉट. डपट.)
लटकनियॉ (पु0):– गले या कमर में लटका लेने का बटुआ या थैली जैसा के क़दीम जमाने में मुसाफ़िर अपने साथ रखते थे।

लुक्का (पु0):– अरबी लुक बमायनी बे बालो का साफ़ उर्दू में ऐसे शख़्स को कहा जाता है जिसकी कोई आगरु न हो। या जिसका आबरु इज्जत का पास न हो। नघर इन्द्रा देखो गुण्डा और शोहदा।
लध्धा (पु0):– लाश गाड़ने का गढ़हा खोदने वाला ठग।
लघाई (स्त्री0):– गढ़हा या लहद खोदने का अमल।
लघोठा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद जिस्म लाश।
लुल (पु0):– 1– ठगो की इस्तलाह मुराद सर बरेदा लाश या ऐसी लाश जो पहचानी न जाए। (उर्दू बमायनी बेवकूफ़ नसमझ, बेख़बर)।
2– सर कटी गर्दन।
लमपूचा (पु0):– बड़ारी ठगो की इस्तलाह मुराद सॉप (लम्बी दुम)।
लन्भैरी (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद तलवार।
लन्भैरियाना (क्रिया):– तलवार से क़त्ल करना तलवार चलाना मारना।
लिवाई (स्त्री0):– तिलंगानी ठगो की इस्तलाह मुराद कील मेख़ जिसमें कोइ चीज़ अटकी रहे।
लोधा (पु0):– देखो ठग।
लोकारना (क्रिया):– मुसाफ़िर की आह व फ़रियाद करना चीख़ पुकार करना देखो डोढ़याना।
लोकारी (स्त्री0):– बन्दूक।
लोन्ध (पु0):– निफ़रा, निगरा, निदरा, लुक़्का (हिन्दी लोन्ध बमायनी साल का ज़ाइद महीना जो शुमार में न आए)।
लोध लेना (पु0):– ठगो की इसतलाह मुराद लूट के माल में से नग़दी अलहैदा कर लेना। शुमार में न लाना। लेपड़ा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद कपड़े का थान जो पगड़ी बनाने के काम आए। पगड़ी
लीड़कीया (पु0):– दक्किनी ठगो की इसतलाह मुराद धोबी।
मातंगी (पु0):– बारामती के शगुन का नाम।
मारगी (पु0):– ठगो का चेला जो पहली मरतवा ठगो के लिए निकले (तिलंगानी ठगो की इस्तलाह)।
माली (पु0):– घर पर नग़दी पहुॅचाने वाला ठग अमानती।
मान (स्त्री0):– मक़दूल का मदफ़न।

मान्ज (पु0):– 1– बिल्लियों के लड़ने की आवाज़ के शगुन का नाम अव्वल सब छा और आख़िर शब बुरा माना जाता है।
2– देखो बक्कासी बडार।
मान झाड़ना (क्रिया):– मुसाफ़िर के लिए गक़तल और गद्दफ़न तजवीस करना।
मनकारी (पु0):– देखो बल्लहा लाश तजवीश करने वाला ठग।
माही (स्त्री0):– देखो कस्सी।
मथन (पु0):– मतन का ग़लत तल्लफुज़ चोरो की इस्तलाह मुराद मतलब की बात मदआ।
मत्रगश्त (स्त्री0):– शहीदो की इस्तलाह मुराद बेमक़सद इधर उधर फिरते रहना टहल लगाना।
मुठिया (पु0):– इगो के एक गिरोह का नाम जो बिहार के एक इलाके में था देखो ठग।
मछवा (पु0):– बठियारा।
मुद्दा (पु0):– मुद आ ग़लत तल्लफुज़ चोरो की इस्तलाह मुराद चोरी का माल जो चोर के पास निकले।
मृगमाल (स्त्री0):– हिरनो के डार के देखने के शगुन का नाम।
मृगमान (स्त्री0):– नोड़की हिरनो का ग़ल्ला, रेवड़ मन्दा।
मड़ी (स्त्री0):– ठगो की जमात इनतजामी मशवरा करने वाली जमात।
मस्त काठी (स्त्री0):– अहिस्ता बाचीत (करना)।
मुकारा (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद राजपूत।
मकड़ा (पु0):– चोरो की इस्तलाही मुराद पुरनी किस्म का गुजराती क़फ़ल (करना) चोरो का क़फ़ल को मरोड़ कर तोड़ना।
मन्ज की छाप (स्त्री0):– कुत्ते को पख़ाना फिरते देखने का शगुन जो मालिग़ सफ़र समझा जाता है।
मीनक (पु0):– ठगो की इस्तलाह मुराद बैरागी या गोसाई।
मंखला/मनखिला (पु0):– शराब खोर।
मन्ख़िया (पु0):– गोसाई।
मन्गवा (पु0):– गीदड़।
मोहल (पु0):– चोर।

नाटा (स्त्री0):– शाम के वक़्त की स्याही जो मशरिक की तरफ से फैलानी शुरु हो।
नाकी (स्त्री0):– नकारी ठगो की इस्तलाह मुराद छींक आना।
नागा (क्रिया):– आम रिवायत के ख़िलाफ़ काम करने वाले ठग को बिरादरी से ख़ारिज़ कर देने की रसब उर्दू में एक लफ्ज़ नाख़ातातिल के मायनो में बोला जाता है (करना) बिरादरी से ख़ारिज करना। (लगाना) पाप और छुत लगाना।
नाल (स्त्री0):– जुआरियों की इस्तलाह जुए ख़ाने के चौकीदार या मालिक का हक़ (देना और लेना)।
नॉव (स्त्री0):– ठगो की इस्तलाह मुराद गिरोह वेली।
निदाह (पु0):– गानू खेड़ा।
नरीहर (स्त्री0):– मुसाफ़िरों को कत्ल न करने का कलमा।
निसार (पु0):– वो मुक़ाम जहॉ किसी क़िस्म का ख़टका यानि दुश्मन या मुख़ालिफ़ का डर खौफ़ न हो।
नफ़रा (पु0):– आवारा गर्द शख़्स देखो लुक़्क़ा।
नकब (स्त्री0):– देखो कोमल।
नकारी (स्त्री0):– देखो नाकी लफ्ज़ नक्कारे का ग़लत तल्लफुज़ चूँकि छींक की आवाज से मुख़ालिफ़ या जासूस को खबर होने का अन्देशा होता है। इस लिए ठग छींक लेने को इसतलाहन नकारह कहते है। और बाज़ नकारी बमायनी नाक का फ़ेल मफ़हूम लेते है।
निकास (पु0):–चोरो की इसतलाह मुराद भागने का रास्ता जो वो चोरी करने के मोके पर कब्ल अज़ वक़्त निगाह में रहता है।
निगवा (पु0):– सफ़र के राते की निगहेबानी करने वाला फौजी दास्ता महाफ़िज़े राह।
निमता (पु0):– इक्का, दुक्का मुसाफ़िर।
नो (स्त्री0):– ठगो के इस्तलाह मुराद औरत के रोने की आवाज।
निवाला (स्त्री0):– दक्किनी ठगों की इसतलाह मुराद पगड़ी।
नोरया (स्त्री0):– नेयाना तर्जुबे कार ठग।
नायमी (स्त्री0):– आहिस्ता धीमा मुराद धीमी आवाज से बात करना।
वाहरना (क्रिया):– फॉसी देकर मारना।
वलगी (स्त्री0):– भेड़िए की आवाज या देखने के शगुन का नाम।

हटकरी/हथकड़ी (स्त्री0):– मुजरिम के हाथ बॉधने का लोहे का कड़ा डालना।
हजिन्दा (पु0):– देखो धोखा।
हरवॉ (पु0):– दर बदर फिरने वाला ब्रह्मण।
हुड़दंगा/हुड़दंगी (पु0):– नाशाइस्ता और बेढ़ंगा शख़्स बदतमीज़ आवारागर्द।
हिल्ला (पु0):– ठगो की इसतलाह मुराद ओहदा मुर्क़ररा ख़िदमत लफ्ज़ हेले का ग़लत तल्लफुज़ उर्दू में कहते है। हिले रिज़्क बहाने मौत।
ठगों के औहदो के नाम :– 1 कस्सी 2 बपल 3 पतौनी है। पहले औहदे की खिदमत मुसाफ़िर के क़त्ल और दफ़न करने के लिए मुक़ाम तलाश करना और उसकी तक़मील करना। दूसरे की क़त्ल करना या फॉसी देना। यानि जल्लादी और तीसरे की पूजापाठ करना देवी की नज़र चढ़ाना। गुफ़्फारा देना।
हवालात (स्त्री0):– मुलाज़िम को कोठरी (करना, होना)।
हेकड़ॉ (पु0):– दक्किनी ठगो की इस्तलाह मुराद बनिया महाजन।